पुग्गलपन्नति

पाली संस्करण : नीचे दिए गए प्रत्येक अध्याय में पाली-अंग्रेजी और पाली-देवनागरी संस्करण उपलब्ध कराए गए हैं।

अंतर्वस्तु

पुग्गलापन्नट्टी
(व्यक्तियों का पदनाम) त्रिपिटक के
अभिधम्म पिटक का चौथा खंड
- बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रह,

मूल रूप से गौतम बुद्ध द्वारा पाली भाषा में लगभग 550 ईसा पूर्व में बोला गया,
बिमला चरण विधि द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद से रूपांतरित।

परिचय

शीर्षक दो शब्दों से मिलकर बना है: 'पुग्गला' और 'पन्नत्ती'। 'पुग्गला' शब्द का अर्थ है एक व्यक्ति। बौद्ध धर्म में बारह प्रकार के बुद्धिमान प्राणी या पुग्गला हैं— जिनमें से चार सामान्य वर्ग (पुथुज्जन) और आठ विशिष्ट वर्ग (आर्य) हैं।

पन्नत्ती का अर्थ है 'धारणा', 'पदनाम' आदि। पुग्गला-पन्नत्ती टीका के अनुसार, पन्नत्ती का अर्थ है 'स्पष्टीकरण', 'उपदेश', 'संकेत देना', 'स्थापित करना', 'प्रदर्शित करना' और 'व्याख्या करना'। इसमें कहा गया है कि छह प्रकार की पन्नत्तियाँ होती हैं। ये अनेक (क) पदनाम, (ख) संकेत, (ग) व्याख्याएँ, (घ) पुष्टि और (ङ) निवेदन हैं। ये सभी पन्नत्ती के अर्थ हैं।

प्रारंभ में, लेखक 'पन्नति' या धारणा को समूह (खंड), लोकस (आयतन), तत्व (धातु), सत्य (सक्का), संकाय (इंद्रिय), और व्यक्ति (पुग्गल) में वर्गीकृत करता है। इन छह में से अंतिम इस कार्य का विषय-वस्तु है।

विषय के विवेचन में, लेखक सर्वप्रथम संपूर्ण कृति की विषयसूची देता है, और फिर अंगुत्तरा निकाय की पद्धति का अनुसरण करता है। अर्थात्, वह पहले एक पद के अंतर्गत समूहीकरण देता है, फिर दो पदों के अंतर्गत, और इसी प्रकार दस पदों के अंतर्गत समूहीकरण तक।

संक्षेप में, पुग्गला-पन्नति सांसारिक जीवन जीने वाले व्यक्तियों की अवस्थाओं के साथ-साथ उन लोगों की अवस्थाओं का भी उल्लेख करती है जो बुद्ध द्वारा सिखाए गए संयम, नैतिकता और ध्यान के मार्ग का अनुसरण करते हुए अंतिम निर्वाण तक उच्चतर अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं।

स्कैन की गई पुस्तक
स्कैन की गई पुस्तक का लिंक

अध्याय

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **मानव प्रकारों की सूची**
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय: पुस्तक में वर्णित सभी मानव प्रकारों की सूची

छह पदनाम—अर्थात्:
(1) समूहों की धारणा (खंड (पाली) / स्कंध (संस्कृत))।
[खंड - समूह, अनुभाग, समुच्चय]
(2) इंद्रियों और उनके विषयों (आयतनों) की धारणा।
[आयतन: प्रवेश द्वार/इंद्रिय अंग और सूचना संप्रेषण तंत्र]
(3) संज्ञान के तत्वों (धातु) की धारणा।
[धातु: बौद्ध आध्यात्मिक प्रणाली में धातु शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक अर्थ में किया जाता है। सभी इंद्रियां, उनके संबंधित विषय और विभिन्न इंद्रिय-बोध इस शब्द में समाहित हैं। यहां इसका प्रयोग इंद्रिय-बोध या ज्ञान के अर्थ में किया गया है।]
(4) सत्य की धारणा (सच्चा/सत्य)।
[सच्चा: टीका के अनुसार, पहले दो सत्य, दुःखम् और दुःखसमुदयो, 'सांसारिक' (पुनर्जन्म के लोकों से संबंधित) हैं, और अन्य दो सत्य (निरोध और निरोधगामिनिपतिपाद) 'अलौकिक' (मार्गों से संबंधित) हैं।]
(5) इंद्रियों (इंद्रियों) की धारणा।
(6) मानव प्रकारों की धारणा (पुग्गला)।

1. समूहों (खंडों/स्कंधों) का वर्गीकरण किन तरीकों से किया जाता है?
जहां तक पांच समूहों का संबंध है—अर्थात्:
(ए) भौतिक रूप का समूह (रूप खंडा),
(ख) संवेदनाओं का समूह (वेदना खंड),
(सी) धारणा का समूह (सन्ना/संग्य खंड),
(डी) मिष्ठान्नों का समूह (संखारा/संस्कार खंडा),
[संस्कार: इसका अर्थ आदतें, प्रवृत्तियाँ, गुण हो सकता है जो व्यवहार और कर्म की ओर ले जाते हैं]
(ई) चेतना का समूह (विन्नान/विज्ञान खंड)।
इन तरीकों से समूहों का वर्गीकरण किया जाता है।
2. किन तरीकों से इंद्रियों और शरीर के अंगों का वर्गीकरण किया जाता है?
उनके विषय (आयतन)?
बारह इंद्रियों और उनके विषयों के संदर्भ में
संबंधित - अर्थात: (ए) आंख (चक्खु/चक्षु आयतन), (बी) दृश्य आकार (रूप आयतन), (सी) कान (सोटा/स्रोता आयतन), (डी) ध्वनि (सद्दा आयतन), (ई) नाक (घाना/घ्राण आयतन), (एफ) गंध (गंध आयतन), (जी) जीभ (जीव आयतन), (ज) स्वाद (रसा) आयतन), {i) शरीर (काया आयतन), (जे) मूर्त चीजें (फोतब्बा आयतन), (के) मन (मन आयतन), (एल) विचार (धम्म आयतन)।
इन तरीकों से इंद्रियों और उनके विषयों का निर्धारण होता है।

3. किन तरीकों से तत्वों का पदनाम किया जाता है?
संज्ञान (धातु) ?
जहां तक संज्ञान के अठारह तत्वों (धातु) का संबंध है—
अर्थात्; (ए) आंख (चक्खु/चक्षु धातु), (बी) दृश्य आकार (रूप धातु), (सी) दृश्य संज्ञान (चक्खु विन्नन धातु), (डी) कान (सोटा धातु), (ई) ध्वनि, (सद्दा धातु) (एफ) श्रवण संज्ञान (सोटा विन्नन धातु), {जी) नाक (घन धातु), (एच) गंध (गंध धातु), (आई) घ्राण अनुभूति (गंध विन्नन धातु), (जे) जीभ (जीव धातु), (के) स्वाद (रस धातु), (आई) स्वाद संज्ञान (जीव विन्नन धातु), (एम) स्पर्श का अंग (काया धातु), (एन) मूर्त चीजें (फोटब्बा धातु), (ओ) स्पर्श संज्ञान (काया विन्नन धातु), (पी) मन (मन धातु), (क्यू) विचार (धम्म धातु), (आर) मानसिक अनुभूति (मनो विन्नन धातु)।
इन तरीकों से संज्ञान के तत्वों का निर्धारण होता है ।

4. सत्यों (सच्चाओं/सत्यों) का निर्धारण किन तरीकों से किया जाता है?
जहां तक चार सत्यों का संबंध है—अर्थात्; (क) सत्य
दुख का (दुक्खा सच्च), (6) दुख की उत्पत्ति का सत्य (समुदय सच्च), (ग)
दुख की समाप्ति का सत्य (निरोध साका), (डी) अग्रणी मार्ग का सत्य
दुःखों की समाप्ति (मग्गा सक्का) की ओर।
इन्हीं तरीकों से सत्यों का निर्धारण होता है।

5. किन तरीकों से कार्यों/क्षमताओं (इंद्रियों) का पदनाम किया जाता है?
जहां तक बाईस कार्यों (या क्षमताओं) का संबंध है—अर्थात्;
(?) आँख की क्षमता/कार्य (चक्खु/चक्षु इंद्रिय),
(बी) कान की क्षमता/कार्य (सोटा इंद्रिय),
(ग) नाक की क्षमता/कार्य (घना/घ्राना इंद्रिय),
(घ) जीभ की क्षमता/कार्य (जीव इंद्रिय),
(ई) स्पर्श की क्षमता/कार्य (काया इंद्रिय),
(f) मन की क्षमता/कार्य (मन इंद्रिय),
(g) नारीत्व की क्षमता/कार्य (इत्थी/इस्तरी इंद्रिय)
(h) पुरुषत्व की क्षमता/कार्य (पुरुष इंद्रिय)
(i) जीवन की क्षमता/कार्य (जीवित इंद्रिय)
(j) आनंद की क्षमता/कार्य (सुख इंद्रिय)
(k) पीड़ा की क्षमता/कार्य (दुख इंद्रिय)
(I) प्रसन्नता का संकाय/कार्य (सोमनासा इंद्रिय)),
(एम) दुःख का संकाय/कार्य (डोमानासा इंद्रिया)),
(एन) तटस्थ भावना का संकाय/कार्य (उपेक्खा/उपेक्षा इंद्रिय)),
(o) आस्था की क्षमता/कार्य (सद्धा, श्रद्धा इंद्रिय)
(p) ऊर्जा की क्षमता/कार्य (वीर्य/वीर्य इंद्रिय)
(q) सती/स्मृति इंद्रिय (सती/स्मृति इंद्रिय) की क्षमता/कार्य।
(r) एकाग्रता की क्षमता/कार्य (समाधि इंद्रिय)
(ओं) अंतर्दृष्टि/प्रत्यक्ष समझ की क्षमता/कार्य (पन्ना/प्रज्ञा[प्रत्यक्ष ज्ञान] इंद्रिय)),
(t) अज्ञात को जानने की इच्छा की क्षमता/कार्य,
(u) ज्ञान/ समाधि की क्षमता/कार्य,
(v) अज्ञात को जानने की क्षमता/कार्य।
इन तरीकों से कार्यों (या क्षमताओं) का पदनाम होता है।

6. मानव प्रकारों का निर्धारण किन तरीकों से किया जाता है?

I.—मानव प्रकारों का एक-एक करके वर्गीकरण।

(1) जो ऋतु/समय पर मुक्त हो जाता है (समय विमुत्तो/विमुक्त)।
(2) जो समय से पहले/ रास्ते से बाहर मुक्त हो गया हो (असमय विमुत्तो/विमुक्त)।

(3) अस्थिर स्वभाव वाला (कुप्पा-धम्मो)।
[कुप्पा-धम्मो : इसका अर्थ है वह व्यक्ति जो अस्थिर है या मार्ग पर दृढ़ता से स्थापित नहीं है।]
(4) अविचलित स्वभाव वाला (अकुप्पा-धम्मो)।
[अकुप्पा-धम्मो: इसका अर्थ है वह व्यक्ति जो भटकता नहीं है।]
(5) गिरने योग्य (परिहाना-धम्मो)।
(6) जो विमुख होने की संभावना न रखता हो (अपरिहाना-धम्मो)।
(7) इच्छाशक्ति में सक्षम व्यक्ति (चेतनाभब्बो)।
(8) चौकसी में सक्षम (अनुरक्खनभाब्बो)।
(9) गृहस्थ [पाप में], मार्ग का अनुसरण नहीं कर रहा (पुथुज्जनो/प्रुत्का-जना)।
(10) जो गोत्रभू (प्रबुद्ध आर्यों) के परिवार का हो जाता है।
[गोत्रभू: वह व्यक्ति जो निर्वाण के ध्यान से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से सामान्य व्यक्तियों के परिवार, समूह या पदनाम को पार करके प्रबुद्ध/आर्यों के परिवार, कुल, मंडल या पदनाम तक पहुँच गया हो। गोत्रभू शब्द 'गोत्र' शब्द से आया है, जिसका अर्थ है 'वंश'] और 'भू' का अर्थ है 'से जन्मा हुआ'।
(11) भय से ऊपर/बिना (भयुपरतो)।
(12) जो भय से ऊपर/निःसंयत न हो (अभयुपरतो)।
(13) आने में सक्षम (भब्बगामानो)।
(14) जो पहुँचने में असमर्थ हो (अभब्बागमनो)।
(15) नियति (नियातो) वाला व्यक्ति।
(16) अनिश्चित भाग्य वाला (अनियतो)।
(17) पथ-प्राप्तकर्ता (पतिपन्नको)।
(18) फलीभूत स्थापित (फले-थितो)।
(19) समभाव/समभावी मन (समा-सिसि)।
(20) युग-अवरोधक (थिताकप्पी)।
(21) निर्वाचित/प्रबुद्ध (एरियो)।
(22) अनिर्दिष्ट/ अज्ञानी (अनारियो)।
(23) शिक्षार्थी (सेक्खो)।
(24) अब वह सीखने वाला/कुशल (असेक्खो) नहीं है।
(25) न तो शिक्षार्थी और न ही गैर-शिक्षार्थी (नेवा-सेक्खा-न?-सेक्खो)।
(26) वह व्यक्ति जो तीन प्रकार का ज्ञान (तेविज्जो) जानता हो
(पूर्व जन्मों का ज्ञान रखने वाला, दिव्य दृष्टि और सभी पापों का निवारण करने वाला/ प्रबुद्ध)।
(27) छह महाज्ञानों का स्वामी (चा-लभिन्नो)
(ऊपर 26 में उल्लिखित बिंदुओं के अलावा जादुई और अलौकिक तत्व भी शामिल हैं)
(28) पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति (सम्मा सम बुद्ध)। [जैसे गौतम बुद्ध]
(29) स्वयं के लिए प्रबुद्ध (पच्छेक सम बुद्ध)।
(30) दोनों तरह से मुक्त (उभतोभागविमुत्तो)।
(31) अंतर्दृष्टि से मुक्ति (पन्नविमुत्तो/प्रज्ञा विमुक्त)।
(32) शारीरिक रूप से जागरूक (कायासक्खी/काया साक्षी)।
(33) जिसने दृष्टि प्राप्त कर ली है (दित्थिप्पत्तो)।
(34) विश्वास से मुक्ति (सद्धविमुत्तो/श्रद्धा विमुक्त)।
(35) धम्म के अनुरूप (धम्म-नुसारी)।
(36) विश्वास के अनुरूप (सद्ध-नुसारी)।
(37) जो सात बार से अधिक पुनर्जन्म नहीं लेता (सत्तक्खत्तुपरमो)।
(38) कुछ परिवारों के माध्यम से एक व्यक्ति का स्थानांतरण (कम
सात गुना से अधिक)। (कोलांकोलो)
(39) एकल बीज/एकल पुनर्जन्म। (एकबीजी)
(40) एक बार जन्म लेने वाला/एक बार पुनर्जन्म लेने वाला फिर निर्वाण (सकदागामी)
(41) जो कभी जन्म नहीं लेता/ कभी पुनर्जन्म नहीं लेता, उसे निर्वाण प्राप्त होता है। (अनगामी)
(42) जो व्यक्ति आधी तिथि से पहले मरकर निर्वाण प्राप्त कर लेता है

जिस उम्र में उसे ब्रह्म लोक में रहना चाहिए था
समाप्त हो जाता है। (Antara-parinibbayi)
(43) शब्द-कर्तव्य निर्वाण सिद्धिकर्ता। (उपहक्का-परिनिब्बायी)
(44) स्वत: निर्वाण प्राप्तकर्ता। (ए-संखारा-परिनिब्बी)
(45) परिश्रम के बाद राहगीर। (सा-सा?ख?रा-परिनिब्ब?य?)
(46) धारा-ऊपर की ओर जाने वाला अकनित्था यात्री (उद्धम-सोतो-अकानि??हा-ग?म?)।
(47) स्ट्रीम विजेता/प्राप्तकर्ता (सोतापना)
(48) धारा-प्राप्तकर्ता जो इसकी प्राप्ति में चलता/जीता है
फलने की अवस्था (सोतापट्टी-फला-सच्चिकिरिया-पतिपन्नो)।
(49) एक बार लौटने वाला (सकदागामी)
(50) एक बार लौटने वाला व्यक्ति जो इस अहसास में जी रहा है/चल रहा है
फलोत्पादन अवस्था (सकादगामी-फला-सच्चिकिरिया-पतिपन्नो)।
(51) कभी न लौटने वाला (अनगामी)
(52) कभी न लौटने वाला व्यक्ति जो अहसास में चलता/जीता है
फलने की अवस्था (अनागामी-फला-सच्चिकिरिया-पतिपन्नो)।
(53) जिसने अपने भीतर के सभी शत्रुओं/पापों को नष्ट कर दिया है और
बुद्ध की तरह पूर्णतः प्रबुद्ध हो गए (अरहत/अरहंत/अरिहंत)
[किसी भी लोक में पुनर्जन्म नहीं होगा]
(54) अरहंत जो अरहंतत्व में चल रहा है/रह रहा है (पूर्णतः प्रबुद्ध और जीवित)
(अरहट्टा-फला-सच्चिकिरिया-पतिपन्नो)।

II.— मानव प्रकारों का दो-दो समूहों में वर्गीकरण।

1. क्रोधित और प्रतिशोधी।
2. पाखंडी और धोखेबाज।
3. ईर्ष्यालु और लालची।
4. धूर्त और कपटी।
5. निर्लज्ज और धृष्ट।
6. अवज्ञाकारी और दुष्टों के सहयोगी।
7. एक जो इंद्रियों के प्रति लापरवाह है और दूसरा जो भोजन के मामले में अतिवादी है।
8. भूलने वाले और लापरवाह।
9. नैतिक कानून का उल्लंघन करने वाला और अन्याय का समर्थक
विचार।
10. एक आंतरिक बेड़ियों वाला और एक बाहरी बेड़ियों वाला
बेड़ियाँ।
11. क्रोधहीन और प्रतिशोधहीन।
12. जो सहज और दिखावा रहित हों।
13. ईर्ष्या न करने वाले और लालच न करने वाले।
14. जो धूर्त और छल-कपट से दूर हों।
15. ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ।
16. आज्ञाकारी और अच्छे लोगों का साथी।*
17. एक जो इंद्रियों के प्रति सजग है और दूसरा जो संयमी है।
भोजन के संदर्भ में।
18. जागृत और सचेत।
19. नैतिक नियम का पालन करने वाला और उसका समर्थक
सही विचार।
20. दो व्यक्ति जो इस दुनिया में दुर्लभ हैं।
21. दो व्यक्ति जिन्हें संतुष्ट करना कठिन है।
22. दो व्यक्ति जो आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं।

23. दो व्यक्ति जिनकी पाप प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।
24. दो व्यक्ति जिनकी पाप प्रवृत्ति नहीं बढ़ती।
25. भ्रष्ट और परिष्कृत।
26. संतुष्ट और संतुष्टि देने वाला।

III. मानव प्रकारों का तीन-स्तरीय वर्गीकरण।
1. निराशा से भरा हुआ, आशावान, आकांक्षाओं से परे।
2. तीन पुरुष जो बीमार के समान हैं।
3. प्रत्यक्षदर्शी, वह व्यक्ति जिसने दृष्टि प्राप्त कर ली है, वह
जो आस्था के द्वारा मुक्त हो जाता है।
4. अपशब्द बोलने वाला, मीठी-मीठी बातें करने वाला, मीठी जुबान वाला।
5. कैंसर से ग्रस्त व्यक्ति, बिजली की तरह तेज दिमाग वाला व्यक्ति,
उग्र स्वभाव वाला व्यक्ति।
6. अंधे, एक आँख वाले, दो आँख वाले।
7. उलटी बुद्धि वाला व्यक्ति, संकुचित बुद्धि वाला व्यक्ति,
एक बहुमुखी बुद्धि का धनी व्यक्ति।
8. वह व्यक्ति जो इंद्रिय सुखों के प्रति उदासीन नहीं है, साथ ही
पुनर्जन्म की अवस्थाओं के लिए; एक ऐसा व्यक्ति जो इंद्रियों के प्रति उदासीन हो।
सुख तो प्राप्त होते हैं, लेकिन पुनर्जन्म की अवस्थाओं के समान नहीं; एक व्यक्ति
दोनों के प्रति निष्पक्ष।
9. एक व्यक्ति पत्थर पर अंकित चिह्न के समान, दूसरा उसके समान।
धरती पर एक निशान, दूसरा पानी पर एक निशान।
10. तीन पुरुष जो भांग के कपड़े के समान हैं।
11. तीन पुरुष जो बनारस के कपड़े के समान हों।
12. बोधगम्य, जिसे समझना कठिन है, अबोधगम्य।
13. वह व्यक्ति सेवा के योग्य नहीं है, जिसकी भक्तिपूर्वक सेवा की जाए।
सेवा करने योग्य, पूजा के योग्य। एक ऐसा व्यक्ति जो सेवा के योग्य हो,
जिसकी भक्तिपूर्वक सेवा की जाए, जिसकी पूजा की जाए। एक ऐसा व्यक्ति जो इसके योग्य हो।
आदर और सम्मान के साथ सेवा की जानी चाहिए, पूरी निष्ठा से सेवा की जानी चाहिए।
पूजा के योग्य।
14. वह व्यक्ति जो तिरस्कृत होने योग्य है, किसी भी योग्य नहीं है
जिसकी सेवा की जाए, जिसके प्रति समर्पित रहा जाए, जिसकी पूजा की जाए। एक ऐसा व्यक्ति जो
उनके साथ उदासीनता का व्यवहार किया जाना चाहिए, वे सेवा के योग्य नहीं हैं।
जिसकी भक्तिपूर्वक सेवा की जाए, जिसकी पूजा की जाए। एक योग्य व्यक्ति
सेवा का, भक्ति का, पूजा का।
15. एक ऐसा व्यक्ति जो नैतिक नियमों का पालन तो करता है, लेकिन अपूर्ण रूप से
ध्यान और अंतर्दृष्टि के मार्ग का अभ्यास करता है। एक ऐसा व्यक्ति जो
नैतिक नियमों का पालन करता है, ध्यान के अभ्यास को पूरा करता है।
लेकिन अंतर्दृष्टि के मार्ग का अपूर्ण रूप से अभ्यास करता है। एक ऐसा व्यक्ति जो
नैतिक नियमों का पालन करता है, ध्यान के अभ्यास को पूरा करता है।
लेकिन वह पूरी तरह से अंतर्दृष्टि के मार्ग का अभ्यास करता है।
16. तीन शिक्षक।
17. और फिर से तीन शिक्षक।
10 मानव प्रकारों का पदनाम

IV. मानव प्रकारों का चार भागों में वर्गीकरण।
1. एक दुष्ट व्यक्ति, एक और भी बुरे प्रकार का दुष्ट व्यक्ति, एक अच्छा व्यक्ति
एक अच्छा आदमी, बेहतर किस्म का आदमी।

2. एक पापी व्यक्ति, उससे भी बुरे प्रकार का पापी व्यक्ति, अच्छा व्यक्ति
वह आदमी, बेहतर किस्म का अच्छा आदमी।
3. पाप प्रवृत्ति वाला व्यक्ति/बदतर किस्म का व्यक्ति
नेक स्वभाव वाला, श्रेष्ठ प्रकार का व्यक्ति।
4. निंदनीय, अत्यंत निंदनीय, एक
शायद ही दोषी ठहराया जा सकता है, निर्दोष।
5. एक जल्दी समझने वाला, एक मध्यम गति से समझने वाला,
धीमी समझ वाला, सतही पाठक।
6. एक व्यक्ति जो सही उत्तर तो देता है लेकिन तुरंत उत्तर नहीं देता, एक व्यक्ति
एक ऐसा व्यक्ति जो संकेत देता है लेकिन सही उत्तर नहीं देता, जबकि दूसरा व्यक्ति सही उत्तर देता है।
और त्वरित उत्तर, जो न तो सही है और न ही त्वरित।
जवाब।
7. मानदंड के चार शिक्षक।
8. चार व्यक्ति जो बादल के समान हों।
9. चार व्यक्ति जो एक चूहे के समान हों।
10. चार व्यक्ति जो आम के समान हैं।
11. चार व्यक्ति एक घड़े के समान।
12. चार व्यक्ति पानी के एक कुंड के समान।
13. चार व्यक्ति जो एक बैल के समान हों।
14. चार व्यक्ति जो सर्प के समान हैं।
15. एक व्यक्ति किसी अयोग्य व्यक्ति की प्रशंसा में बिना किसी
जांच और छानबीन। एक व्यक्ति किसी की निंदा करते हुए बोल रहा है।
बिना पूछताछ और जांच-पड़ताल के योग्य व्यक्ति। एक व्यक्ति जो पाता है
किसी अप्रिय या अप्रिय चीज़ में आनंद लेने के बिना
जांच और छानबीन। एक व्यक्ति जो किसी के प्रति नापसंदी रखता है
बिना पूछताछ और जांच-पड़ताल के सुखद अनुभव।
16. एक व्यक्ति किसी अयोग्य व्यक्ति की निंदा करते हुए
जांच और छानबीन। एक व्यक्ति प्रशंसा की प्रशंसा में बोल रहा है
जांच-पड़ताल के बाद योग्य व्यक्ति। एक ऐसा व्यक्ति जो शरण दे रहा है
जांच-पड़ताल के बाद किसी अप्रिय चीज के प्रति नापसंदगी।
एक व्यक्ति को जांच-पड़ताल के बाद किसी सुखद चीज में आनंद मिलता है और
जांच।
17. एक ऐसा व्यक्ति जो किसी अयोग्य व्यक्ति की निंदा करता है
सही समय पर सही और न्यायसंगत बात कहना लेकिन
प्रशंसनीय की प्रशंसा में नहीं बोलता (व्यक्त करते हुए)
सही समय पर सही और न्यायसंगत बात। एक ऐसा व्यक्ति जो
किसी प्रशंसनीय व्यक्ति की प्रशंसा में बोलते हुए, वह सही बात व्यक्त करता है।
और सही समय पर सही बात कहता है, लेकिन बोलता नहीं है
अयोग्य की निंदा करना, सही और न्यायसंगत बात कहना
सही समय पर सही बात। एक आदमी जो निंदा में बोलता है
एक जो प्रशंसा के अयोग्य है और प्रशंसा के योग्य की प्रशंसा में।
सही समय पर सही और न्यायसंगत बात कहना।
एक ऐसा व्यक्ति जो किसी अयोग्य व्यक्ति की निंदा नहीं करता
प्रशंसा करना या प्रशंसनीय की प्रशंसा में सही ढंग से व्यक्त करना
और सही समय पर सोचें।
18. जो अपने परिश्रम के फल पर जीवन यापन करता है (पर) नहीं
अपने (पूर्व) पुण्य कर्मों के फल पर। एक व्यक्ति जो जीवन यापन करता है
उनकी (पूर्व) योग्यता के फल पर, (पर) उनके फलों पर नहीं

परिश्रम।
एक व्यक्ति जो दोनों के फलों पर जीवन यापन करता है।
एक ऐसा व्यक्ति जो न तो किसी के फल पर निर्भर है और न ही किसी के फल पर।
19. जो अंधेरे में है और अंधेरे की ओर प्रवृत्त है।
जो अंधेरे में है लेकिन प्रकाश की ओर अग्रसर है।
जो प्रकाश में होते हुए भी अंधकार की ओर प्रवृत्त होता है।
जो प्रकाश में है और प्रकाश की ओर प्रवृत्त है।
20. अवसादग्रस्त और अप्रगतिशील, अवसादग्रस्त लेकिन
प्रगतिशील, समृद्ध लेकिन अप्रगतिशील,
समृद्ध होने के साथ-साथ प्रगतिशील भी।
21. वृक्ष के समान चार व्यक्ति।
22. जो बाहरी रूप पर विचार करता है और उसका सम्मान करता है।
जो दूसरों के शब्दों पर विचार करता है और उनका सम्मान करता है।
जो बाहरी सादगी पर विचार करता है और उसका सम्मान करता है।
वह व्यक्ति जो आदर्श का सम्मान करता है और उस पर विचार करता है।
23. वह व्यक्ति जो अपने कल्याण के लिए प्रयास करता है, लेकिन दूसरों के कल्याण के लिए नहीं।
दूसरों का। एक ऐसा व्यक्ति जो दूसरों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहता है, लेकिन
अपने स्वार्थ के पीछे नहीं भागने वाला व्यक्ति। वह व्यक्ति जो अपने ही कल्याण के लिए प्रयासरत रहता है।
साथ ही दूसरों का भी। एक आदमी जो न तो अपने लिए प्रयास करता है
न तो स्वयं के कल्याण की और न ही दूसरों के कल्याण की।
24. वह व्यक्ति जो आत्म-यातना करता है और प्रथाओं में संलग्न रहता है
आत्म-यातना की प्रवृत्ति रखने वाला। एक ऐसा व्यक्ति जो दूसरों को सताता है।
और वह दूसरों को प्रताड़ित करने वाली गतिविधियों में संलग्न है।
वह व्यक्ति जिसमें इन दोनों प्रकारों के गुण समाहित हों।
वह व्यक्ति जिसमें इन दोनों में से किसी के भी लक्षण नहीं होते; ऐसा व्यक्ति
जो व्यक्ति न तो स्वयं को यातना देता है और न ही दूसरों को, वही जीवित रहता है।
एक उच्चतर जीवन जो इच्छाओं से मुक्त, शांत, संतुष्ट और सुखी हो।
अपने वर्तमान अस्तित्व में।
25. जुनून से भरा हुआ व्यक्ति।
घृणा से ग्रसित व्यक्ति।
भ्रम से ग्रस्त व्यक्ति
एक ऐसा व्यक्ति जो स्वाभिमानी हो।
26. वह व्यक्ति जो मन की आंतरिक शांति प्राप्त कर लेता है, लेकिन
चीजों के बारे में अंतर्दृष्टि की उच्चतर बुद्धि नहीं। एक आदमी जो
चीजों के बारे में अंतर्दृष्टि की उच्चतर बुद्धि प्राप्त करता है लेकिन नहीं
मन की आंतरिक शांति।
वह व्यक्ति जो दोनों चीजें प्राप्त कर लेता है।
एक ऐसा व्यक्ति जो इनमें से कुछ भी हासिल नहीं कर पाता।
27. एक आदमी नदी के किनारे-किनारे जा रहा है।
एक आदमी जो धारा के विपरीत दिशा में जा रहा है।
एक व्यक्ति स्थिर अवस्था में है।
एक ब्राह्मण जो नदी पार करके चला गया है
दूसरे किनारे पर पहुँचकर वह फल-फूल रहा है।
28. वह व्यक्ति जो अपने थोड़े से ज्ञान के अनुसार कार्य नहीं करता।
एक ऐसा व्यक्ति जो अपने थोड़े-बहुत ज्ञान के आधार पर ही व्यवहार करता है।
एक ऐसा व्यक्ति जो अत्यंत विद्वान होते हुए भी अपने पद के अनुरूप व्यवहार नहीं करता।
उनकी विद्वत्ता।
एक ऐसा व्यक्ति जो बहुत विद्वान है और अपने ज्ञान के अनुरूप व्यवहार करता है।

29. दृढ़ नींव वाला एकांतवासी।
कमल के समान एकांतवासी।
एक सफेद कमल के समान एकांतवासी।
एक नाजुक एकांतप्रिय व्यक्ति।

V. मानव प्रकारों का पाँच भागों में वर्गीकरण
1. एक ऐसा व्यक्ति जो कार्य करता है और पश्चाताप करता है लेकिन उसे स्वीकार नहीं करता
मन की मुक्ति और स्वतंत्रता का अनुभव करें
उनकी वास्तविक स्थिति को समझने की अंतर्दृष्टि से, जिसमें पापी और अनैतिक
जो राज्य अस्तित्व में आ चुके हैं, वे पूरी तरह से अस्तित्वहीन भी हो सकते हैं।
एक ऐसा व्यक्ति जो कर्म तो करता है लेकिन पश्चाताप नहीं करता और
मन की मुक्ति और मुक्ति का अनुभव न करना
उनकी वास्तविक स्थिति को समझने की अंतर्दृष्टि से, जिसमें पापी और
अनैतिक अवस्थाएँ जो अस्तित्व में आ चुकी हैं, वे पूरी तरह से
अंत होना।
एक ऐसा व्यक्ति जो कोई कार्य नहीं करता, परन्तु पश्चाताप करता है और कुछ नहीं करता।
मन की मुक्ति और स्वतंत्रता का अनुभव करें
उनकी वास्तविक स्थिति को समझने की अंतर्दृष्टि से, जिसमें पापी और अनैतिक
जो राज्य अस्तित्व में आ चुके हैं, वे पूरी तरह से अस्तित्वहीन भी हो सकते हैं।
एक ऐसा व्यक्ति जो न तो कोई कार्य करता है, न ही पश्चाताप करता है और न ही
मन की मुक्ति और स्वतंत्रता का अनुभव करें
उनकी वास्तविक स्थिति को समझने की अंतर्दृष्टि से, जिसमें पापी और अनैतिक
जो राज्य अस्तित्व में आ चुके हैं, वे पूरी तरह से अस्तित्वहीन भी हो सकते हैं।
(पांचवां व्यक्ति उपरोक्त चारों को निर्देश दे रहा था।)
2. जो देने के बाद तिरस्कार करता है।
जो साथ रहने के बाद घृणा करने लगता है।
एक ऐसा व्यक्ति जिसका मुंह पकड़ने वाला हो।
जो सुस्त और मूर्ख हो।
एक कम पसंद किया जाने वाला व्यक्ति।
3. पेशेवर योद्धा के समकक्ष पांच व्यक्ति।
4. पाँच व्यक्ति जो भिक्षा पर जीवन यापन करते हैं।
5. निर्धारित समय के बाद भी भोजन स्वीकार करने से इनकार करने वाले पांच व्यक्ति।
6. एक ही प्रकार की सीट का उपयोग करने वाले पांच व्यक्ति।
7. कूड़े के ढेर से इकट्ठा किए गए चिथड़े-चिथड़े पहने हुए पाँच व्यक्ति।
8. पाँच व्यक्ति तीन प्रकार के वस्त्र पहने हुए।
9. पाँच वनवासी।
10. पाँच लोग जो एक पेड़ के नीचे रहते हैं।
11. पाँच जो खुले आसमान के नीचे रहते हैं।
12. पाँचों हमेशा बैठे रहते हैं (अर्थात, कभी लेटते नहीं)।
13. उपलब्ध सीटों में से किसी भी सीट का उपयोग करके पांच लोग।
14. पाँच जो कब्रिस्तानों में निवास करते हैं।
14 मानव प्रकारों का पदनाम

VI.—मानव प्रकारों का छह समूहों में वर्गीकरण।
1. वह व्यक्ति जो स्वयं सत्य को समझता है
वह उन सिद्धांतों को मानता है जो पहले कभी सुने नहीं गए थे, और सर्वज्ञता प्राप्त करता है।
साथ ही साथ उस पर पूर्ण नियंत्रण भी।
एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं सत्य को समझता है

पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों पर आधारित है, लेकिन सर्वज्ञता प्राप्त नहीं करता।
साथ ही साथ उस पर पूर्ण नियंत्रण भी।
एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं सत्य को समझता है
अनसुने सिद्धांतों के माध्यम से वह अपने जीवन में पीड़ा का अंत करता है।
वर्तमान परिस्थितियों में रहकर शिष्य की पूर्णता प्राप्त करता है।
एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं सत्य को समझता है
पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों के माध्यम से, वह अपने क्षेत्र में पीड़ा का अंत करता है।
वर्तमान परिस्थितियों को दर्शाता है, लेकिन पूर्णता प्राप्त नहीं करता।
शिष्य।
एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं सत्य को समझता है
पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों के माध्यम से, वह अपने क्षेत्र में पीड़ा का अंत करता है।
वर्तमान परिस्थितियों में, और गैर-वापसीकर्ता बन जाता है जिसके पास
इस दुनिया में वापस आने के लिए।
एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं सत्य को समझता है
पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों पर आधारित, और एक बार फिर लौटने वाला बन जाता है
उसे इस दुनिया में वापस आना पड़ता है क्योंकि वह अंत नहीं करता।
अपनी वर्तमान परिस्थितियों में कष्ट भोगने के लिए।

VII. मानव प्रकारों का सात भागों में वर्गीकरण।
1. सात व्यक्तियों की तुलना उन लोगों से की जानी है जो डूबे हुए हैं
पानी।
जो एक बार डूब गया, वह डूब ही गया।
जो व्यक्ति सतह पर आने के बाद डूब जाता है।
जो व्यक्ति उद्‌भव के बाद स्थिर रहता है।
जो व्यक्ति उभरने के बाद चारों ओर देखता है।
जो सतह पर आने के बाद तैरकर ऊपर आता है।
जो उभरने के बाद दृढ़ स्थिति प्राप्त कर लेता है।
जो सच्चे ब्राह्मण के रूप में उद्‌भव के बाद पार करता है
और वह दूसरे किनारे पर जाकर खुद को स्थापित कर लेता है।
फलीभूत हो रहा है।
2. एक ऐसा व्यक्ति जो दोनों तरह से मुक्त हो।
अंतर्दृष्टि से मुक्त हुआ व्यक्ति।
एक प्रत्यक्षदर्शी।
जिसने दृश्यता प्राप्त कर ली है।
आस्था के द्वारा मुक्त हुआ व्यक्ति।
जो सामान्य मानदंडों के अनुरूप हो।
विश्वास द्वारा अनुरूप होने वाला व्यक्ति

VIII. मानव प्रकारों का आठ भागों में वर्गीकरण।
1. पथ से जुड़े चार व्यक्ति और चार
फल प्राप्ति के साथ पहचान योग्य।

IX. मानव प्रकारों का नौ द्वारा वर्गीकरण।
1. पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति।
स्वयं के लिए ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति।
एक ऐसा व्यक्ति जो दोनों ही तरह से स्वतंत्र हो।
अंतर्दृष्टि से मुक्त हुआ व्यक्ति।
एक प्रत्यक्षदर्शी।

जिसने दृश्यता प्राप्त कर ली है।
आस्था के द्वारा मुक्त हुआ व्यक्ति।
जो सामान्य मानदंडों के अनुरूप हो।
जो आस्था के द्वारा अनुरूप हो।

X. मानव प्रकारों का दस-दस के समूहों में वर्गीकरण।
यहां पांच व्यक्ति पूर्णता प्राप्त कर रहे हैं और पांच अन्य लोग भी।
इसके बाद पूर्णता प्राप्त होगी।
इन तरीकों से मानव प्रकारों का वर्गीकरण किया जाता है।

मानव प्रकारों की सूची यहीं समाप्त होती है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 1
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय 1 - मानव प्रकारों का एक-एक करके विभाजन
1. कभी-कभी स्वतंत्र होने पर व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक व्यक्ति आठ चरणों का अनुभव करता है।
समय-समय पर मुक्ति, और उसने उन्हें देखा है
अंतर्दृष्टि के माध्यम से, उसकी कुछ पापी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती हैं।
नष्ट हो गया। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी मुक्त कहा जाता है।

2. वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जिसे केवल कभी-कभी ही मुक्ति नहीं मिलती?
यहां व्यक्ति मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव करता है।
हालांकि समय-समय पर नहीं, और उसने उन्हें देखा है
अंतर्दृष्टि के माध्यम से, उसकी पापी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं।
ऐसे व्यक्ति को केवल कभी-कभी ही नहीं, बल्कि कभी-कभी ही मुक्त कहा जाता है।
वास्तव में, सभी आर्य (कुलीन या निर्वाचित) व्यक्ति ऐसे ही होते हैं।
उच्चतर मुक्ति के मामलों में मुक्त।

3. चंचल स्वभाव वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति को (परमानंद की अवस्था की) उपलब्धियां प्राप्त होती हैं।
चाहे वह रूप के विचार के साथ हो या किसी विचार के साथ।
निराकारता, और वह निश्चित रूप से उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार प्राप्त नहीं कर पाता।
न तो बिना कठिनाई के, न ही बिना परिश्रम के, न ही उसे मिलता है
न तो वह उनमें प्रवेश करे और न ही उनसे उठे, जहाँ वह चाहे, जब चाहे।
और जब तक वह चाहे; यह संभावना है कि
उस पर हावी होने वाली आलस्य उसकी उन उपलब्धियों को बाधित कर सकती है।
ऐसे व्यक्ति को चंचल स्वभाव का कहा जाता है।

4. अविचलित स्वभाव वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति परमानंद की अवस्था प्राप्त करता है।
चाहे वह रूप के विचार के साथ हो या किसी विचार के साथ।
निराकार, और वह निश्चित रूप से उन्हें अपनी इच्छा अनुसार प्राप्त करता है, बिना किसी
वह कठिनाई या परिश्रम में पड़ता है और उनसे उबर भी जाता है।
जहां वह चाहे, जब वह चाहे और जब तक वह चाहे;

ऐसा कोई अवसर नहीं है और न ही कोई ऐसा अवसर है जो आलस्य को बढ़ावा दे।
उस पर हावी होने वाली कोई भी घटना उस व्यक्ति की उपलब्धियों को झकझोर सकती है।
ऐसे व्यक्ति को अविचलित स्वभाव का कहा जाता है। वास्तव में,
आर्य (कुलीन या निर्वाचित) सभी व्यक्ति अविचलित स्वभाव के होते हैं।
आर्यों की मुक्ति के मामलों में प्रकृति की भूमिका।

5. त्रुटिपूर्ण स्वभाव वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति को उपलब्धियां प्राप्त होती हैं चाहे वह किसी के साथ हो या उसके साथ।
रूप के विचार से या रूपहीनता के विचार से,
और वह निश्चित रूप से उन्हें अपनी इच्छा अनुसार प्राप्त नहीं करता, न ही बिना
न तो वह कठिनाई में पड़ता है, न ही बिना परिश्रम के, न ही वह किसी पद में प्रवेश करता है और न ही उससे बाहर निकलता है।
वह जहां चाहे, जब चाहे और जब तक चाहे, उनसे ऊपर उठ सकता है।
जैसा वह चाहता है; आलस्य आने की संभावना है।
उस पर इतना दबाव डालने से उसे अपनी उपलब्धियों को त्यागना पड़ सकता है।
किसी व्यक्ति को त्रुटिपूर्ण स्वभाव का कहा जाता है।

6. अचूक स्वभाव वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति को उपलब्धियां प्राप्त होती हैं चाहे वह किसी के साथ हो या उसके साथ।
रूप के विचार से या निराकारता के विचार से, और
वह निश्चित रूप से बिना किसी कठिनाई के अपनी इच्छानुसार उन्हें प्राप्त कर लेता है और
बिना परिश्रम के, वह उनमें प्रवेश करता है और उनसे उठता है जहाँ,
जब और जब तक वह चाहे; कोई आवश्यकता नहीं है और
आलस्य के कारण ऐसा कोई अवसर नहीं है।
उसे अपनी उपलब्धियों का त्याग करने के लिए कहना। ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है कि
अचूक स्वभाव के हों। वास्तव में सभी आर्य व्यक्ति
आर्यन मामलों में (कुलीन या निर्वाचित) लोग अचूक स्वभाव के होते हैं।
मुक्ति।

7. वसीयत करने में सक्षम व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति को उपलब्धियां प्राप्त होती हैं चाहे वह किसी के साथ हो या उसके साथ।
रूप के विचार से या निराकारता के विचार से, और
वह निश्चित रूप से उन्हें अपनी इच्छा अनुसार प्राप्त नहीं कर पाता, न ही बिना
न तो वह कठिनाई में पड़ता है, न ही बिना परिश्रम के, न ही वह किसी पद में प्रवेश करता है और न ही उससे बाहर निकलता है।
वह जहां चाहे, जब चाहे और जब तक चाहे, उनसे ऊपर उठ सकता है।
वह चाहता है; यदि वह (पीछे न हटने की) इच्छाशक्ति से इसका पालन करता है,
यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह उन उपलब्धियों से विमुख नहीं होता है।
इसलिए, वह उनसे दूर हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है
ऐसा व्यक्ति होना जो वसीयत बनाने में सक्षम हो।

8. सतर्कता में सक्षम व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति को उपलब्धियां प्राप्त होती हैं चाहे वह किसी के साथ हो या उसके साथ।
रूप के विचार से या निराकारता के विचार से, और
वह निश्चित रूप से उन्हें अपनी इच्छा अनुसार प्राप्त नहीं कर पाता, न ही बिना
वह न तो किसी कठिनाई में पड़ता है और न ही उससे बाहर निकल पाता है।
उन्हें जहाँ वह चाहे, जब चाहे और जब तक चाहे
इच्छाओं से विमुख नहीं होता; यदि वह सतर्क रहे तो उनसे विमुख नहीं होता।
उपलब्धियों से; यदि वह सतर्क नहीं रहता, तो वह उनसे भटक जाता है।
उन्हें। ऐसे व्यक्ति को सक्षम व्यक्ति कहा जाता है।
सतर्कता में।

9. किस प्रकार के व्यक्ति को औसत व्यक्ति कहा जाता है?
जिस व्यक्ति की तीनों बेड़ियाँ नहीं हटाई गई हैं
और कौन इन्हें दूर नहीं रख रहा है—ऐसा
उस व्यक्ति को औसत व्यक्ति कहा जाता है।

10. आर्या परिवार का सदस्य किस प्रकार का व्यक्ति बनता है?
जो व्यक्ति इन स्थितियों से संपन्न है, वह तुरंत
इसके बाद आर्यों (कुलीन या
ऐसा कहा जाता है कि निर्वाचित (चुने हुए) स्वभाव वाले व्यक्ति आर्य परिवार के सदस्य होते हैं।

11 और 12. किस प्रकार का व्यक्ति भय से विवश होता है?
सात प्रकार के शिक्षार्थी भय से विवश हैं और
वे साधारण व्यक्ति जो नियमों का पालन करते हैं: अरहंत
वे भय से विवश नहीं होते।

13. किस प्रकार का व्यक्ति प्रगति करने में असमर्थ होता है?
जो लोग कर्म के आवरण से ढके हुए हैं,
बुरी वासनाओं के आवरण से ढका हुआ, आवरण से ढका हुआ
इसके परिणामों के बारे में, जो आस्था से रहित हैं, जो कमी रखते हैं
इच्छा में, वे मूर्ख, बेवकूफ और साथ चलने में असमर्थ होते हैं।
जिन चीजों के संबंध में सही मार्ग के रूप में मान्यता प्राप्त है,
अच्छे हैं: इन व्यक्तियों को प्रगति करने में असमर्थ कहा जाता है।

14. किस प्रकार का व्यक्ति प्रगति करने में सक्षम होता है?
जो लोग कर्म के आवरण से ढके नहीं हैं,
बुरी वासनाओं के आवरण से ढका हुआ नहीं, ढका हुआ नहीं
परिणामों का पर्दा (उसके), जो विश्वास रखते हैं, जो
इच्छा रखते हैं, बुद्धिमान हैं, और जो सच है उस पर चलने में सक्षम हैं।
उन चीजों के संबंध में सच्चे मार्ग के रूप में मान्यता प्राप्त है जो
अच्छा: इन व्यक्तियों को प्रगति करने में सक्षम माना जाता है।

15 और 16. नियति निर्धारित व्यक्ति किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
पांच प्रकार के व्यक्ति (जो आगे चलकर घंटी बजाने वाले हैं) और वे
गलत विचार रखने वाले व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होते हैं।
नियति। आठ प्रकार के कुलीन व्यक्ति वे हैं जिनके पास
निर्धारित भाग्य। शेष व्यक्तियों का भाग्य अनिश्चित है।
तकदीर।

17 और 18. पथ-यात्री किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
जिन चार व्यक्तियों के पास यह मार्ग है, वे पथ-यात्री हैं।
वे चारों व्यक्ति जो सिद्धि अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं, स्थापित हो चुके हैं।
फल प्राप्ति में।

19. 'सममित मस्तिष्क वाला' व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
जिस व्यक्ति के मामले में समाप्ति होते ही
पापी प्रवृत्तियों के फलस्वरूप जीवन का अंत हो जाता है।
जो व्यक्ति 'समचित्त' होता है, उसे ऐसा कहा जाता है।

20. वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जिसके लिए एक युग बीत जाता है?

क्या ऐसे व्यक्ति को फल प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए?
धारा-प्राप्तकर्ता का चरण, और क्या तब यह समय होना चाहिए?
विद्यमान युग की प्रज्वलन, युग को नहीं होना चाहिए
इस व्यक्ति को तब तक जलाया जाए जब तक कि वह वांछित स्थिति को प्राप्त न कर ले:
कहा जाता है कि यह व्यक्ति एक ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए युगों का अस्तित्व बना रहता है।
वे सभी व्यक्ति जो (बुद्ध द्वारा बताए गए सत्य के मार्ग पर) चलन में हैं, ऐसे ही हैं।

21 22. आर्य किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
आर्यों के आठ प्रकार आर्य कहलाते हैं।
शेष व्यक्ति आर्य नहीं हैं।

23-25. एक शिक्षार्थी किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
वे चार व्यक्ति जो मार्ग के स्वामी हैं और वे तीन व्यक्ति
जिन्हें सिद्धि प्राप्त है वे विद्यार्थी हैं। अरहंत विद्यार्थी नहीं हैं।
शिक्षार्थी; शेष व्यक्ति न तो शिक्षार्थी हैं और न ही गैर-शिक्षार्थी।

26. त्रिविध विद्या का पारखी व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
तीन विज्जों (3 प्रत्यक्ष ज्ञान) वाला व्यक्ति 1. पिछले जन्म
2. दिव्य दृष्टि 3. पुनर्जन्म का कारण बनने वाले सभी पापों/कारकों का निवारण
अरहत पद वह व्यक्ति होता है जिसे त्रिविध ज्ञान प्राप्त होता है।

27. छह अलौकिक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
इन गुणों से युक्त व्यक्ति छह अलौकिक ज्ञानों से संपन्न होता है।
(विचार और इच्छाशक्ति का असाधारण प्रयोग, अर्थात् अलौकिक क्षमताएं)
1. जादुई शक्तियां 2. दैवीय श्रवण शक्ति 3. दूसरों के विचारों का ज्ञाता 4. ज्ञान
पिछले पुनर्जन्म 5. दैवीय दृष्टि, अंतर्ज्ञान 6. विनाश का ज्ञान
पापी प्रवृत्तियों का)।

28. पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति (सम-बुद्ध) किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो स्वयं इसे पूरी तरह समझता है
उन सिद्धांतों के संबंध में सत्य जो पहले कभी नहीं सुने गए थे, और प्राप्त करता है
उसमें सर्वज्ञता के साथ-साथ परिणामों पर पूर्ण प्रभुत्व (ऊपर देखें) भी शामिल है।
इस प्रकार के व्यक्ति को पूर्णतः प्रबुद्ध कहा जाता है।

29. स्वयं के लिए प्रबुद्ध व्यक्ति (पच्चेक-बुद्ध) किस प्रकार का होता है?
यहां व्यक्ति स्वयं ही सत्यों को भलीभांति समझ लेता है।
पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों के संबंध में, लेकिन न तो वह किसी भी स्तर तक पहुँचता है।
न तो सर्वज्ञता और न ही उसके परिणामों पर प्रभुत्व—इस प्रकार की
ऐसा व्यक्ति स्वयं के लिए प्रबुद्ध कहलाता है।

30. दोनों तरह से किस प्रकार का व्यक्ति स्वतंत्र होता है?
यहां एक व्यक्ति स्वयं आठ चरणों का अनुभव करता है।
मुक्ति के बारे में, और उन्हें अंतर्दृष्टि से देखने के बाद, उनका
पापी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार
ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति दोनों तरह से मुक्त हो गया है।

31. किस प्रकार का व्यक्ति अंतर्दृष्टि के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करता है?
यहां एक व्यक्ति जिसने आठ चरणों का अनुभव नहीं किया है
मुक्ति तो संभव है, लेकिन उन्हें अंतर्दृष्टि के माध्यम से समझना आवश्यक है।

उसकी पापी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से नष्ट हो गई हैं। इस प्रकार का
ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति अंतर्दृष्टि से मुक्त हो जाता है।

32. 'प्रत्यक्षदर्शी' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां जब कोई व्यक्ति आठ अवस्थाओं का अनुभव करते हुए जीवन जीता है
मुक्ति और अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें देखने के बाद, कुछ
उसकी पापी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार
किसी व्यक्ति को 'प्रत्यक्षदर्शी' कहा जाता है।

33. दृष्टि प्राप्त करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक व्यक्ति वास्तव में समझता है कि यह पीड़ा है, कि
यही दुख की उत्पत्ति है, यही दुख का अंत है।
पीड़ा, और यही वह मार्ग है जो पीड़ा के अंत की ओर ले जाता है।
दुःख। तथागत (बुद्ध) द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत हैं
उन्होंने इसे अंतर्दृष्टि के साथ-साथ अभ्यास के माध्यम से भी अनुभव किया;
और अंतर्दृष्टि से उन्हें देखने के बाद, उसके कुछ पापी
ये प्रवृत्तियाँ पूरी तरह विलुप्त हो चुकी हैं। इस प्रकार के व्यक्ति के बारे में कहा जाता है
दूरदृष्टि प्राप्त करने वाला व्यक्ति बनना।

34. आस्था के द्वारा किस प्रकार का व्यक्ति मुक्ति पाता है?
यहां व्यक्ति वास्तव में समझता है कि यह पीड़ा है।
यही दुख का मूल है, यही उसका निवारण है।
दुखों से मुक्ति का मार्ग यही है।
दुःख के बारे में। तथागत (बुद्ध) द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत।
वह अंतर्दृष्टि के साथ-साथ अभ्यास के माध्यम से भी इन चीजों को समझता है।
और अंतर्दृष्टि से उन्हें देखने के बाद, उसके कुछ पापी
प्रवृत्तियाँ पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं, हालाँकि एक ही तरीके से नहीं।
ठीक उसी तरह जैसे किसी ऐसे व्यक्ति के मामले में जिसने दृष्टि प्राप्त कर ली हो। इस प्रकार का
जिस व्यक्ति को आस्था के द्वारा मुक्ति प्राप्त होती है, उसे ही मुक्तिदाता कहा जाता है।

35. 'धम्म के अनुरूप चलने वाला' व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
किसी व्यक्ति की अंतर्दृष्टि की क्षमता जो अहसास की प्रक्रिया में है
'स्ट्रीम-अटेनमेंट' की फल प्राप्ति का चरण एक बड़े स्तर तक विकसित होता है।
विस्तार से; वह अंतर्दृष्टि से युक्त आर्य मार्ग का अनुसरण करता है।
अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण—इस प्रकार के व्यक्ति को ऐसा कहा जाता है।
मानक के अनुरूप। ऐसा व्यक्ति जो अभ्यास करता है
किसी धारा-प्राप्तकर्ता की फल प्राप्ति अवस्था वह होती है जो निम्न के अनुरूप होती है:
सामान्य तौर पर, जबकि फल प्राप्ति में स्थापित वही व्यक्ति एक है
जिसने दृष्टि प्राप्त कर ली है।

36. 'विश्वास द्वारा अनुरूप होने वाला व्यक्ति' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
फल प्राप्ति की दिशा में अग्रसर व्यक्ति की विश्वास करने की क्षमता
धारा-प्राप्तकर्ता का चरण काफी हद तक विकसित हो जाता है।
यह मार्ग आस्था को साथ लेकर चलता है और उससे पहले के महान मार्ग का विकास करता है।
विश्वास के द्वारा—इस प्रकार के व्यक्ति को अनुरूपता प्राप्त करने वाला कहा जाता है।
विश्वास। ऐसा व्यक्ति जो सफलता की अवस्था प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है।
धारा-प्राप्ति विश्वास द्वारा अनुरूप होना है; जबकि वही
जो व्यक्ति सिद्धि की अवस्था में स्थापित हो जाता है, वह आस्था के द्वारा मुक्त हो जाता है।

37. वह किस प्रकार का व्यक्ति है जो पुनर्जन्म लेता है (नहीं
सात बार से अधिक?
यहां एक व्यक्ति ने तीनों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।
बंधनों से मुक्त होकर, वह 'धारा की ऊँचाई तक पहुँचने वाला' बन जाता है; उसके गिरने की संभावना अब नहीं रह जाती।
एक दयनीय स्थिति में पहुँच गया, लेकिन सफलता के लिए नियत है और ज्ञान प्राप्त करता है।
उसका अंतिम लक्ष्य (या उद्देश्य); वह दौड़ता हुआ आगे बढ़ता रहा और
देवताओं और मनुष्यों के बीच सात बार पुनर्जन्म लेने से
दुखों का अंत। ऐसे व्यक्ति को ऐसा व्यक्ति नहीं कहा जाता है।
सात से अधिक बार पुनर्जन्म से गुजरना।

38. जो व्यक्ति एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
परिवार से (अच्छे) परिवार तक?
यहां एक व्यक्ति ने तीनों बेड़ियों को पूरी तरह से तोड़ दिया है,
वह धारा को प्राप्त करने वाला बन जाता है; उसके गिरने की संभावना अब कम हो जाती है।
दयनीय स्थिति में है, लेकिन सफलता अवश्य प्राप्त होगी और ज्ञान प्राप्त हो चुका है।
उसका अंतिम लक्ष्य (या उद्देश्य); वह दौड़ता हुआ आगे बढ़ता रहा और पुनर्जन्म लेता रहा।
दो या तीन (अच्छे) परिवारों के माध्यम से इसका अंत होता है।
पीड़ा सहने वाले व्यक्ति को ही प्रवास करने वाला कहा जाता है।
एक परिवार से दूसरे परिवार तक।

39. 'एकल-बीजयुक्त' व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक व्यक्ति ने तीनों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।
बंधनों से मुक्त होकर, वह धारा की प्राप्ति करने वाला बन जाता है; वह अब और उत्तरदायी नहीं रहता।
दयनीय स्थिति में आ गया है, लेकिन सफलता के लिए नियत है और
ज्ञान प्राप्ति को अपना अंतिम लक्ष्य (या उद्देश्य) मानना; उसका वापस लौट आना
मानव अस्तित्व की अवस्था दुखों का अंत कर देती है।
ऐसे व्यक्ति को एकल-बीजधारी कहा जाता है।

40. 'एक बार लौटने वाला' व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक व्यक्ति ने तीनों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।
बंधनों ने भावनाओं, घृणा और भ्रम को कमजोर कर दिया है।
वह एक बार लौटने वाला बन जाता है; इस दुनिया में केवल एक बार वापस आता है।
वह दुखों का अंत करता है। ऐसे व्यक्ति को आध्यात्मिक गुरु कहा जाता है।
एक बार वापसी करने वाला।

41. 'वापसी न करने वाला' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक व्यक्ति ने पांचों बेड़ियों को पूरी तरह से तोड़ दिया है।
निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाला प्राणी, एक 'प्राणी' बन जाता है।
आभासमय पुनर्जन्म; उसी में अंतिम मुक्ति प्राप्त करना
राज्य के अनुसार, वह उस क्षेत्र से लौटने के लिए उत्तरदायी नहीं है।
किसी व्यक्ति को 'वापसी न करने वाला' कहा जाता है।

42. जो व्यक्ति मरकर निर्वाण प्राप्त करता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
जिस उम्र में उसे ब्रह्म लोक में रहना चाहिए था, उसकी आधी उम्र से पहले ही वह जीवित रह सकता था।
समाप्ति तिथि?
यहां एक व्यक्ति ने पांचों बंधनों को पूरी तरह से तोड़ दिया है,
निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाला प्राणी, एक ऐसा प्राणी बन जाता है
आभासमय पुनर्जन्म; उसी में अंतिम मुक्ति प्राप्त करना
राज्य के अनुसार, वह उस क्षेत्र से लौटने के लिए उत्तरदायी नहीं है; वह या तो

उसके आगमन के तुरंत बाद, या मध्य तक पहुँचने से पहले
जीवन के इस कालखंड में, वह महान मार्ग प्रकट होता है जिस पर वह चलता है।
उच्चतर स्वभाव के बंधनों को तोड़ सकता है। ऐसा व्यक्ति
वह व्यक्ति जिसे आधी रात से पहले ही मृत्यु हो जाती है और निर्वाण प्राप्त हो जाता है, वही माना जाता है।
ब्रह्म लोक में उसे जिस उम्र तक जीवित रहना चाहिए था, वह समाप्त हो गई।

43. 'कार्यकाल कम करने वाले मृतक' किस प्रकार के व्यक्ति होते हैं?
यहां एक व्यक्ति ने पांचों बंधनों को पूरी तरह से तोड़ दिया है,
निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाला, एक प्रेतवाधित प्राणी बन जाता है।
पुनर्जन्म, उसी अवस्था में अंतिम मुक्ति की प्राप्ति,
उस क्षेत्र से वापस लौटने की संभावना नहीं; वह उस क्षेत्र से बाहर निकल रहा है
अपने जीवन के मध्य में और मृत्यु की ओर अग्रसर।
वह महान मार्ग को प्रकट करता है ताकि वह उसे त्याग सके
उच्च प्रकृति के बंधनों से मुक्त। ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है...
'कार्यकाल कम करने वाले मृतक।'

44. किस प्रकार का व्यक्ति 'स्वचालित रूप से मृत' होता है?
यहां एक व्यक्ति ने पांचों बंधनों को पूरी तरह से तोड़ दिया है,
निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाला, एक प्रेतवाधित प्राणी बन जाता है।
पुनर्जन्म, उसी में अंतिम मुक्ति प्राप्त करना
राज्य, उस क्षेत्र से लौटने के लिए उत्तरदायी नहीं; वह स्वतः
वह महान मार्ग को प्रकट करता है ताकि वह उसे त्याग सके
उच्च प्रकृति के बंधनों से मुक्त। ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है...
'स्वयं मृत।'

45. निर्वाण प्राप्त करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
कठिन परिश्रम?
यहां एक व्यक्ति ने पांचों बंधनों को पूरी तरह से तोड़ दिया है,
निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाला प्राणी, एक ऐसे प्राणी में बदल जाता है
आभासमय पुनर्जन्म, स्वयं में अंतिम मुक्ति की प्राप्ति
उसी राज्य में, उस क्षेत्र से लौटने के लिए उत्तरदायी नहीं; वह एक
उनकी इच्छाशक्ति के अथक प्रयास से ही आर्य मार्ग का निर्माण होता है।
उच्चतर प्रकृति के बंधनों को दूर करने के दृष्टिकोण से।
कठिन परिश्रम के माध्यम से निर्वाण प्राप्त करने वाला व्यक्ति कहलाता है।
परिश्रम।

46. नदी के विपरीत दिशा में जाने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
अकनित्था क्षेत्र?
यहां एक व्यक्ति ने पांचों बंधनों को पूरी तरह से तोड़ दिया है,
निम्न क्षेत्र में पुनर्जन्म का कारण बनता है, एक प्रेतवाधित प्राणी बन जाता है
पुनर्जन्म, उसी अवस्था में अंतिम मुक्ति की प्राप्ति,
उस क्षेत्र से लौटने के लिए उत्तरदायी नहीं; क्योंकि उसकी मृत्यु हो चुकी है
अविहा (स्थिर देवता) से अताप्पा (शांत देवता) तक जाता है।
अताप्पा की मृत्यु के बाद सुदस्सा (सुंदर) के पास जाता है
देवता), सुदस्सा से मृत्यु के बाद सुदस्सी के पास जाते हैं (स्पष्ट
(दर्शन प्राप्त करने वाले देवता), सुदस्सी से मृत्यु के बाद अकनित्था जाते हैं
(सर्वोच्च देवताओं को), वह अकनित्था निवास में लाता है
वह उस नेक मार्ग पर चले ताकि वह बंधनों से मुक्त हो सके।
उच्चतर प्रकृति। ऐसे व्यक्ति को आगे बढ़ने वाला कहा जाता है।

अकनित्था क्षेत्र के ऊपरी हिस्से में।

47. 'स्ट्रीम-अटेनर' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
जिस व्यक्ति की तीनों बेड़ियाँ टूट चुकी हैं
जिसे दूर रखा गया है उसे 'स्ट्रीम-अटेनर' कहा जाता है।

48. 'धारा-प्राप्तकर्ता' की प्राप्ति के लिए प्रयासरत व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
फल प्राप्ति का चरण?
धारा-प्राप्तकर्ता जो जीवन यापन के क्षेत्र में निरंतर चलता/जीता है,
फलने की अवस्था (सोतापट्टी-फला-सच्चिकिरिया-पतिपन्नो)।
जो व्यक्ति तीनों बंधनों को तोड़ने के लिए काम करता है, वह है
एक व्यक्ति जो किसी कार्य की सफलता की अवस्था को साकार करने के लिए काम कर रहा है
'स्ट्रीम-अटेनर';

49. एक बार लौटने वाला (सकदागामी)?
जिस व्यक्ति का इंद्रिय सुखों और द्वेष से लगाव है
जिसे नष्ट कर दिया गया है उसे 'एक बार लौटने वाला' कहा जाता है।

50. 'एक बार लौटने वाले' की सफलता की अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
वह व्यक्ति जो आसक्ति को नष्ट करने के लिए काम कर रहा है
इंद्रिय सुखों और द्वेष के लिए काम करने वाला एक व्यक्ति होता है
एक बार लौटकर आए व्यक्ति की सफलता की अवस्था का अहसास ;

51. कभी न लौटने वाला (अनागामी) ?
वह व्यक्ति जिसका इंद्रिय सुखों के प्रति लगाव हो
और दुर्भावना को पूरी तरह से दूर कर दिया गया है, ऐसा कहा जाता है।
'वापसी न करने वाला।'

52. 'अप्रतिदेय' फल प्राप्ति की अवस्था को साकार करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
एक व्यक्ति जो आसक्ति को दूर करने के लिए काम कर रहा है
इंद्रिय सुख और अवशिष्ट द्वेष एक ही हैं
'गैर-वापसीकर्ता' के फलस्वरूप प्राप्त करने की दिशा में कार्य करना।

53. अरहा?
वह व्यक्ति जिसका लगाव किसी रूप से होता है
और निराकार ने अभिमान, घमंड और अज्ञान को जन्म दिया है।
जिसे पूरी तरह से अलग कर दिया गया हो, उसे अरहंत कहा जाता है।
वह बुद्ध की तरह पूर्णतः प्रबुद्ध हो जाता है (अरहत/अरहंत/अरिहंत)।
और किसी भी लोक में कभी पुनर्जन्म नहीं लेंगे [बल्कि वे विलीन हो जाएंगे]
निर्वाण/निब्बान नामक शाश्वत, असीम आनंदमय अमरता की अवस्था।
यह बुद्ध द्वारा दिखाए गए मार्ग का अंतिम लक्ष्य है।

54. अरहंत प्राप्ति की अवस्था को साकार करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
एक व्यक्ति जो किसी भी प्रकार के लगाव को त्यागने के लिए काम कर रहा है
और निराकार, अभिमान, घमंड और अज्ञान की ओर ले जाता है।
बिना किसी अवशेष के वह व्यक्ति फल प्राप्ति के चरण की ओर काम कर रहा है।

अरहंत पद का।

तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 2
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण लॉ द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय II: मानव प्रकारों का दो भागों में विभाजन

1. किस प्रकार का व्यक्ति क्रोधित होता है? तो क्रोध क्या है?
जो क्रोध है, क्रोधित होना है, और क्रोधित होने की अवस्था है।
क्रोध, घृणा, नफरत करना, द्वेष, दुर्भावना, होने की क्रिया
दुर्भावना, द्वेष, शत्रुता, द्वेष, अशिष्टता, अचानकता
हृदय में द्वेष रखना—इसे क्रोध कहते हैं। जिसके मन में
इस क्रोध से छुटकारा न पाने वाले व्यक्ति को क्रोधी कहा जाता है।
किस प्रकार के व्यक्ति को प्रतिशोधी कहा जाता है? फिर क्या है?
प्रतिशोध?
पहले क्रोध आता है, उसके बाद प्रतिशोध।
जो कि प्रतिशोध है, बदला लेने का कार्य है और
प्रतिशोध की अवस्था, निर्धारण, स्थापना,
स्थिति को नियंत्रित करने और उसका पालन करने के मामले में, क्रोध की हिंसक क्रिया को कहा जाता है
प्रतिशोध। जिसका प्रतिशोध अभी तक नहीं निपटा है, उसके बारे में कहा जाता है
प्रतिशोध लेने के लिए।

2. निंदा करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो निंदा करना क्या है?
जो निंदा है, जो निंदा करता है, और जो
जो निंदा है। इसे बदनामी कहा जाता है। जिसमें
इस निंदा को दूर न करने वाले व्यक्ति को निंदाकार कहा जाता है।
झगड़ालू स्वभाव का व्यक्ति कैसा होता है? तो फिर झगड़ा क्या होता है?
जो झगड़ा है, जो झगड़ा कर रहा है, और जो
जो झगड़ालूपन है, झगड़े का तरीका है, मुद्दा है
विवाद, लड़ाई-झगड़ा, निरंतर संघर्ष—इसे झगड़ा कहते हैं। जिस व्यक्ति में इस प्रकार का झगड़ा बना रहता है, उसे झगड़ालू व्यक्ति कहा जाता है।

3. ईर्ष्यालु व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो ईर्ष्या क्या है?
ईर्ष्या, जलन, ईर्ष्या की भावना, दूसरों को प्राप्त होने वाले लाभ, मान-सम्मान, आदर, सम्मान, अभिवादन और पूजा के प्रति ईर्ष्या की अवस्था—यही ईर्ष्या कहलाती है। जिस व्यक्ति में यह ईर्ष्या बनी रहती है, वह ईर्ष्यालु कहलाता है।

लालची व्यक्ति किस प्रकार का होता है? लालच से क्या तात्पर्य है?

लोभ के पाँच रूप हैं - निवास, वंश, लाभ, सौंदर्य और पुण्य (धर्म) के संबंध में लोभ।
इस प्रकार का लोभ, लालच को मन में पालना, अत्यधिक लालसा, लालच, कठोर व्यवहार, मन का अनियंत्रित होना—यही लोभ कहलाता है। जिस व्यक्ति में यह लोभ बना रहता है, वह लोभी कहलाता है।

4. धूर्त व्यक्ति किस प्रकार का होता है? धूर्तता से क्या तात्पर्य है?

यहाँ व्यक्ति धूर्त और कपटी बन जाता है। जो भी धूर्तता, कपट, कपट, कुटिलता है, वही धूर्त कहलाता है। जिस व्यक्ति में यह कपटता बनी रहती है, उसे ही कपटी कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति कपटी होता है? उस स्थिति में कपट क्या है?

यहां कोई व्यक्ति शरीर, वचन और विचार से कुकर्म करता है, और उसे छिपाने के उद्देश्य से पापी इच्छा रखता है, ऐसा संकल्प करता है, कहता है और कार्य करता है: मुझे कोई न जाने। यह छल, कपट, छिपाव, छल, कपट, टालमटोल, छिपाव, पूर्णतः छिपाव, निरोध, पूर्णतः निरोध, अप्रकट करना, और विशेष रूप से छिपाना—यह पापी कार्य छल कहलाता है।

जिस व्यक्ति में यह छल नष्ट नहीं होता, उसे कपटी व्यक्ति कहा जाता है।

5. निर्लज्ज व्यक्ति किस प्रकार का होता है? निर्लज्जता क्या है?
जहां लज्जा होनी चाहिए वहां लज्जा न होना, पापी और अनैतिक गुणों को अपनाने पर लज्जा न होना—यह निर्लज्जता कहलाता है। जिस व्यक्ति में यह निर्लज्जता होती है, उसे निर्लज्ज कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति धृष्ट होता है? तो फिर धृष्टता क्या है?
जहां पश्चाताप करना चाहिए वहां पश्चाताप न करना, पापी और अनैतिक गुणों को अपनाने पर पश्चाताप न करना - इसे धृष्टता कहा जाता है। जो व्यक्ति इस प्रकार की धृष्टता से ग्रसित होता है, उसे धृष्ट कहा जाता है।

6. अवज्ञाकारी व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो अवज्ञा क्या है?
आज्ञापालन के विषय में अवज्ञा, आज्ञापालन की कमी, आज्ञापालन का अभाव, शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाना, निरंतर विरोध करना, अनादर, बेअदबी, अनुशासनहीनता (अधीनता का उल्लंघन) को अवज्ञा कहा जाता है। ऐसा व्यक्ति अवज्ञाकारी कहलाता है।

किस प्रकार के व्यक्ति को दुष्टों का साथी कहा जाता है? तो फिर दुष्टों के साथ संगति क्या है?
अविश्वासी, दुष्ट, अशिक्षित, लालची और मूर्ख लोगों की सेवा करना, उनका अनुसरण करना, उनकी सेवा करना, उनके प्रति श्रद्धा रखना, उनका सम्मान करना, उनकी आदर करना, उनकी पूजा करना और उनकी ओर झुकाव रखना दुष्टों की संगति कहलाता है। ऐसा पापपूर्ण संगति रखने वाला व्यक्ति दुष्टों का साथी कहलाता है।

7. किस प्रकार का व्यक्ति 'इंद्रियों के द्वार' के प्रति लापरवाह होता है? तो फिर इंद्रियों के द्वार के प्रति लापरवाही क्या है?
यहां व्यक्ति किसी वस्तु को आंखों से देखता है और उसके रूप और सौंदर्य से मोहित हो जाता है। जबकि यदि वह अपनी दृष्टि को अनियंत्रित रखता है, तो पापी और दुष्ट मानसिक अवस्थाएं—अर्थात लोभ और निराशा—उसमें उत्पन्न होंगी; वह न तो उसे नियंत्रित करने का प्रयास करता है, न ही दृष्टि की रक्षा करता है, और न ही दृष्टि शक्ति पर नियंत्रण प्राप्त करता है। (इसी प्रकार) वह अपने कानों से ध्वनि सुनता है, नाक से गंध सूंघता है, जीभ से स्वाद लेता है, शरीर से किसी वस्तु को स्पर्श करता है, मन से किसी मानसिक अवस्था को जानता है और उसके रूप और सौंदर्य से मोहित हो जाता है; जबकि यदि वह मन को अनियंत्रित रखता है, तो पापी और दुष्ट मानसिक अवस्थाएं—अर्थात लोभ और निराशा—उसमें उत्पन्न होंगी; वह न तो उसे नियंत्रित करने का प्रयास करता है, न ही मन की रक्षा करता है, और न ही मन शक्ति पर नियंत्रण प्राप्त करता है। जो इन छह इंद्रियों की रक्षा, नियंत्रण, संरक्षण और वशीकरण नहीं करता, उसे इंद्रियों के प्रति असावधानी कहा जाता है।
'इंद्रिय-द्वार।'

किस प्रकार का व्यक्ति भोजन के मामले में अतिवादी होता है? तो फिर भोजन में संयम क्या है?
यहां कोई व्यक्ति मनोरंजन, अभिमान, सजावट, तृप्ति, अतिभोग और भोजन के प्रति लापरवाही के कारण बिना सोचे-समझे और नासमझी से भोजन ग्रहण करता है, इसे भोजन के प्रति अतिभोग कहा जाता है। भोजन के प्रति इस अतिभोग वाले व्यक्ति को भोजन का असंयमी कहा जाता है।

8. भुलक्कड़ किस प्रकार का व्यक्ति होता है? तो फिर भुलक्कड़पन क्या है?
जो विस्मृति, स्मृति की कमी, स्मरण न कर पाना, याद न कर पाना, असावधानी, विस्मृति है, उसे ही विस्मृति कहा जाता है। ऐसा व्यक्ति विस्मृति से ग्रसित कहलाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति असावधान होता है? तो फिर असावधानी क्या है?
ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, समझ का अभाव, बोध का अभाव, पूर्ण ज्ञान का अभाव, अंतर्दृष्टि का अभाव, ज्ञान की कमी, गहराई में न उतरना, सर्वेक्षण न करना, चिंतन न करना, मंदबुद्धि, मूर्खता, बुद्धि का अभाव, भ्रम, मोह, भ्रम, अज्ञान, अज्ञान की बाढ़, अज्ञान का बंधन, अज्ञान की प्रवृत्ति, अज्ञान की वृद्धि, अज्ञान का अवरोध, और बुराई की जड़। ऐसा व्यक्ति जो इस प्रकार की असावधानी से ग्रसित है, उसे असावधान कहा जाता है।

9. नैतिक नियमों का उल्लंघन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो नैतिक नियमों का उल्लंघन क्या है?

शरीर से संबंधित, वाणी से संबंधित, और दोनों से संबंधित उल्लंघन नैतिक नियम का उल्लंघन कहलाता है। हर प्रकार की अनैतिकता नैतिक नियम का उल्लंघन है। ऐसा उल्लंघन करने वाला व्यक्ति नैतिक नियम का उल्लंघनकर्ता कहलाता है।

(खतरनाक) विचारों का समर्थन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो फिर (खतरनाक) विचारों का समर्थन करना क्या है? दान, यज्ञ और यज्ञ-आहुति में कोई पुण्य नहीं है, न ही अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल है। न तो वर्तमान संसार है और न ही भविष्य का संसार। न तो माता है और न ही पिता, न ही उनके बिना जन्म लेने वाले प्राणी हैं। इस संसार में न तो कोई संन्यासी है और न ही कोई ब्राह्मण जिसने मन की शांति प्राप्त कर ली हो और अपने सर्वोत्तम कर्म कर रहा हो, जिसने अपने प्रयासों से इस संसार और परलोक को जानकर दूसरों को ज्ञान प्रदान किया हो। इस प्रकार के विचार, मत का मार्ग, मत का जंगल, विधर्म की यह अव्यवस्था, मत का यह अस्थिर होना, मत का यह बंधन, यह पकड़ और जकड़न, इसके प्रति समर्पण, इसका आचरण, यह बुरा मार्ग, यह गलत मार्ग, यह झूठ, यह विपरीत लक्ष्य धारण करना—ये सभी खतरनाक विचार कहलाते हैं। हर प्रकार के गलत मत को खतरनाक विचार कहा जाता है। जो व्यक्ति इस प्रकार के खतरनाक विचार से ग्रसित होता है, उसे खतरनाक विचारों का समर्थक कहा जाता है।

10. आंतरिक बंधनों से ग्रस्त व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
जिस व्यक्ति में उसे निम्न लोकों से बांधने वाले पांच बंधन अभी भी नहीं हटे हैं, उसे आंतरिक बंधनों वाला व्यक्ति कहा जाता है।
बाहरी बंधनों वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
जिस व्यक्ति में उसे उच्च लोकों से बांधने वाले पांच बंधन नहीं हटते, उसे बाह्य बंधनों वाला व्यक्ति कहा जाता है।

11. किस प्रकार का व्यक्ति क्रोध रहित होता है? तो फिर 'क्रोध' शब्द का क्या अर्थ है?
जो क्रोध है, क्रोधी होना आदि (II 1) मन का: इसे क्रोध कहा जाता है। जिस व्यक्ति में ऐसा क्रोध दूर हो गया हो, उसे क्रोध रहित व्यक्ति कहा जाता है।
प्रतिशोध न लेने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो फिर प्रतिशोध क्या है?
सबसे पहले क्रोध आदि आता है (II. 1)। क्रोध को प्रतिशोध कहा जाता है। जिस व्यक्ति में प्रतिशोध की भावना समाप्त हो जाती है, उसे प्रतिशोधहीन व्यक्ति कहा जाता है।

12. किस प्रकार का व्यक्ति निंदाकार नहीं होता? तो फिर 'निंदा' क्या है?
निंदा करना, निंदा का अभ्यास करना, निंदा करने वाले की अवस्था, पाखंड, पाखंड का कार्य—यह सब निंदा कहलाता है। जिस व्यक्ति में ऐसी निंदा की प्रवृत्ति नहीं होती, वह निंदा करने वाला नहीं कहलाता।
किस प्रकार का व्यक्ति झगड़ालू नहीं होता? तो फिर झगड़ा क्या होता है?
जो झगड़ा करता है... , इत्यादि (II. 1), झगड़ा। जिस व्यक्ति में इस प्रकार का झगड़ा दूर हो जाता है, उसे झगड़ालू नहीं कहा जाता।

13. किस प्रकार का व्यक्ति ईर्ष्या रहित होता है? तो फिर ईर्ष्या क्या है?
ईर्ष्या करना, ईर्ष्या की अवस्था, जलन करना, जलन का कार्य और दूसरों को मिलने वाले लाभ, सम्मान, आदर, श्रद्धा, अभिवादन और पूजा के प्रति जलन की अवस्था। जिस व्यक्ति में ऐसी ईर्ष्या नहीं होती, उसे ईर्ष्यारहित कहा जाता है।

निर्धन व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो फिर लोभ क्या है?

लोभ पाँच प्रकार का होता है: निवास, वंश, लाभ, सौंदर्य और योग्यता से संबंधित लोभ; इस प्रकार का लोभ, लोभ पालना, लालच, अत्यधिक लालसा, लालच, कठोर व्यवहार, मन का असंयम—यही लोभ कहलाता है। जिस व्यक्ति में ऐसा लोभ नहीं होता, वह लोभरहित कहलाता है।

14. जो व्यक्ति धूर्त नहीं होता, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है? तो फिर धूर्तता क्या है?
यहाँ व्यक्ति धूर्त और कपटी हो जाता है—वही धूर्तता, चालाकी, धूर्त होने की अवस्था, कठोरता, कठोरता, बनावटीपन, ढोंग। जिस व्यक्ति में ऐसी धूर्तता दूर हो जाती है, उसे धूर्त नहीं कहा जाता।

किस प्रकार का व्यक्ति धोखा नहीं देता? तो फिर धोखा क्या है?
यहां कोई व्यक्ति शरीर, वचन और विचार से कुकर्म करता है, और अपने पापी इरादों को छिपाने के उद्देश्य से यह इच्छा रखता है, संकल्प करता है, कहता है और कार्य करता है: मुझे कोई न जाने! यह छल, कपट, छिपाव, छल, कपट, टालमटोल, छिपाव, पूर्णतः छिपाव, निवरण, गुप्त रखना और विशेष रूप से दबाना—यह पापी कार्य छल कहलाता है। जिस व्यक्ति में यह छल दूर हो जाता है, वह छल रहित कहलाता है।

15. संशयवादी व्यक्ति किस प्रकार का होता है? संशय क्या है? जहाँ संशयवादी होना चाहिए, वहाँ संशयवादी होना, किसी पापपूर्ण और अनैतिक कार्य को करने में संशयवादी होना—इसे संशयवादी कहा जाता है।
संशयवादी होना। संशय से ग्रसित व्यक्ति, जैसे
इसे अत्यंत सावधानीपूर्ण बताया जाता है।

विवेकशील व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो विवेक का अर्थ क्या है?
जहां विवेक की आवश्यकता हो वहां विवेक का प्रयोग करना, पापपूर्ण और अनैतिक कार्य करने से बचना—यही विवेक कहलाता है। ऐसा विवेक रखने वाला व्यक्ति विवेकशील कहलाता है।

16. आज्ञाकारी व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो आज्ञाकारिता क्या है?
आज्ञापालन, आज्ञा मानने की आदत, शत्रुतापूर्ण रवैया न अपनाना, विरोध न करना, आदर करना, श्रद्धा और अधीनता—कर्तव्यों के पालन को आज्ञापालन कहा जाता है। ऐसा व्यक्ति आज्ञाकारी कहलाता है।

अच्छे के साथ संगति करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो फिर अच्छे के साथ संगति क्या है?
निष्ठावान, गुणी, विद्वान, भक्तिमय और स्पष्टवादी लोगों की सेवा करना, उनका आदर करना, उन्हें श्रद्धापूर्वक मानना, उनसे प्रेम करना, उनके प्रति मित्रता रखना—इसे ही अच्छे लोगों के साथ संगति का अर्थ कहा जाता है। जो व्यक्ति अच्छे लोगों के साथ संगति रखता है, उसे अच्छे लोगों का साथी कहा जाता है।

17. किस प्रकार का व्यक्ति 'इंद्रियों के द्वार' के प्रति सतर्क रहता है? तो फिर 'इंद्रियों के द्वार' की रक्षा कौन कर रहा है?
यहां एक व्यक्ति किसी वस्तु को आंखों से देखता है, लेकिन उसके रूप और सौंदर्य से मोहित नहीं होता। वहीं, यदि वह अपनी दृष्टि को अनियंत्रित छोड़ दे, तो उसमें पापी और दुष्ट मानसिक अवस्थाएं—अर्थात लोभ और निराशा—उत्पन्न हो जाएंगी। इसलिए वह दृष्टि को नियंत्रित करने का प्रयास करता है, दृष्टि की रक्षा करता है और उस पर नियंत्रण रखता है; (इसी प्रकार) वह कानों से ध्वनि सुनता है और नाक से गंध सूंघता है।

वह अपनी जीभ से स्वाद लेता है, अपने शरीर से किसी बाहरी वस्तु को महसूस करता है, अपने मन से किसी मानसिक घटना को समझता है, लेकिन उसके रूप और सौंदर्य से मोहित नहीं होता। वहीं, यदि वह मन की शक्ति को अनियंत्रित छोड़ दे, तो पापी और दुष्ट मानसिक अवस्थाएँ—अर्थात लोभ और निराशा—उसमें उत्पन्न होंगी। इसलिए वह मन की शक्ति को नियंत्रित करने का प्रयास करता है, उसकी रक्षा करता है और उस पर नियंत्रण रखता है। जो इन छह शक्तियों की रक्षा, नियंत्रण और संरक्षण करता है, उसे ही इंद्रियों की रक्षा कहा जाता है। जो व्यक्ति इंद्रियों के प्रति इस प्रकार सतर्क रहता है, उसे ही इंद्रियों के प्रति सजग कहा जाता है।
किस प्रकार का व्यक्ति भोजन के मामले में संयमी होता है? तो फिर भोजन में संयम का अर्थ क्या है?
यहां एक बुद्धिमान व्यक्ति भोजन को मनोरंजन, अभिमान, सजावट या अलंकरण के लिए नहीं, बल्कि शरीर के भरण-पोषण और भूख की पीड़ा को दूर करने के लिए आवश्यक सीमा तक ही ग्रहण करता है, जिससे पवित्र जीवन जीने में सहायता मिलती है: 'इस प्रकार मैं अपने अतीत के भावों का अंत करूँगा और नए भावों को जन्म नहीं दूँगा; इस प्रकार मुझे जीविका, पवित्रता और शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त होगा'; भोजन के प्रति संतोष, संयम और विचारशीलता को ही भोजन में संयम कहा जाता है। ऐसा संयम रखने वाला व्यक्ति भोजन के प्रति संयमी कहलाता है।

18. किस प्रकार का व्यक्ति सजग होता है? तो फिर सचेतनता क्या है?
वह सजगता जो स्मरण है, जो याद रखने की क्षमता है, जो स्मरण, जो स्मृति को बनाए रखने की क्षमता है, जो विस्मृति न करने की क्षमता है, जो स्मृति विकार से मुक्त है, वह सजगता है जिसे सजगता कहते हैं, वह शक्ति है जिसे सजगता कहते हैं, और वह पूर्ण सजगता है—इसे ही सजगता कहा जाता है। ऐसा सजग व्यक्ति सचेत कहलाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति समझता है? समझना क्या है?
जो ज्ञान, समझ, विवेक, सत्य की खोज, अवलोकन, टिप्पणी, और विवेक, विद्वत्ता, विशेषज्ञता, निपुणता, श्रेष्ठ चिंतन, परीक्षा, तर्क, मार्गदर्शक बुद्धि, आत्मनिरीक्षण, जागरूकता, प्रेरणा, अंतर्दृष्टि, अंतर्दृष्टि की क्षमता, अंतर्दृष्टि की शक्ति, अंतर्दृष्टि का हथियार, अंतर्दृष्टि का महल, अंतर्दृष्टि का प्रकाश, अंतर्दृष्टि की चमक, अंतर्दृष्टि की भव्यता, अंतर्दृष्टि का रत्न, मोहभंग, सत्य की खोज, पूर्ण दृष्टि—यही जागरूकता कहलाती है। ऐसा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति समझता है।

19. नैतिक नियम का पालन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है? तो नैतिक नियम का पालन क्या है?

शरीर और वाणी दोनों के संबंध में उल्लंघन न करना, इसे नैतिक नियम का पालन कहा जाता है; नैतिक नियम के अंतर्गत सभी प्रतिबंध इसका पालन हैं। नैतिक नियम के इस पालन से युक्त कोई भी व्यक्ति नैतिक नियम का पालन करने वाला कहलाता है।2
सही दृष्टिकोण का समर्थक किस प्रकार का व्यक्ति है? सही दृष्टिकोण का समर्थन करना क्या है?
दान, यज्ञ और यज्ञ-आहुति में पुण्य है। अच्छे और बुरे कर्मों का फल होता है। यह संसार है, परलोक भी है, माता-पिता हैं और वे प्राणी भी हैं जो इनके मिलन के बिना जन्म लेते हैं। इस संसार में सच्चे संन्यासी और ब्राह्मण हैं जिन्होंने मन की शांति प्राप्त कर ली है और सर्वोत्तम कर्म कर रहे हैं, और जिन्होंने स्वयं इस संसार और परलोक का ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर लिया है।
इसके बाद, दूसरों को ज्ञान और इस प्रकार के ज्ञान आदि से अवगत कराएं। (11, 18) ...
अज्ञान का अभाव, सत्य का विवेक, सही दृष्टि—यही सही विचारों का समर्थन करना कहलाता है। सभी सही विचार सही विचारों के अंतर्गत आते हैं।
जो व्यक्ति सही विचारों का समर्थन करने की इस क्षमता से संपन्न होता है, उसे सही विचारों का समर्थक कहा जाता है।

20. इस दुनिया में कौन से दो व्यक्ति दुर्लभ हैं?
जो पहले भलाई करता है1 और जो इसे पहचानता है: ये दोनों व्यक्ति इस दुनिया में दुर्लभ हैं।

21. किन दो व्यक्तियों को संतुष्ट करना कठिन है?
जो व्यक्ति अपना सब कुछ संचित करके रखता है और जो व्यक्ति अपना सब कुछ दान कर देता है - इन दोनों व्यक्तियों को संतुष्ट करना कठिन है।

22. वे कौन से दो व्यक्ति हैं जो आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं?
जो व्यक्ति अपनी कमाई को संचित नहीं करता और जो व्यक्ति अपनी कमाई को दान नहीं करता—ये दोनों व्यक्ति आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं।

23. किन दो व्यक्तियों के पाप (आसव) बढ़ते हैं?
जो व्यक्ति उस स्थान पर संदेह करता है जहाँ उसे नहीं करना चाहिए और जो व्यक्ति उस स्थान पर अविश्वास नहीं करता जहाँ उसे करना चाहिए—इन दोनों व्यक्तियों के पाप बढ़ते ही जाते हैं।

24. किन दो व्यक्तियों के पाप नहीं बढ़ते?
जो व्यक्ति उस स्थान पर संदेह नहीं करता जहाँ संदेह करना उचित नहीं है और जो व्यक्ति उस स्थान पर संदेह करता है जहाँ उसे संदेह करना चाहिए - इन दोनों व्यक्तियों के पाप नहीं बढ़ते।

25. कम झुकाव वाला व्यक्ति किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो स्वयं नैतिक रूप से दुष्ट और स्वभाव से बुरा है, और वह किसी ऐसे व्यक्ति की सेवा करता है, उसका अनुसरण करता है और उसकी पूजा करता है जो दुष्ट और बुरे स्वभाव का है: इसे नीच प्रवृत्ति वाला व्यक्ति कहा जाता है।

26. अच्छे स्वभाव वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति जो नैतिक रूप से अच्छा और सदाचारी आदतों वाला हो, और उसी स्वभाव के किसी अन्य व्यक्ति की सेवा करता हो, उसका अनुसरण करता हो और उसका आदर करता हो, उसे अच्छे स्वभाव वाला व्यक्ति कहा जाता है ।

27. संतुष्ट व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
जो स्वयं के लिए और तथागत के शिष्यों के लिए, जो अरहंत हैं, ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, वे ही संतुष्ट होते हैं। पूर्णतः ज्ञानी व्यक्ति स्वयं भी संतुष्ट होता है और दूसरों को भी संतुष्ट करता है।

यहां दो के आधार पर समूहीकरण का विवरण समाप्त होता है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 3

मूलत: गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय III: मानव प्रकारों का तीन भागों में विभाजन

1. किस प्रकार का व्यक्ति निराशावादी होता है?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो अनैतिक और दुष्ट स्वभाव का है, जो अशुद्ध आदतों से ग्रस्त है और जो गुप्त कर्म करता है, वह स्वयं को तपस्वी कहता है, जबकि वह वास्तव में तपस्वी नहीं है; व्यभिचारी होते हुए भी वह पवित्र जीवन जीने का दावा करता है; वह भीतर से भ्रष्ट है, वासनाओं से भरा है और उसमें अशुद्धता संचित है। जब वह सुनता है कि 'फलां नाम का एक भिक्षु पापी प्रवृत्तियों के नाश होने पर अंतर्दृष्टि और पापी प्रवृत्तियों से रहित उच्चतर ज्ञान के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति करता है, जबकि उसने स्वयं इस जीवन में पापी प्रवृत्तियों को जान और अनुभव कर लिया है,' तो वह यह नहीं सोचता कि मैं भी पापी प्रवृत्तियों के नाश होने पर कब मोक्ष की प्राप्ति करूंगा? - ऐसे व्यक्ति को निराशावादी कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति आशावादी होता है?

यहां एक नैतिक और नेक स्वभाव वाले व्यक्ति को यह पता चलता है कि फलां भिक्षु पापी प्रवृत्तियों के नाश होने पर अंतर्दृष्टि और पापी प्रवृत्तियों से रहित विचार मुक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर लेता है, जबकि उसने स्वयं इस जीवन में उच्चतर ज्ञान के द्वारा इन प्रवृत्तियों को जान और अनुभव कर लिया होता है। तब वह सोचता है: मैं भी नाश होने पर कब ऐसा कर पाऊंगा?

वह किस प्रकार का व्यक्ति है जिसने आशा खो दी है?

यहां एक व्यक्ति, जिसने इस जीवन में उच्चतर ज्ञान के माध्यम से स्वयं अंतर्दृष्टि और विचार मुक्ति से प्राप्त मोक्ष को जान लिया है, जो कि बुरी प्रवृत्तियों से मुक्ति है, यह जानकर उसे पता चलता है कि फलां नाम का एक भिक्षु इस संसार में रहता है, जिसने स्वयं उच्चतर ज्ञान के माध्यम से अंतर्दृष्टि और विचार मुक्ति से प्राप्त मोक्ष को जान लिया है, जो कि बुरी प्रवृत्तियों से मुक्ति है। तब वह यह नहीं सोचता: मैं भी कब इस जीवन को जीऊंगा, इत्यादि? इसका कारण क्या है? क्योंकि मोक्ष प्राप्त करने की वह आकांक्षा, जो उसके मन में तब थी जब वह अभी तक मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाया था, अब शांत हो गई है। ऐसे व्यक्ति को इच्छाहीन कहा जाता है।

2. वे तीन व्यक्ति कौन हैं जिनकी तुलना एक बीमार व्यक्ति से की जा सकती है?

बीमार व्यक्तियों के तीन प्रकार होते हैं। यहाँ एक ऐसा बीमार व्यक्ति है जो उचित आहार, अच्छी दवाइयाँ या कुशल नर्स मिलने के बावजूद भी अपनी बीमारी से ठीक नहीं हो पाता है।

यहां भी एक बीमार व्यक्ति है जो उचित आहार, अच्छी दवाएं या सक्षम नर्स मिले या न मिले, अपनी बीमारी से ठीक हो जाता है।

यहां भी एक बीमार व्यक्ति है जो उचित आहार, अच्छी दवाइयां या एक सक्षम नर्स मिलने पर अपनी बीमारी से ठीक हो जाता है, लेकिन इन चीजों के बिना यह संभव नहीं है।

अंतिम श्रेणी के रोगियों के लिए—अर्थात् वे लोग जो उचित आहार, अच्छी दवाइयाँ या एक योग्य नर्स मिलने पर किसी बीमारी से ठीक हो सकते हैं, लेकिन इनके बिना नहीं—भगवान ने उनके लिए (बीमारों के लिए उपयुक्त) आहार, (बीमारों के योग्य) दवा या (बीमारों के लिए उपयुक्त) एक योग्य नर्स निर्धारित की है।

इस श्रेणी के रोगियों के कारण अन्य रोगियों की देखभाल करना आवश्यक है।

इन तीन बीमार व्यक्तियों की तरह इस संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति निवास करते हैं। वे तीन कौन से हैं?

(1) यहाँ एक निश्चित व्यक्ति, चाहे वह देखे या न देखे
तथागत के उपदेशों और उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों और अनुशासन को सुनने या न सुनने पर भी, वह अच्छे कार्यों में स्वीकृत नियम (नियम) का पालन नहीं करता है।

(2) यहाँ भी एक व्यक्ति, चाहे वह तथागत को अपनी आँखों से देखे या न देखे और चाहे वह तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत और अनुशासन को सुने या न सुने, अच्छी बातों में स्वीकृत व्यवस्था में प्रवेश करता है ।

(3) यहाँ भी, कोई व्यक्ति केवल तभी, जब वह तथागत को देख सके और तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत और अनुशासन को सुन सके, अच्छे नियमों में स्वीकृत व्यवस्था में प्रवेश करता है, अन्यथा नहीं।

अंतिम प्रकार के व्यक्ति के मामले में—अर्थात् वह व्यक्ति जो केवल तथागत के दर्शन करने और उनके द्वारा दिए गए उपदेश और अनुशासन को सुनने पर ही शुभ मार्ग का अनुसरण करता है, अन्यथा नहीं—भगवान बुद्ध ने उसके लिए धार्मिक प्रवचन निर्धारित किया है, और इसी व्यक्ति के कारण यह उपदेश दूसरों को दिया जाना चाहिए। ये तीन व्यक्ति इस संसार में बीमार व्यक्तियों के समान हैं।

3. प्रत्यक्षदर्शी किस प्रकार का व्यक्ति होता है?

यहां व्यक्ति स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव करता है और अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें देखकर उसकी कुछ पापी प्रवृत्तियां पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति को 'प्रत्यक्षदर्शी' कहा जाता है।

जिस व्यक्ति को दूरदृष्टि प्राप्त हो जाती है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?

यहां व्यक्ति को यह सत्य समझ आता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को वह अंतर्दृष्टि से ग्रहण करता है और उनका अभ्यास भी करता है; और अंतर्दृष्टि से उन्हें समझने के बाद, उसकी कुछ पाप प्रवृत्तियां पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति को ही ज्ञान प्राप्त करने वाला कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति आस्था के द्वारा मुक्ति प्राप्त करता है?

यहां व्यक्ति वास्तव में समझता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को वह अंतर्दृष्टि से ग्रहण करता है और उनका अभ्यास भी करता है, और अंतर्दृष्टि से उन्हें समझने के बाद, उसकी कुछ पाप प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं, यद्यपि उस व्यक्ति की तरह नहीं जिसने दृष्टि प्राप्त कर ली हो। ऐसे व्यक्ति को ही मुक्त कहा जाता है।

4. 'गाली-गलौज करने वाला' व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

यहां एक झूठा व्यक्ति किसी सभा में, किसी बैठक के बीच में, या अपने रिश्तेदारों के बीच में, या किसी मंडली में, या राजकुमार की परिषद में लाया जाता है और उससे गवाह के रूप में इस प्रकार पूछताछ की जाती है: "आओ, भले आदमी, हमें बताओ कि तुम इसके बारे में क्या जानते हो"; वह कहेगा, "मैं जानता हूँ" जबकि वह नहीं जानता, और जानते हुए भी कहेगा, "मैं नहीं जानता।" वह उन चीजों को देखने का दावा करेगा जो उसने कभी नहीं देखीं, और यह नहीं बताएगा कि उसने वास्तव में किन चीजों को देखा था; इस प्रकार, या तो अपने स्वार्थ के लिए, या दूसरों के स्वार्थ के लिए, या अपने किसी भी छोटे से लाभ के लिए, वह जानबूझकर झूठ बोलेगा। ऐसे व्यक्ति को 'झूठा' कहा जाता है।

'फूलों से बात करने वाला' किस तरह का व्यक्ति होता है?

यहां एक व्यक्ति झूठ का त्याग करके झूठ बोलने से परहेज करता है और जब उसे किसी सभा में, या किसी बैठक के बीच में, या अपने रिश्तेदारों के बीच में, या किसी मंडली में, या राजकुमार की परिषद में लाया जाता है, तो उससे गवाह के रूप में इस प्रकार पूछताछ की जाती है: "आओ, भले आदमी, हमें बताओ कि तुम इसके बारे में क्या जानते हो"; यदि वह नहीं जानता है, तो वह कहता है कि वह नहीं जानता है; यदि वह जानता है, तो वह स्वीकार करता है कि वह जानता है; यदि उसने नहीं देखा है, तो वह तुरंत कहता है कि उसने नहीं देखा है; लेकिन इसके विपरीत, यदि उसने देखा है, तो वह वही बताता है जो उसने देखा है। इस प्रकार, न तो अपने हित में, न दूसरों के हित में, और न ही अपने किसी भी लाभ के लिए वह जानबूझकर झूठ बोलेगा। ऐसे व्यक्ति को 'फूल-वक्ता' कहा जाता है।

"'मधुर वाणी' किस प्रकार के व्यक्ति को कहते हैं?"

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो निर्दोष, कानों को मधुर लगने वाले, प्यारे, हृदय को लुभाने वाले, शिष्ट, अनेकों द्वारा प्रशंसित और अनेकों को आकर्षित करने वाले शब्द बोलता है। ऐसे व्यक्ति को 'मधुरवाक्पटु' कहा जाता है।

5. 'कैंसर के प्रति संवेदनशील' व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो क्रोधित और निराशा से भरा हुआ है, उसे जब भी कोई छोटी सी बात कह देता है तो वह भड़क उठता है, चिढ़ जाता है और जिद्दी हो जाता है। वह अपने क्रोध, शत्रुता और संदेह की भावना को प्रकट करता है। ठीक उसी प्रकार जैसे गैंग्रीन से ग्रस्त घाव को लकड़ी की छड़ी या पत्थर से कुरेदने पर उसमें से बहुत सारा मवाद निकलता है, ठीक उसी प्रकार एक ऐसा व्यक्ति है जो क्रोधित और निराशा से भरा हुआ है, जरा सी बात पर भड़क उठता है, चिढ़ जाता है और अपना क्रोध, शत्रुता और संदेह की भावना को प्रकट करता है।

'तेज दिमाग' वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है ?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो वास्तव में समझता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। जैसे दृष्टि से स्वस्थ व्यक्ति रात के अंधेरे में बिजली की चमक से भी चीजों को देख सकता है, वैसे ही एक ऐसा व्यक्ति है जो वास्तव में समझता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है।

हीरे के प्रति आकर्षित होने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

यहां एक व्यक्ति अपने पापी स्वभावों के नाश होने पर वर्तमान जीवन में ही मन और अंतर्दृष्टि की निष्पाप मुक्ति को जान और अनुभव कर लेता है। जिस प्रकार कोई भी वस्तु हीरे से भेदी नहीं जा सकती, चाहे वह कीमती हो या साधारण, उसी प्रकार एक व्यक्ति अपने पापी स्वभावों के नाश होने पर ऐसा जीवन व्यतीत करता है। ऐसे व्यक्ति को हीरा-मन वाला कहा जाता है।

6. अंधा व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

यहां एक व्यक्ति के पास वह दृष्टि नहीं है जिससे वह उस धन को खोज सके और प्राप्त कर सके जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, या उसे बढ़ा सके; उसके पास वह अंतर्दृष्टि भी नहीं है जिससे वह अच्छे और बुरे, निंदनीय और निर्दोष, श्रेष्ठ और निम्न अवस्थाओं और अंधकार और प्रकाश के मिश्रण में भेद कर सके। ऐसे व्यक्ति को अंधा कहा जाता है।

'पर्बलाइन ब्लाइंड' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास ज्ञान की दृष्टि है जिससे वह उस धन को प्राप्त कर सकता है जो वह पहले प्राप्त नहीं कर सकता था और उसे बढ़ा भी सकता है, लेकिन उसके पास वह मानसिक दृष्टि नहीं है जिससे वह अच्छे और बुरे, निंदनीय और निर्दोष, श्रेष्ठ और निम्न अवस्थाओं में भेद कर सके और अंधकार और प्रकाश के मिश्रण को पहचान सके। ऐसे व्यक्ति को 'अंधा' कहा जाता है।

दो आंखों वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

इस व्यक्ति के पास वह दृष्टि होती है जो उसे उस धन को प्राप्त करने में सहायता करती है जिसे वह पहले प्राप्त नहीं कर सका था और उसे बढ़ाने में भी, साथ ही वह अंतर्दृष्टि भी होती है जो उसे अच्छे और बुरे, निंदनीय और निर्दोष, श्रेष्ठ और निम्न अवस्थाओं और अंधकार और प्रकाश के मिश्रण को जानने में सक्षम बनाती है। ऐसे व्यक्ति को द्विनेत्री कहा जाता है।

7. 'उलटी बुद्धि' वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

यहां एक व्यक्ति भिक्षुओं से धार्मिक प्रवचन सुनने के लिए एक मठ में जाता है। भिक्षु उसे उस सिद्धांत का उपदेश देते हैं जो आरंभ में, मध्य में और अंत में लाभकारी है, और उसे पूर्णतः शुद्ध, अर्थपूर्ण, उपयुक्त शब्दों में व्यक्त और संपूर्ण पवित्र जीवन का वर्णन करते हैं। उस आसन पर बैठे हुए, वह प्रवचन के आरंभ में, उसके जारी रहने पर और उसके समाप्त होने पर ध्यान नहीं देता; ठीक उसी प्रकार, अपने आसन से उठने के बाद भी, वह प्रवचन पर न तो आरंभ में ध्यान देता है... इत्यादि।

जैसे किसी घड़े को उल्टा रखने पर उसमें डाला गया पानी इकट्ठा नहीं होता बल्कि बह जाता है, वैसे ही एक व्यक्ति भिक्षुओं के धार्मिक प्रवचन सुनने के लिए मठ में जाता है... (पर) प्रवचन पर ध्यान नहीं देता। ऐसे व्यक्ति को 'विपरीत बुद्धि' वाला कहा जाता है।

'फोल्डेड इंटेलिजेंस' किस प्रकार के व्यक्ति को कहते हैं?

यहां एक व्यक्ति भिक्षुओं से धार्मिक प्रवचन सुनने के लिए एक मठ में जाता है। भिक्षु उसे उस सिद्धांत का उपदेश देते हैं जो आरंभ में लाभकारी, मध्य में लाभकारी और अंत में लाभकारी होता है, और उसे पूर्णतः शुद्ध, अर्थपूर्ण, उपयुक्त शब्दों में व्यक्त और संपूर्ण पवित्र जीवन का वर्णन करते हैं। वह आसन पर बैठकर आरंभ, मध्य और अंत में प्रवचन को ध्यान से सुनता है, लेकिन आसन से उठने के बाद नहीं सुनता। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति अपने वस्त्र की तह में तिल, चावल, मोदक और बेर जैसी अनेक प्रकार की खाद्य वस्तुएँ रखता है और आसन से उठते ही स्मृतिभ्रंश के कारण वे सब बिखर जाती हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति होता है। ऐसे व्यक्ति को 'खंडित बुद्धि' वाला कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति व्यापक बुद्धि वाला होता है?

यहां एक व्यक्ति किसी मठ में जाकर धार्मिक प्रवचन आदि सुनता है। वह वहीं बैठकर प्रवचन के आरंभ, मध्य और अंत तक, यहां तक कि आसन छोड़ने के बाद भी, ध्यानपूर्वक सुनता है। उदाहरण के लिए, जब किसी घड़े को सीधा रखा जाता है, तो उसमें डाला गया पानी स्थिर रहता है और बहता नहीं है। इसी प्रकार एक व्यक्ति धार्मिक प्रवचन आदि सुनने के लिए किसी मठ में जाता है। ऐसा व्यक्ति ही व्यापक बुद्धि वाला कहलाता है।

8. किस प्रकार का व्यक्ति इंद्रिय-इच्छाओं या पुनर्जन्मों के प्रति उदासीन नहीं होता?

धारा को प्राप्त करने वाला और एक बार जन्म लेने वाला - ये वे लोग हैं जो इंद्रिय-इच्छाओं या पुनर्जन्मों के प्रति उदासीन नहीं होते हैं।

ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो इंद्रिय-इच्छाओं के प्रति तो उदासीन रहता है, लेकिन पुनर्जन्मों के प्रति उदासीन नहीं रहता?

कभी न लौटने वाला व्यक्ति वह होता है जो उदासीन भी होता है और उदासीन नहीं भी।

किस प्रकार का व्यक्ति इंद्रिय-इच्छाओं और पुनर्जन्मों दोनों के प्रति उदासीन होता है?

अरहंत वह व्यक्ति होता है जो इस प्रकार उदासीन होता है।

9. किस प्रकार के व्यक्ति की तुलना पत्थर पर अंकित चिह्न से की जा सकती है?

यहां एक व्यक्ति बार-बार क्रोधित होता है और वह क्रोध लंबे समय तक बना रहता है।

लंबे समय तक, ठीक वैसे ही जैसे पत्थर पर उकेरा गया निशान इतना अमिट होता है कि उसे जल्दी मिटाया नहीं जा सकता।

हवा या पानी से, लेकिन यह लंबे समय तक रहता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति भी होता है, इत्यादि। ऐसा व्यक्ति पत्थर पर अंकित चिह्न के समान होता है।

किस प्रकार के व्यक्ति की तुलना पृथ्वी पर अंकित चिह्न से की जा सकती है?

यहां एक व्यक्ति बार-बार क्रोधित होता है, लेकिन यह क्रोध लंबे समय तक नहीं टिकता; उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर बना कोई निशान हवा या पानी से जल्दी ही मिट जाता है और लंबे समय तक नहीं रहता; इसी प्रकार एक व्यक्ति है, इत्यादि। ऐसे व्यक्ति की तुलना पृथ्वी पर खींचे गए निशान से की जा सकती है।

किस प्रकार के व्यक्ति की तुलना पानी पर बने निशान से की जा सकती है?

यहां एक ऐसे व्यक्ति की बात हो रही है, जिसे कठोर, कठोर और अप्रिय तरीके से भी बात की जाए, तो भी वह अपनी बात को सुसंगत और स्पष्ट रखता है और दूसरों को भी प्रभावित करता है। जैसे पानी पर बना निशान जल्दी मिट जाता है और लंबे समय तक नहीं टिकता, वैसे ही एक व्यक्ति आदि। ऐसे ही व्यक्ति की तुलना पानी पर बने निशान से की जा सकती है।

10. तीन प्रकार के भांग के कपड़े के समान तीन प्रकार के व्यक्ति कौन से हैं?

तीन प्रकार के बानग के कपड़े होते हैं: एक, हालांकि नया होता है, लेकिन उसका रंग फीका होता है, बनावट खुरदरी और सस्ता होता है। दूसरा, उसका रंग फीका होता है, छूने में खुरदुरा और सस्ता होता है। (तीसरा) फटा हुआ कपड़ा होता है, जिसका रंग फीका होता है, छूने में खुरदुरा और सस्ता होता है; वे इस फटे हुए बानग के कपड़े का उपयोग चावल उबालने के बर्तन को साफ करने के लिए करते हैं, या

इसे कूड़े के ढेर में फेंक देते हैं। ठीक इसी प्रकार भिक्षुओं में भी तीन प्रकार के लोग पाए जाते हैं, जिनकी तुलना इन बानग के कपड़ों से की जा सकती है। वे तीन कौन से हैं?

यदि कोई युवा बौद्ध भिक्षु अनैतिक और दुष्ट है, तो यह उसकी कृपाहीनता के कारण है। जैसे भांग का कपड़ा बदरंग होता है, वैसे ही यह व्यक्ति है। जो लोग उसकी सेवा करते हैं, उसका आदर करते हैं, उसकी पूजा करते हैं, वे उसके विचारों को अपना लेते हैं, जो अंततः उनके लिए हानिकारक और दीर्घकालिक कष्ट का कारण बनते हैं। यह उसकी कठोरता के कारण है। जैसे भांग का कपड़ा स्पर्श में खुरदरा होता है, वैसे ही यह व्यक्ति है। जिन लोगों से वह वस्त्र, भोजन, बिस्तर, आसन, चिकित्सा सामग्री और दवाइयाँ स्वीकार करता है, उन्हें उससे कोई बड़ा लाभ या फायदा नहीं होता - यह उस व्यक्ति के तुच्छ मूल्य के कारण है। जैसे भांग का कपड़ा तुच्छ मूल्य का होता है , वैसे ही यह व्यक्ति है। यदि कोई अधेड़ भिक्षु या वरिष्ठ भिक्षु अनैतिक और दुष्ट है, तो यह उसकी कृपाहीनता के कारण है । जैसे भांग का कपड़ा बदरंग होता है, वैसे ही यह व्यक्ति है। जो लोग उसकी सेवा करते हैं, उसका आदर करते हैं, उसकी पूजा करते हैं, उसके विचारों को अपना लेते हैं, उनके लिए यह हानिकारक और लंबे समय तक कष्ट का कारण बनता है। इसका कारण उसका कठोर स्वभाव है। जैसे भांग का कपड़ा छूने में खुरदुरा होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है। जो लोग ऐसे व्यक्ति से वस्त्र, भोजन, बिस्तर, आसन, चिकित्सा सामग्री और दवाइयाँ लेते हैं, उन्हें कोई बड़ा लाभ या फायदा नहीं होता । इसका कारण उस व्यक्ति का तुच्छ मूल्य है। जैसे वह कपड़ा तुच्छ होता है , वैसे ही यह व्यक्ति भी है। यदि ऐसा कोई अधेड़ या वृद्ध भिक्षु सभा में बोलता है, तो भिक्षु इस प्रकार कहते हैं, "तुम्हारे बोलने का क्या लाभ, तुम मूर्ख और अनुभवहीन हो, तुम बोलते भी क्यों हो?" वह क्रोधित और असंतुष्ट हो जाता है और ऐसे शब्द बोलता है कि भिक्षुओं की सभा उसे उसी प्रकार बाहर निकाल देती है जैसे भांग के कपड़े को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया जाता है। ये तीन प्रकार के व्यक्ति हैं जो भिक्षुओं के बीच रहते हैं और अपना जीवन व्यतीत करते हैं, जो भांग के कपड़े के एक टुकड़े के समान
हैं।

11. बनारस के कपड़े के समान तीन प्रकार के व्यक्ति कौन-कौन से हैं?
बनारस के कपड़े तीन प्रकार के होते हैं - एक बिल्कुल नया, सुंदर रंगों वाला, छूने में मुलायम और कीमती; दूसरा कपड़ा न तो नया होता है और न ही पुराना, लेकिन सुंदर रंगों वाला और छूने में मुलायम तथा बहुत कीमती; तीसरा कपड़ा घिसा-पिटा होता है, फिर भी रंगों में सुंदर और छूने में सुखद। वे घिसे-पिटे बनारस के कपड़े का इस्तेमाल गहने लपेटने के लिए करते हैं, या उसे सुगंधित संदूक में डाल देते हैं।
इसी प्रकार भिक्षुओं में बनारस के वस्त्र के समान तीन प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं, और वे तीन कौन से हैं? यदि कोई नया बौद्ध भिक्षु गुणी और सुंदर है, तो यह उसके भीतर के रंगों की सुंदरता के समान है। जैसे बनारस का वस्त्र सुंदर रंगों से रंगा होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है। जो लोग उसकी सेवा करते हैं, उसका आदर करते हैं, उसकी पूजा करते हैं, उसके साथ एक ही विचार रखते हैं, उनके लिए यह लंबे समय तक सुखदायी रहेगा। यह उसके साथ संपर्क के आनंद के कारण है। जैसे बनारस का वस्त्र स्पर्श में सुखद होता है, वैसे ही इस व्यक्ति का स्वरूप होना चाहिए। जो लोग उससे वस्त्र, भोजन, बिस्तर, आसन, चिकित्सा संबंधी सामान और दवाइयाँ स्वीकार करते हैं, उनके लिए यह बहुत लाभकारी और लाभदायक होता है। यह व्यक्ति के महान मूल्य के कारण है। जैसे बनारस का वस्त्र मूल्यवान है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है। (अगला,) यदि कोई मध्यम आयु का भिक्षु, और (अंत में,) यदि कोई वृद्ध भिक्षु गुणी और अच्छे स्वभाव का है, तो यह उसके सद्गुण के कारण है। जैसे बनारस का कपड़ा सुंदर रंगों का होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है। जो लोग उनकी सेवा करते हैं, उनका आदर करते हैं, उनकी पूजा करते हैं या उनके समान विचार रखते हैं, उनके लिए यह लंबे समय तक सुखदायी रहेगा। ऐसा उनके साथ संपर्क के आनंद के कारण है। जैसे बनारस का कपड़ा स्पर्श में सुखद होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी सौम्य स्वभाव का है। जो लोग ऐसे व्यक्ति से वस्त्र, भोजन, बिस्तर और आसन, चिकित्सा संबंधी सामान और दवाइयाँ स्वीकार करते हैं, उन्हें इससे बहुत लाभ और फायदा होता है। ऐसा इस व्यक्ति के उच्च गुणों के कारण है। जैसे बनारस का कपड़ा बहुमूल्य होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है। यदि ऐसा कोई वरिष्ठ भिक्षु भिक्षुओं की सभा में कुछ कहता है, तो भिक्षु सभा को संबोधित करते हुए कहते हैं, "आदरणीय भाइयों, कृपया शांत रहें, यह भिक्षु धर्म और अनुशासन के बारे में बात कर रहे हैं," और उनके शब्द उसी प्रकार हृदय में बस जाते हैं जैसे बनारस का कपड़ा सुगंधित संदूक में रखा जाता है।
भिक्षुओं में मौजूद तीन प्रकार के व्यक्ति बनारस के वस्त्र के समान हैं।

12. आसानी से परीक्षित होने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो अभिमानी, उद्दंड, चंचल, बातूनी, निरर्थक बातों वाला, भूलभुलैया में उलझा हुआ, लापरवाह, अस्थिर और भटकते दिमाग वाला है, जिसकी इंद्रियां अनियंत्रित हैं। ऐसे व्यक्ति का आसानी से आकलन किया जा सकता है।
एक ऐसा व्यक्ति जिसका मूल्यांकन करना कठिन हो, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो अभिमानी, उद्दंड, चंचल, बातूनी और निरर्थक नहीं है; जिसकी स्मृति सुगठित, सचेत, शांत और एकाग्र है तथा इंद्रियों पर नियंत्रण है। ऐसे व्यक्ति का आकलन करना कठिन है।
किस प्रकार के व्यक्ति का आकलन नहीं किया जा सकता?

एक ऐसा व्यक्ति है जो पापी प्रवृत्तियों के नष्ट होने पर, उनसे मुक्त होकर, स्वयं ही इस जीवन में मन और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को जान और अनुभव कर लेता है और उसी की प्राप्ति में जीवन व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति अतुलनीय है।

13. किस प्रकार के व्यक्ति की सेवा, सम्मान या सेवा नहीं की जानी चाहिए?

यहां एक व्यक्ति नैतिकता, एकाग्रता और अंतर्दृष्टि के मामले में निम्न स्तर का है। ऐसे व्यक्ति की सेवा, सम्मान या देखभाल केवल करुणावश ही की जानी चाहिए।

किस प्रकार के व्यक्ति की सेवा, सम्मान या सेवा की जानी चाहिए?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो नैतिकता, एकाग्रता और अंतर्दृष्टि के मामले में बिल्कुल समान है। ऐसे व्यक्ति की सेवा की जानी चाहिए, इत्यादि; और इसका क्या कारण है? "सद्गुणों के समान होने के कारण हमारे बीच सद्गुणपूर्ण चर्चा होगी जो हमारे लिए लाभकारी और हमारी उन्नति के लिए सहायक होगी; एकाग्रता के समान होने के कारण एकाग्रता पर भी सद्गुणपूर्ण चर्चा होगी; यह हमारे लिए लाभकारी और हमारी उन्नति के लिए सहायक होगी। और अंत में, अंतर्दृष्टि के समान होने के कारण हमारे बीच अंतर्दृष्टि पर सद्गुणपूर्ण चर्चा होगी; यह हमारे लिए लाभकारी और हमारी उन्नति के लिए सहायक होगी। और इसी कारण से ऐसे व्यक्ति की सेवा, संवर्धन और देखभाल की जानी चाहिए।"

जिस व्यक्ति को सम्मान और आदर प्राप्त हो, उसकी सेवा, देखभाल और सेवा करना किस प्रकार का व्यवहार है?

यहां एक व्यक्ति सद्गुण, एकाग्रता और अंतर्दृष्टि में हमसे श्रेष्ठ है। ऐसे व्यक्ति का आदर करना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए। इसका कारण यह है कि "मैं उन अधूरे उपदेशों को पूरा करूंगा या उन अधूरे उपदेशों को सीखूंगा। या मैं एकाग्रता की उन शाखाओं को पूरा करूंगा जो अधूरी हैं, या मैं अंतर्दृष्टि की उन शाखाओं को सीखूंगा जिन्हें मैंने पूरा किया है; अंत में, क्योंकि मैं अंतर्दृष्टि के विकास के लिए भी ऐसा ही करूंगा।" इसलिए, ऐसे व्यक्ति का आदर और सम्मान करने के बाद, उनकी सेवा, विकास और देखभाल करनी चाहिए।

14. किस प्रकार के व्यक्ति से घृणा करनी चाहिए, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए, उससे संबंध नहीं रखना चाहिए, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए?

यहां एक व्यक्ति अनैतिक, दुष्ट, अपवित्र आदतों और आचरण वाला, छिपे हुए कर्म करने वाला है; भिक्षु होने के अयोग्य होते हुए भी वह भिक्षु होने का दिखावा करता है; पवित्र जीवन न जीते हुए भी वह पवित्र जीवन जीने वाले का रूप धारण करता है; भीतर से भ्रष्ट, पापी इच्छाओं से भरा हुआ, वह ऐसा व्यक्ति है जिसमें गंदगी जमा हो गई है। ऐसे व्यक्ति से घृणा करनी चाहिए, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए, न ही उसका सम्मान करना चाहिए और न ही उसकी सेवा करनी चाहिए। इसका कारण क्या है? भले ही ऐसा व्यक्ति विधर्मी विचार न रखता हो, फिर भी उसकी बदनामी फैलती है; यह व्यक्ति पापी का मित्र है, पापी का साथी है और पापी से जुड़ा हुआ है। जैसे कोई सांप गंदगी में गिर जाए, तो भले ही वह काटेगा नहीं, फिर भी उस गंदगी से सना हुआ हो जाता है, उसी प्रकार भले ही ऐसा व्यक्ति विधर्मी विचार न रखता हो, आदि।

ऐसे व्यक्ति से घृणा करनी चाहिए, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए, उससे संबंध नहीं रखना चाहिए, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए।

किस प्रकार के व्यक्ति के साथ उदासीनता का व्यवहार किया जाना चाहिए, उसकी सेवा नहीं की जानी चाहिए, उसका सम्मान नहीं किया जाना चाहिए, उसकी देखभाल नहीं की जानी चाहिए?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो क्रोधी और चिड़चिड़ा है, जो थोड़ी सी भी बात कहे जाने पर तुरंत नाराज़, क्रोधित, परेशान और हठी हो जाता है और अपना क्रोध, शत्रुता और असंतोष प्रकट करता है। जैसे किसी सड़ी हुई पसली को लकड़ी या पत्थर से कुरेदने पर उसमें से बहुत सारा सड़ा हुआ पदार्थ निकलता है, ठीक वैसा ही एक व्यक्ति है। जैसे किसी जलते हुए अंगारे को लकड़ी या पत्थर से कुरेदने पर उसमें से सरसराहट की आवाज़ आती है, ठीक वैसा ही एक व्यक्ति है। जैसे गंदगी से भरे गड्ढे को लकड़ी या पत्थर से मथने पर उसमें से बहुत दुर्गंध आती है, ठीक वैसा ही एक व्यक्ति है। ऐसे व्यक्ति के साथ उदासीनता का व्यवहार करना चाहिए, इत्यादि, और इसका क्या कारण है? "क्योंकि क्रोध में आकर वह मेरी निंदा कर सकता है, मेरा उपहास कर सकता है और मुझे नुकसान पहुंचा सकता है।" इसलिए ऐसे व्यक्ति के साथ उदासीनता का व्यवहार किया जाना चाहिए, उसकी सेवा नहीं की जानी चाहिए, उससे संबंध नहीं रखा जाना चाहिए, उसकी देखभाल नहीं की जानी चाहिए।

किस प्रकार के व्यक्ति की सेवा, संवर्धन और देखभाल की जानी चाहिए?

यहां एक व्यक्ति गुणी और सौम्य स्वभाव का है। ऐसे व्यक्ति की सेवा, सम्मान और देखभाल करनी चाहिए; और क्यों? भले ही ऐसा व्यक्ति विधर्मी विचार रखता हो, फिर भी यह प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल जाएगी कि वह सौम्य व्यक्तियों का मित्र, सहयोगी और उनसे जुड़ा हुआ है। इसलिए, ऐसे व्यक्ति की सेवा, सम्मान और देखभाल करनी चाहिए।

15. वह किस प्रकार का व्यक्ति है जो नैतिक नियमों का पालन तो करता है, लेकिन एकाग्रता और अंतर्दृष्टि का अभ्यास अपूर्ण रूप से करता है?

धारा को प्राप्त करने वाला और एक बार लौटने वाला—ये वे व्यक्ति हैं जो नैतिक नियमों का पालन तो करते हैं, लेकिन एकाग्रता और अंतर्दृष्टि का अभ्यास अपूर्ण रूप से करते हैं।

वह किस प्रकार का व्यक्ति है जो नैतिक नियमों का पालन करता है और एकाग्रता के अभ्यासों को पूरा करता है, लेकिन अंतर्दृष्टि का अभ्यास अपूर्ण रूप से करता है?

जो व्यक्ति नैतिक नियमों का पालन करता है और एकाग्रता का अभ्यास पूरा करता है, लेकिन अंतर्दृष्टि का अभ्यास अपूर्ण रूप से करता है, वह कभी वापस न लौटने वाला व्यक्ति होता है।
वह व्यक्ति किस प्रकार का है जो नैतिक नियमों का पालन करता है और एकाग्रता एवं अंतर्दृष्टि का अभ्यास पूर्ण रूप से करता है?
अरहंत वह व्यक्ति होता है जो नैतिक नियमों का पालन करता है और उन प्रथाओं को पूर्ण करता है।
16. वे तीन शिक्षक कौन हैं?
यहां एक शिक्षक इंद्रिय-इच्छाओं की समझ प्रस्तुत करते हैं, लेकिन न तो इंद्रिय-संबंधी विषयों की और न ही भावनाओं की। वहीं, एक अन्य शिक्षक पहले दो की समझ प्रस्तुत करते हैं, लेकिन अंतिम की नहीं, और अंत में एक शिक्षक हैं जो तीनों की समझ प्रस्तुत करते हैं। अब, यहां प्रथम कोटि के शिक्षक से तात्पर्य उस शिक्षक से है जिसने रूप-जगत (रूप-जगत) से संबंधित परमानंद की अवस्था प्राप्त कर ली है।
फिर से, द्वितीय कोटि के शिक्षक को ऐसे शिक्षक के रूप में समझा जाना चाहिए जिसने निराकार जगत (अरूप जगत) से संबंधित परमानंदमय ध्यान की अवस्था प्राप्त कर ली हो।
अंत में, तीसरे क्रम के शिक्षक को समझना होगा।
एक पूर्णतः प्रबुद्ध शिक्षक के रूप में। ये तीन हैं।
17. अन्य तीन शिक्षक कौन हैं?
यहां एक शिक्षक आत्मा को वर्तमान जीवन और भविष्य के जीवन दोनों में वास्तविक और स्थायी मानता है। वहीं, एक अन्य शिक्षक आत्मा को इस संसार के संदर्भ में वास्तविक और स्थायी मानता है, लेकिन भविष्य के किसी भी अस्तित्व के संदर्भ में ऐसा नहीं कहता। अंत में, एक शिक्षक इसे न तो वर्तमान जीवन और न ही भविष्य के जीवन के संदर्भ में वास्तविक और स्थायी मानता है। यहां प्रथम कोटि के शिक्षक से तात्पर्य उस शिक्षक से है जो शाश्वतवाद के सिद्धांत का समर्थन करता है।
दूसरे दर्जे के शिक्षक से तात्पर्य ऐसे शिक्षक से है जो विनाशवाद के सिद्धांत का समर्थन करता है।
अंत में, तीसरे क्रम के शिक्षक से तात्पर्य उस शिक्षक से है जो पूर्णतः प्रबुद्ध हो।
ये अन्य तीन शिक्षक हैं।
तीन के आधार पर समूहीकरण का विवरण यहीं समाप्त होता है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 4

मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय IV: मानव प्रकारों का चार भागों में विभाजन

1. किस प्रकार का व्यक्ति अच्छा पुरुष नहीं होता?
यहां एक व्यक्ति जीवन का नाश करने वाला, बिना माँगे वस्तुएँ लेने वाला, कामुक इच्छाओं में लिप्त रहने वाला, झूठा और मादक पेय पदार्थों का सेवन करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति ही 'अच्छा मनुष्य नहीं' कहलाता है।

'बुरे आदमी' से भी ज्यादा 'बुरा आदमी' किस तरह का व्यक्ति होता है?
यहां एक व्यक्ति स्वयं जीवन का विनाशक है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाता है; वह स्वयं बिना हक के चीजें लेता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं कामुक इच्छाओं के मामले में दुराचार करता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाता है; वह स्वयं झूठ बोलता है और दूसरों को भी झूठ बोलने के लिए उकसाता है; वह स्वयं मादक पेय पदार्थों का सेवन करता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाता है। ऐसा व्यक्ति 'बुरे आदमी' से भी अधिक 'बुरा आदमी' कहलाता है।

एक अच्छा इंसान किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां जो व्यक्ति जीवन का विनाश करने से परहेज करता है, बिना दी हुई वस्तु लेने से परहेज करता है, इंद्रिय सुखों के मामले में दुराचार से परहेज करता है, और अंत में, मादक पेय पदार्थों के सेवन से परहेज करता है, उसे ही अच्छा व्यक्ति कहा जाता है।

एक अच्छे इंसान से बेहतर इंसान कौन हो सकता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो स्वयं जीवन का विनाश करने से परहेज करता है, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं बिना दी हुई वस्तुएँ लेने से परहेज करता है, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं इंद्रिय सुखों में लिप्त होने से परहेज करता है, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं झूठ बोलने से परहेज करता है, और दूसरों को

भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं मादक पेय पदार्थों के सेवन से परहेज करता है, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे व्यक्ति को भले व्यक्ति से भी श्रेष्ठ कहा जाता है।

2. दुष्ट व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक व्यक्ति जीवन का संहारक, दूसरों की दी हुई वस्तुएँ लेने वाला, इंद्रिय सुखों में लिप्त, झूठा, निंदक, कठोर शब्द बोलने वाला, चुगलखोर, लालची, द्वेषपूर्ण विचारों वाला और झूठे सिद्धांतों का समर्थक है। ऐसे व्यक्ति को दुष्ट कहा जाता है।

दुष्टों से भी अधिक दुष्ट कौन हो सकता है?

यहां एक व्यक्ति स्वयं जीवन का विनाश करते हुए दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाता है; जो वस्तुएँ उसे नहीं मिलीं, उन्हें वह स्वयं ग्रहण करके दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाता है; जो स्वयं कामुक सुखों में लिप्त होकर दूसरों को भी ऐसा करने के लिए उकसाता है; जो स्वयं झूठ बोलता है, वह दूसरों को भी झूठ बोलने के लिए उकसाता है; जो स्वयं निंदा करता है, वह दूसरों को भी निंदा करने के लिए उकसाता है; जो स्वयं कठोर भाषा का प्रयोग करता है, वह दूसरों को भी कठोर भाषा का प्रयोग करने के लिए उकसाता है; जो स्वयं चुगलखोर है, वह दूसरों को भी चुगलखोरी के लिए उकसाता है; जो स्वयं लालची है, वह दूसरों को भी लालची होने के लिए उकसाता है; जो स्वयं द्वेषपूर्ण स्वभाव का है, वह दूसरों को भी द्वेषपूर्ण होने के लिए उकसाता है; जो स्वयं गलत विचारों का समर्थक है, वह दूसरों को भी ऐसे विचार रखने के लिए उकसाता है। ऐसे व्यक्ति को दुष्टों से भी अधिक दुष्ट कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति सौम्य स्वभाव का होता है?
यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो जीव-जंतुओं की हत्या करने से परहेज करता है, बिना माँगे कुछ लेने से परहेज करता है, इंद्रिय सुखों में लिप्त होने से परहेज करता है, झूठ बोलने से परहेज करता है, निंदात्मक भाषा का प्रयोग करने से परहेज करता है, चुगली करने से परहेज करता है, लोभी या द्वेषी नहीं होता, और सही विचारों का समर्थक होता है। ऐसे व्यक्ति को सौम्य स्वभाव का कहा जाता है।

मनभावन स्वभाव वाले व्यक्ति से अधिक मनभावन और कौन हो सकता है?

यहां एक व्यक्ति स्वयं जीवन का विनाश करने से परहेज करता है और दूसरों को भी हत्या न करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं अनचाही वस्तुओं को लेने से परहेज करता है और दूसरों को भी अनचाही वस्तुओं को लेने से परहेज करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं इंद्रिय सुखों में लिप्त होने से परहेज करता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है... और दूसरों को सही मार्ग की ओर प्रेरित करता है। ऐसा व्यक्ति स्वभाव से भी अधिक सुंदर होता है।

3. दुष्ट स्वभाव का व्यक्ति किस प्रकार का होता है? दुष्ट व्यक्ति से भी अधिक दुष्ट स्वभाव का व्यक्ति किस प्रकार का होता है? सुंदर स्वभाव का व्यक्ति किस प्रकार का होता है? सुंदर स्वभाव के व्यक्ति से भी अधिक सुंदर स्वभाव का व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
उत्तर 2 के अनुसार।

4. किस प्रकार का व्यक्ति दोषी होता है?
यहां एक व्यक्ति ने निंदनीय कर्म, वाणी और विचार किए हैं। ऐसा व्यक्ति ही निंदनीय कहलाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति अत्यधिक निंदनीय होता है?
यहां एक व्यक्ति के कर्म, वाणी और विचार निंदनीय अधिक हो गए हैं और निर्दोष कर्म, वाणी और विचार कम। ऐसे व्यक्ति को ही अत्यंत निंदनीय कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति कम दोषी होता है?
यहां एक व्यक्ति का आचरण, वाणी और विचार अधिक निंदनीय और आचरण, वाणी और विचार कम हो गया है। ऐसे व्यक्ति को कम निंदनीय कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति निर्दोष होता है?
यहां एक व्यक्ति का आचरण, वाणी और विचार निष्कलंक हैं। ऐसे व्यक्ति को निष्कलंक कहा जाता है।

5. किस प्रकार का व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने में तेज होता है?

जो व्यक्ति सिद्धांत के प्रतिपादन के समय उसे समझ लेता है, उसे शीघ्रता से सीखने वाला कहा जाता है।

किस प्रकार के व्यक्ति व्याख्या के माध्यम से सीखते हैं?
जिस व्यक्ति को संक्षेप में कही गई बात के अर्थ का विस्तार से विश्लेषण करने पर सिद्धांत की समझ आती है।

जो व्यक्ति बहकावे में आ सकता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
जो व्यक्ति पाठ करने, प्रश्न पूछने, गंभीर ध्यान देने और प्यारे मित्रों की सेवा करने, उनसे संबंध बनाने और उनकी सेवा करने से सिद्धांत को समझ पाता है, वही व्यक्ति मार्गदर्शित हो सकता है।

वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जिसके लिए शब्द ही सर्वोपरि होते हैं?
जिस व्यक्ति को इस जीवन में सिद्धांतों की समझ नहीं आती, चाहे वह कितना भी सुने, बोले, याद रखे या सुनाए, उसे ऐसा व्यक्ति कहा जाता है जिसके लिए शब्द ही सर्वोपरि है।

6. वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जो गुस्सा तो करता है लेकिन तुरंत जवाब नहीं देता?
यहां एक व्यक्ति प्रश्न पूछे जाने पर सही उत्तर तो देता है, लेकिन तुरंत नहीं। ऐसे व्यक्ति को वह कहा जाता है जो तुरंत प्रतिक्रिया तो नहीं देता, लेकिन गुस्सा जरूर करता है।

वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जो तुरंत जवाब तो देता है लेकिन उचित जवाब नहीं देता?
यहां एक व्यक्ति प्रश्न पूछे जाने पर तुरंत उत्तर देता है, लेकिन उचित उत्तर नहीं देता। ऐसे व्यक्ति को त्वरित उत्तर देने वाला, लेकिन अनुपयुक्त उत्तर देने वाला कहा जाता है।
जो व्यक्ति तुरंत और सटीक जवाब देता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति जो प्रश्न पूछे जाने पर तुरंत और सटीक उत्तर देता है, उसे सटीक और त्वरित उत्तर देने वाला व्यक्ति कहा जाता है।

वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जो न तो उचित उत्तर देता है और न ही शीघ्र उत्तर देता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति जो किसी प्रश्न का उत्तर न तो शीघ्रता से देता है और न ही उचित तरीके से, उसे ऐसा व्यक्ति कहा जाता है जो न तो उचित उत्तर देता है और न ही तुरंत जवाब देता है।

7. धम्म के चार प्रचारक कौन हैं?
यहां एक धार्मिक शिक्षक बहुत कम और अप्रासंगिक बातें बोलता है, और श्रोतागण यह तय करने में सक्षम नहीं हो पाते कि क्या प्रासंगिक है और क्या नहीं। ऐसे शिक्षक को, इस प्रकार के श्रोतागण में, 'मानदंड' का उपदेशक माना जाता है।
यहां एक विशिष्ट धार्मिक शिक्षक कम बोलता है और जो प्रासंगिक होता है वही बोलता है, और सभा को यह निर्णय करने का अधिकार है कि क्या प्रासंगिक है और क्या नहीं। ऐसे शिक्षक को, ऐसी सभा में, 'मानदंड' का उपदेशक माना जाता है।
यहां एक धार्मिक शिक्षक बहुत कुछ बोलता है, जो कि अप्रासंगिक होता है, और श्रोतागण यह समझने में असमर्थ होते हैं कि क्या प्रासंगिक है और क्या नहीं। ऐसे व्यक्ति को, इस प्रकार के श्रोतागण में, 'मानदंड' का उपदेशक माना जाता है।
यहाँ भी एक धार्मिक शिक्षक बहुत कुछ बोलता है और प्रासंगिक बातें कहता है, और सभा को यह निर्णय करने की क्षमता है कि क्या प्रासंगिक है और क्या नहीं। इस प्रकार का शिक्षक, इस सभा में, उपदेशक के रूप में कार्य करता है।
'नॉर्म।' ये चार धार्मिक उपदेशक हैं।

8. बादल के समान चार प्रकार के व्यक्ति कौन-कौन से हैं?
बादल चार प्रकार के होते हैं: वो जो गरजते हैं लेकिन वर्षा नहीं करते, वो जो वर्षा करते हैं लेकिन गरजते नहीं, वो जो गरजते और वर्षा दोनों करते हैं, और वो जो न तो गरजते हैं और न ही वर्षा करते हैं। इसी प्रकार इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं जो इन चार प्रकार के बादलों के समान हैं। और वे कौन हैं? वो जो गरजते हैं लेकिन वर्षा नहीं करते, वो जो वर्षा करते हैं लेकिन गरजते नहीं, वो जो वर्षा और गरज दोनों करते हैं, और वो जो न तो गरजते हैं और न ही वर्षा करते हैं।

वह कैसा व्यक्ति है जो गरजता तो है लेकिन बारिश नहीं करता?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने कथनी और करनी में एकरूपता नहीं दिखाता। ऐसे व्यक्ति को गरजने वाला लेकिन बारिश न करने वाला कहा जाता है। ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है, जैसे गरजने वाला बादल बारिश न करे।

वह व्यक्ति किस प्रकार का है जो बारिश तो करवाता है लेकिन बिजली नहीं कड़कता?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो कार्य तो करता है लेकिन बोलता नहीं। ऐसे व्यक्ति को 'बारिश करने वाला लेकिन गरजने वाला नहीं' कहा जाता है। जैसे बादल बारिश करते हैं लेकिन गरजते नहीं, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जो बारिश के साथ-साथ बिजली भी गरजता है?
यहां एक खास व्यक्ति बोलता और काम करता है। ऐसे व्यक्ति को गर्जना करने वाला और वर्षा लाने वाला कहा जाता है। जैसे बादल गर्जना और वर्षा लाते हैं, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

वह कैसा व्यक्ति है जो न तो गरजता है और न ही बारिश करता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो न बोलता है और न ही कार्य करता है। ऐसे व्यक्ति को गरजने वाला और न ही वर्षा करने वाला कहा जाता है। जैसे बादल न तो गरजता है और न ही वर्षा करता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।
ये चार प्रकार के पुरुष हैं जो इस संसार में बादल के समान पाए जाते हैं।

9. ऐसे कौन से चार प्रकार के व्यक्ति हैं जिनकी तुलना चूहों से की जा सकती है?
चूहे चार प्रकार के होते हैं - वे जो अपने बिल खोदते हैं लेकिन उनमें नहीं रहते; वे जो बिलों में रहते हैं लेकिन उन्हें स्वयं नहीं खोदते; वे जो अपने खोदे हुए बिलों में रहते हैं; वे जो न तो अपने लिए बिल खोदते हैं और न ही उनमें रहते हैं।
इसी प्रकार इस संसार में चार प्रकार के ऐसे व्यक्ति पाए जाते हैं जिनकी तुलना चूहों से की जा सकती है। वे चारों कौन से हैं?
वे जिन्होंने गड्ढे खोदे हैं लेकिन उनमें रहते नहीं। वे जो रहते हैं लेकिन गड्ढे नहीं खोदते। वे जो गड्ढे खोदते भी हैं और रहते भी हैं। वे जो न तो गड्ढे खोदते हैं और न ही रहते हैं।

वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जो गड्ढा तो खोदता है लेकिन उसमें रहता नहीं है?
यहां एक व्यक्ति सुत्त, गेय्या, व्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अभिधम्म, वेदल्ल आदि सिद्धांतों में पारंगत तो है, पर फिर भी वह दुख, दुख के कारण, दुख के निवारण और दुख निवारण के मार्ग को सही मायने में नहीं समझ पाता। ऐसा व्यक्ति गड्ढा खोदने वाला तो है, लेकिन उसमें रहने वाला नहीं। जैसे चूहा गड्ढा खोदकर उसमें रहता नहीं, वैसे ही यह व्यक्ति है।

वह व्यक्ति किस प्रकार का है जो गड्ढे में रहता है लेकिन उसे खोदता नहीं है?
यहां एक व्यक्ति सूत्रों आदि से युक्त किसी सिद्धांत में पारंगत नहीं होता, परन्तु वह दुख, दुख के कारण, दुख के निवारण और दुख निवारण के मार्ग को सत्यतः भलीभांति जान लेता है। ऐसा व्यक्ति केवल रहने वाला होता है, गड्ढा खोदने वाला नहीं। जैसे चूहा बिना खोदे गड्ढे में रहता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति है।

एक ऐसा व्यक्ति जो खुदाई करने के साथ-साथ रहने का काम भी करता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक व्यक्ति सूत्र आदि के सिद्धांतों का अध्ययन करता है और दुख आदि का वास्तविक अनुभव प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति खोदने वाला और उसमें रहने वाला दोनों होता है। जैसे चूहा अपना बिल खोदकर उसमें रहता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो न तो खुदाई करने वाला है और न ही रहने वाला?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो न तो सिद्धांत सीखता है, न ही दुख आदि का वास्तविक अनुभव करता है। ऐसा व्यक्ति न तो गड्ढा खोदने वाला है और न ही उसमें रहने वाला। जैसे चूहा न तो गड्ढा खोदता है और न ही उसमें रहता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति है।
इस संसार में रहने वाले चार प्रकार के व्यक्ति चूहों के समान हैं।

10. आम के समान चार प्रकार के व्यक्ति कौन से हैं?
चार प्रकार के आम होते हैं - कच्चे लेकिन पके रंग के; पके रंग के लेकिन कच्चे; कच्चे और कच्चे रंग के; पके और पके रंग के। इसी प्रकार, इस संसार में चार ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी तुलना आम से की जा सकती है। वे कौन से हैं? एक कच्चा लेकिन पके रंग का; एक पका लेकिन कच्चे रंग का; एक कच्चा और कच्चे रंग का; एक पका और पके रंग का।

कोई व्यक्ति अपरिपक्व होते हुए भी पके हुए रंग का कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति आगे-पीछे चलते समय, इधर-उधर देखते समय, बाहें फैलाते या मोड़ते समय, और यहां तक कि ऊपरी वस्त्र या साधारण वस्त्र पहने और भिक्षापात्र पकड़े हुए भी सुंदर दिखाई देता है। वह वास्तव में दुख आदि को नहीं समझता। वह दुख की ओर ले जाने वाले मार्ग को भी नहीं समझता। ऐसा व्यक्ति अपरिपक्व होते हुए भी पका हुआ दिखता है। जैसे एक आम कच्चा होते हुए भी पका हुआ दिखता है, वैसे ही यह व्यक्ति है।

कोई व्यक्ति परिपक्व होते हुए भी अपरिपक्व रंग का कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति आगे-पीछे चलते समय, इधर-उधर देखते समय, बाहें फैलाते या मोड़ते समय, और यहां तक कि ऊपरी वस्त्र या साधारण वस्त्र पहने और भिक्षापात्र पकड़े हुए भी सुंदर नहीं दिखता, बल्कि वह वास्तव में दुःख को अनुभव करता है। ऐसा व्यक्ति परिपक्व होते हुए भी अपरिपक्व दिखता है। जैसे एक आम पका हुआ होते हुए भी अपरिपक्व दिखता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

कोई व्यक्ति अपरिपक्व और अपरिपक्व रंग का कैसे हो सकता है?
यहां किसी व्यक्ति का आगे-पीछे चलना-फिरना, भिक्षापात्र थामना आदि सुशोभनीय है। वह वास्तव में दुःख आदि को नहीं समझता। जैसे कच्चा और हरा आम होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

परिपक्व और परिपक्व रंग वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां किसी व्यक्ति की आगे-पीछे की गतिविधियां, भिक्षापात्र धारण करना आदि सभी सुंदर हैं। वह वास्तव में दुख आदि को अनुभव करता है। इस प्रकार वह व्यक्ति परिपक्व और सजीव है।

और पके हुए रंग का भी। जैसे एक आम पका हुआ और पके हुए रंग का होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।
इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति विद्यमान हैं जिनकी तुलना आम से की जा सकती है।

11. घड़े के समान चार प्रकार के व्यक्ति कौन से हैं? चार प्रकार के घड़े होते हैं - एक जो खाली है लेकिन अच्छी तरह से ढका हुआ है; एक जो भरा हुआ है लेकिन खुला हुआ है; एक जो खाली भी है और खुला हुआ है; एक जो भरा हुआ भी है और ढका हुआ है। इसी प्रकार, इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति विद्यमान हैं जिनकी तुलना घड़े से की जा सकती है।

वे चार क्या हैं? खाली लेकिन ढका हुआ; भरा हुआ और
खुला हुआ; खाली और साथ ही खुला हुआ; भरा हुआ और साथ ही ढका हुआ।

कोई व्यक्ति खाली होते हुए भी ढका हुआ कैसे हो सकता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी आगे-पीछे की गतिविधियां, आदि, अत्यंत सुंदर हैं; वह वास्तव में दुःख को नहीं समझता। ऐसा व्यक्ति खोखला है, पर आवरण से ढका हुआ है। जैसे घड़ा खोखला होता है, पर आवरण से ढका हुआ होता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

किस प्रकार का व्यक्ति पूर्ण और नग्न होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी आगे-पीछे की गतिविधियां, आदि, सुशोभनीय नहीं हैं (iv, 10 b)। वह वास्तव में दुख को उसके वास्तविक रूप में अनुभव करता है, इत्यादि। इस प्रकार वह पूर्ण और खुला हुआ है। जैसे घड़ा भरा हुआ और खुला हुआ है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

किस प्रकार का व्यक्ति खोखला और साथ ही खुला हुआ होता है?
यहां एक ऐसे व्यक्ति की बात हो रही है जिसकी आगे-पीछे की गतिविधियां न तो सुंदर हैं और न ही वह वास्तव में दुख आदि को महसूस करता है। ऐसा व्यक्ति खाली और खुला हुआ है। जैसे घड़ा खाली और खुला होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

किस प्रकार का व्यक्ति पूर्ण होने के साथ-साथ ढका हुआ भी होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी आगे-पीछे की गतिविधियां, आदि, अत्यंत सुंदर हैं। वह वास्तव में दुःख को उसके वास्तविक स्वरूप में अनुभव करता है। इस प्रकार, एक व्यक्ति पूर्ण होने के साथ-साथ ढका हुआ भी होता है, जैसे एक घड़ा भरा होने के साथ-साथ ढका हुआ भी होता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है।
इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति विद्यमान हैं जिनकी तुलना एक घड़े से की जा सकती है।

12. तुलनीय चार प्रकार के व्यक्ति कौन से हैं?
पानी के कुंड में?
चार प्रकार के तालाब: उथले लेकिन गहरे प्रतीत होने वाले; गहरे लेकिन उथले प्रतीत होने वाले; उथले और दिखने में उथले; अंत में, गहरे और दिखने में गहरे।
इसी प्रकार इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति विद्यमान हैं जिनकी तुलना तालाबों से की जा सकती है।

चार प्रकार क्या हैं? - उथला लेकिन गहरा प्रतीत होने वाला; गहरा लेकिन उथला प्रतीत होने वाला; उथला और उथला प्रतीत होने वाला; अंत में, गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला।
वह व्यक्ति किस प्रकार का होता है जो सतही तो होता है लेकिन अंदर से गहरा प्रतीत होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी आगे-पीछे की गतिविधियां आदि [देखें 4-10 (ए.)] वास्तव में दुख आदि को नहीं समझतीं। ऐसा व्यक्ति सतही होता है पर गहरा प्रतीत होता है। जैसे तालाब उथला होता है पर गहरा प्रतीत होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है।
किस तरह का व्यक्ति गहरा होता है लेकिन सतही प्रतीत होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी आगे-पीछे की गतिविधियां, आदि, वास्तव में दुख आदि को महसूस करती हैं। ऐसा व्यक्ति गहरा होता है लेकिन सतही प्रतीत होता है। जैसे तालाब गहरा होता है लेकिन उथला प्रतीत होता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है।
किस प्रकार का व्यक्ति सतही होता है और सतही प्रतीत होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी चाल-ढाल, भिक्षापात्र धारण करने का तरीका, सुशोभनीय नहीं है, और जो दु:ख को भी नहीं समझता। ऐसा व्यक्ति सतही है और सतही प्रतीत होता है। जैसे एक छोटा तालाब उथला होता है और उथला प्रतीत होता है, वैसे ही यह व्यक्ति है।
किस प्रकार का व्यक्ति गंभीर होता है और गंभीर प्रतीत होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी आगे-पीछे की चाल-ढाल, भिक्षापात्र धारण करना आदि सभी कार्य सुंदर हैं, साथ ही वह दुख को उसके वास्तविक स्वरूप में भी भलीभांति जानता है। वह यह भलीभांति जानता है कि यही दुख के निवारण का मार्ग है। ऐसा व्यक्ति गहरा है और गहरा प्रतीत भी होता है। जैसे तालाब गहरा होता है और गहरा प्रतीत होता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी गहरा है।

13. वे चार व्यक्ति कौन से हैं जिनकी तुलना बैल से की जा सकती है? बैल चार प्रकार के होते हैं: - अपने झुंड के लिए उपद्रवी, परन्तु दूसरे झुंड के लिए नहीं; दूसरे झुंड के लिए उपद्रवी, परन्तु अपने झुंड के लिए नहीं; अपने और दूसरे दोनों झुंडों के लिए उपद्रवी; न अपने झुंड के लिए उपद्रवी, न दूसरे झुंड के लिए। इसी प्रकार, संसार में चार प्रकार के व्यक्ति मौजूद हैं जिनकी तुलना बैल से की जा सकती है। वे चार क्या हैं? मंडली में उपद्रवी लेकिन बाहर नहीं; मंडली के बाहर उपद्रवी लेकिन अंदर नहीं; मंडली के अंदर और बाहर दोनों जगह उपद्रवी; न तो अपनी मंडली में उपद्रवी और न ही किसी दूसरी मंडली में उपद्रवी।

कोई व्यक्ति अपनी मंडली में उपद्रवी कैसे हो सकता है लेकिन उसके बाहर नहीं?
यहां एक व्यक्ति अपनी मंडली में तो उपद्रव मचाता है, लेकिन दूसरी मंडली में नहीं। ऐसा व्यक्ति अपनी मंडली में उपद्रवी होता है, लेकिन दूसरी में नहीं। जैसे एक बैल अपने झुंड में उपद्रवी होता है, लेकिन दूसरे झुंड में नहीं, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

कोई व्यक्ति बाहर तो उपद्रवी हो सकता है, लेकिन अपनी ही मंडली में नहीं?
यहां एक व्यक्ति दूसरे समुदाय में उपद्रव मचाता है, लेकिन अपने समुदाय में नहीं। ऐसा व्यक्ति बाहर तो उपद्रवी है, लेकिन अपने समुदाय में नहीं। जैसे वह बैल बाहर तो उपद्रवी है, लेकिन अपने झुंड में नहीं, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है।

कोई व्यक्ति अपनी मंडली के अंदर और बाहर दोनों जगह उपद्रवी कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति अपने समुदाय के भीतर और बाहर दोनों जगह उपद्रव पैदा करता है। ऐसा व्यक्ति अपने समुदाय के भीतर और बाहर दोनों जगह उपद्रव का कारण बनता है। जिस प्रकार वह बैल अपने झुंड के भीतर और बाहर दोनों जगह उपद्रव करता है, ठीक उसी प्रकार यह व्यक्ति भी है।

कोई व्यक्ति न तो अपनी मंडली के लिए और न ही दूसरी मंडली के लिए उपद्रवी कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति न तो अपनी मंडली में और न ही दूसरी मंडली में उपद्रव करता है। ऐसे व्यक्ति को न तो अपनी मंडली के लिए और न ही दूसरी मंडली के लिए विपत्तिकारी कहा जाता है। जिस प्रकार वह बैल न तो अपने झुंड के लिए और न ही दूसरे झुंड के लिए विपत्तिकारी है, ठीक उसी प्रकार यह व्यक्ति भी है।
ये चार प्रकार के व्यक्ति हैं, जो इस संसार में रहते हैं और अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं, जिनकी तुलना बैल से की जा सकती है।

14. सर्प के समान चार प्रकार के व्यक्ति कौन-कौन से हैं?
चार प्रकार के सांप:- शीघ्र विषैला लेकिन कम तीव्र विषैला; तीव्र विषैला लेकिन शीघ्र विषैला नहीं; शीघ्र और तीव्र विषैला दोनों; न शीघ्र विषैला और न तीव्र विषैला।
इसी प्रकार, इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति विद्यमान हैं, जिनकी तुलना सर्प से की जा सकती है। वे चार कौन से हैं? शीघ्र लेकिन प्रबल विष वाले व्यक्ति; प्रबल लेकिन न शीघ्र विष वाले व्यक्ति; शीघ्र और प्रबल विष वाले व्यक्ति; और न शीघ्र और न प्रबल विष वाले व्यक्ति।

किस प्रकार का व्यक्ति ऐसा होता है जिसका जहर जल्दी असर करता है लेकिन ज्यादा तीव्र नहीं होता?
यहां एक व्यक्ति बार-बार क्रोधित होता है, लेकिन उसका क्रोध अधिक देर तक नहीं टिकता। ऐसा व्यक्ति शीघ्र विषाणु तो है, लेकिन तीव्र विषाणु नहीं। जिस प्रकार उस सर्प का विष शीघ्र विषाणु तो है, लेकिन तीव्र विषाणु नहीं, ठीक उसी प्रकार यह व्यक्ति भी है।

किस प्रकार का व्यक्ति शक्तिशाली होता है लेकिन उसका विष शीघ्र प्रकट नहीं होता?
यहां एक खास तरह का व्यक्ति बार-बार क्रोधित नहीं होता, लेकिन जब वह क्रोधित होता है तो उसका क्रोध काफी लंबे समय तक बना रहता है। जिस प्रकार उस सांप का विष तीव्र होता है लेकिन तुरंत असर नहीं करता, ठीक उसी प्रकार यह व्यक्ति भी है।

किस प्रकार का व्यक्ति त्वरित और तीव्र विष उत्पन्न कर सकता है?
यहां एक व्यक्ति बार-बार क्रोधित होता है, उसका क्रोध लंबे समय तक बना रहता है; ऐसा व्यक्ति शीघ्र और तीव्र विष का जनक होता है। जिस प्रकार उस सर्प का विष शीघ्र और तीव्र होता है, ठीक उसी प्रकार यह व्यक्ति भी है।

ऐसा व्यक्ति किस प्रकार का होता है जिसका विष न तो शीघ्र होता है और न ही तीव्र?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो न तो बार-बार क्रोधित होता है और न ही उसका क्रोध लंबे समय तक बना रहता है। ऐसा व्यक्ति न तो शीघ्र विषैला होता है और न ही प्रचंड विषैला। जिस प्रकार सर्प का विष न तो शीघ्र विषैला होता है और न ही प्रचंड विषैला, ठीक उसी प्रकार यह व्यक्ति भी है।
इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति विद्यमान हैं, जिनकी तुलना सर्प से की जा सकती है।

15. जो व्यक्ति किसी अयोग्य व्यक्ति की प्रशंसा करता है, वह उसके स्वभाव की जांच-पड़ताल किए बिना कैसे प्रशंसा का पात्र हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति विधर्मियों या उनके शिष्यों की प्रशंसा करता है, जिनका आचरण कुटिल या अनुचित है, और कहता है कि उनका आचरण उत्तम और उचित है। ऐसा व्यक्ति प्रशंसा के अयोग्य व्यक्ति की प्रशंसा बिना उसके स्वभाव की जांच-परख किए करता है।

जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की निंदा करता है, वह बिना उसकी प्रकृति की जांच-पड़ताल किए प्रशंसा के योग्य कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति उन बुद्धों और उनके शिष्यों की निंदा करता है जो वास्तव में अपने आचरण में सुव्यवस्थित हैं, यह कहते हुए कि उनका आचरण गलत और कुप्रबंधित है। ऐसा व्यक्ति प्रशंसा के योग्य व्यक्ति की निंदा बिना उसके स्वभाव की जांच-परख किए करता है।

जो व्यक्ति किसी असंतोषजनक चीज की जांच-पड़ताल किए बिना ही उससे संतुष्टि व्यक्त करता है, वह व्यक्ति कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति गलत और बुरे मार्ग में संतुष्टि पाता है, यह कहते हुए कि यही अच्छा मार्ग है, यही सही मार्ग है। ऐसा व्यक्ति वह है जो बिना जांच-पड़ताल किए किसी असंतोषजनक चीज में संतुष्टि पाता है।

जो व्यक्ति बिना पूछताछ किए, संतोषजनक चीज से असंतुष्टि व्यक्त करता है, वह कैसा व्यक्ति है?
यहां एक व्यक्ति अच्छे और सही मार्ग में भी असंतोष पाता है, यह कहते हुए कि यह बुरा मार्ग है, यह गलत मार्ग है। ऐसा व्यक्ति वह है जो असंतोष पाता है, इत्यादि।

16. किसी व्यक्ति के स्वभाव की जांच-पड़ताल करने के बाद, कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति की निंदा कैसे कर सकता है जो प्रशंसा के योग्य नहीं है?
यहां एक व्यक्ति विधर्मियों या उनके शिष्यों की निंदा करते हुए उचित ही कह रहा है, जो आचरण के मामले में गलत और कुप्रथाओं का पालन करते हैं, और उनका आचरण कुरूप और अनुचित है। इस प्रकार, कोई व्यक्ति किसी अयोग्य व्यक्ति की निंदा करते हुए उसके स्वभाव की जांच-परख कर रहा है।

किसी प्रशंसनीय व्यक्ति के स्वभाव की जांच-पड़ताल और छानबीन करने के बाद कोई व्यक्ति उसकी प्रशंसा में वक्ता कैसे बन सकता है?
यहां एक व्यक्ति बुद्धों और उनके शिष्यों की प्रशंसा में उचित रूप से बोलता है, जो आचरण में उत्तम और पूर्ण रूप से अनुशासित हैं, और कहता है कि उनका आचरण उत्तम और पूर्ण है। ऐसा व्यक्ति किसी प्रशंसनीय व्यक्ति की प्रशंसा में बोलने वाला वक्ता है, जिसने (उसके स्वभाव की) गहन जांच-पड़ताल की है।

जो व्यक्ति किसी असंतोषजनक चीज के बाद भी असंतुष्टि पाता है, वह ऐसा व्यक्ति कैसे हो सकता है?

यहां एक व्यक्ति गलत मार्ग पर चलकर असंतोष व्यक्त करता है और कहता है कि यह बुरा मार्ग है, यह गलत मार्ग है। ऐसा व्यक्ति ही असंतोष व्यक्त करने वाला कहलाता है।

वह व्यक्ति कैसा होता है जो किसी चीज की जांच-पड़ताल और गहन छानबीन करने के बाद उसमें संतुष्टि पाता है?
यहां एक व्यक्ति अच्छे और सही मार्ग में संतुष्टि पाता है, और कहता है, यही अच्छा मार्ग है, यही सही मार्ग है। ऐसा व्यक्ति वह है जो संतुष्टि पाने के बाद किसी संतोषजनक चीज में संतुष्टि पाता है, इत्यादि।

17. जो व्यक्ति किसी अयोग्य व्यक्ति की निंदा करता है, वह प्रशंसा का पात्र कैसे हो सकता है? वह व्यक्ति सही समय पर उसके बारे में सत्य और सत्य बात कहता है, परन्तु उसी प्रकार प्रशंसनीय बातों की प्रशंसा नहीं करता।
यहां, जब किसी व्यक्ति के बारे में प्रशंसनीय और निंदनीय दोनों बातें हों, तो व्यक्ति निंदनीय बातों के बारे में सही समय पर सत्य और उचित कथन करता है, लेकिन प्रशंसनीय बातों के बारे में वह ऐसा नहीं करता। इसी प्रकार, एक व्यक्ति किसी अशोभनीय व्यक्ति की निंदा करते समय सही समय पर सत्य और उचित कथन करता है, लेकिन प्रशंसनीय बातों की प्रशंसा उसी प्रकार नहीं करता।

कोई व्यक्ति किसी प्रशंसा के योग्य व्यक्ति की प्रशंसा कैसे कर सकता है, उसके बारे में सही समय पर सत्य और उचित बातें कैसे व्यक्त कर सकता है, लेकिन उसी तरह किसी ऐसे व्यक्ति की निंदा क्यों नहीं कर सकता जो प्रशंसा के योग्य नहीं है?
यहां, जब किसी व्यक्ति के बारे में कुछ प्रशंसनीय और कुछ निंदनीय बातें हों, तो व्यक्ति प्रशंसनीय बातों के बारे में, सत्य और उचित समय पर सही बात कहते हुए, बोलता है, लेकिन निंदनीय बातों के बारे में उसी तरह नहीं बोलता। इस प्रकार, एक व्यक्ति किसी योग्य व्यक्ति की प्रशंसा करता है।
प्रशंसा करते समय, सही समय पर उसके बारे में जो सत्य और उचित है उसे व्यक्त करना चाहिए, लेकिन उसी तरह से जो प्रशंसा के योग्य नहीं है उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए।

कोई व्यक्ति किस प्रकार किसी प्रशंसा के योग्य न होने वाले व्यक्ति की निंदा करता है और किसी प्रशंसनीय व्यक्ति की प्रशंसा करता है, और सही समय पर सत्य और उचित बात कहता है?
यहां, जब किसी व्यक्ति के बारे में प्रशंसनीय और निंदनीय दोनों बातें हों, तो व्यक्ति प्रशंसनीय और निंदनीय दोनों बातों के बारे में बोलता है, सही समय पर सत्य और सत्य को व्यक्त करता है, और पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने के उचित समय से अवगत रहता है। इस प्रकार, व्यक्ति निंदनीय व्यक्ति की निंदा करता है और प्रशंसनीय व्यक्ति की प्रशंसा करता है, सही समय पर सत्य और सत्य को व्यक्त करता है।

कोई व्यक्ति सही समय पर सत्य और सही बात कहते हुए, न तो प्रशंसा के अयोग्य व्यक्ति की निंदा कर सकता है और न ही प्रशंसा के योग्य व्यक्ति की प्रशंसा कर सकता है?
यहां, जब किसी व्यक्ति के बारे में प्रशंसनीय और निंदनीय दोनों बातें हों, तो व्यक्ति न तो प्रशंसनीय और न ही निंदनीय बातों के बारे में बोलता है, बल्कि सही समय पर सत्य और सत्य को व्यक्त करते हुए तटस्थ भाव बनाए रखता है। इस प्रकार, व्यक्ति न तो प्रशंसा के अयोग्य व्यक्ति की निंदा करता है और न ही प्रशंसा के योग्य व्यक्ति की प्रशंसा करता है, सही समय पर सही बात कहता है।

18. वह किस प्रकार का व्यक्ति है जो अपने परिश्रम के फल पर जीता है, न कि किसी पूर्व पुण्य कर्म पर?
यहां जिस व्यक्ति की आजीविका उसके वर्तमान प्रयासों (शाब्दिक रूप से विद्रोह), कोशिशों और परिश्रम से उत्पन्न होती है, न कि किसी पूर्व पुण्य के फल स्वरूप, उसे ऐसा व्यक्ति कहा जाता है जो अपने परिश्रम के फल पर जीता है, न कि किसी पूर्व पुण्य के फल पर।

वह कैसा व्यक्ति है जो महिलाओं की योग्यता के फल पर तो जीवन यापन करता है, लेकिन अपने परिश्रम के फल पर नहीं?
परनिम्मितवासवत्ती से लेकर उनसे ऊपर के सभी देवता:- ये अपने कर्मों के फल पर जीवन यापन करते हैं, न कि अपने परिश्रम के फल पर।

वह व्यक्ति किस प्रकार का है जो अपने परिश्रम के फल के साथ-साथ अपने गुणों के फल पर भी जीवन यापन करता है?
जिस व्यक्ति की जीविका उसके अपने परिश्रम, प्रयासों और कर्मों के साथ-साथ उसके गुणों से भी उत्पन्न होती है, वह व्यक्ति अपने परिश्रम और गुणों दोनों के फल पर ही जीवन यापन करता है।

ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो न तो अपने स्वयं के परिश्रम के फल पर और न ही अपने गुणों के फल पर जीवन यापन करता है?
नरक में कष्ट भोगने वाले व्यक्ति वे होते हैं जो न तो अपने स्वयं के प्रयासों के फल पर और न ही पुण्य कर्मों के फल पर जीवित रहते हैं।

19. कोई व्यक्ति अंधेरे में कैसे रहता है और अंधेरे की ओर कैसे प्रवृत्त होता है?
यहां एक व्यक्ति जो निम्न कुल के परिवार में जन्मा है, चाहे वह चांडाल हो, नेसादा हो, टोकरी बुनने वाला हो, रथ बनाने वाला हो या पुक्कुसा हो, गरीब, कुपोषित, तंगहाली में पला-बढ़ा, जहां भोजन मुश्किल से मिलता है, सांवला, बदसूरत, कुबड़ा, अनेक रोगों से ग्रस्त, अंधा, या टेढ़ा हाथ वाला, लंगड़ा या लकवाग्रस्त, जिसे न भोजन, न पेय, न वस्त्र, न वाहन, न माला, न इत्र, न मरहम, न बिस्तर, न घर, न प्रकाश; वह कर्म, वचन और विचार से पापी है, कर्म, वचन और विचार से पापी होने के कारण, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर दुख, विपत्ति और विपत्ति में पुनर्जन्म लेता है। इस प्रकार वह व्यक्ति अंधकार में रहता है और अंधकार की ओर अग्रसर होता है।

अंधेरे में रहने वाला व्यक्ति प्रकाश की ओर कैसे अग्रसर होता है?
यहां एक व्यक्ति जो निम्न कुल के परिवार में जन्मा है, चाहे वह चांडाल हो, नेसादा हो, टोकरी बुनने वाला हो, रथ बनाने वाला हो या पुक्कुसा हो, गरीब हो, कुपोषित हो, तंगहाली में पला-बढ़ा हो, जहां भोजन मुश्किल से मिलता हो, सांवला हो, कुरूप हो, कुबड़ा हो, अनेक रोगों से ग्रस्त हो, अंधा हो, या उसका हाथ टेढ़ा हो, लंगड़ा हो या लकवाग्रस्त हो, जिसे न भोजन मिलता हो, न पेय, न वस्त्र, न वाहन, न माला, न इत्र, न मरहम, न बिस्तर, न घर, न प्रकाश; वह वास्तव में, वचन और विचार से, सत्कारशील है। सत्कारशील होने के कारण, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर वह प्रकाशमय लोकों में सुखद भाग्य के लिए पुनर्जन्म लेता है। इस प्रकार अंधकार में रहने वाला व्यक्ति प्रकाश की ओर अग्रसर होता है।

जो व्यक्ति प्रकाश में होता है, वह अंधकार की ओर कैसे प्रवृत्त होता है?
यहां, जो व्यक्ति उच्च कोटि के परिवार में पुनर्जन्म लेता है, चाहे वह कुलीन परिवार हो, ब्राह्मण परिवार हो, या उच्च पदस्थ गृहस्थ परिवार हो, धनी हो, अपार धन का स्वामी हो, भोग-विलास की प्रचुर वस्तुओं का मालिक हो, सोने-चांदी का भंडार रखता हो, भोग-विलास के साधनों का भरपूर धन रखता हो, धन और अनाज का भंडार रखता हो, सुंदर, आकर्षक, उत्तम रंगत वाला हो, भोजन, पेय, वस्त्र, परिवहन के साधन, पुष्पमालाएं, इत्र और मलहम, बिस्तर, आवास और प्रकाश का प्राप्तकर्ता हो; वह वास्तव में कर्मठ है, अपने वचन और विचार से। कर्मठ होने के कारण, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर वह दु:ख, विपत्ति और विपत्ति में पुनर्जन्म लेता है। इस प्रकार, प्रकाश में रहने वाला व्यक्ति अंधकार की ओर अग्रसर होता है।
जो व्यक्ति प्रकाश में होता है, वह प्रकाश की ओर कैसे प्रवृत्त होता है?
यहां एक व्यक्ति जो उच्च कोटि के परिवार में पुनर्जन्म लेता है, चाहे वह कुलीन परिवार हो, ब्राह्मण परिवार हो, या उच्च पदस्थ गृहस्थ परिवार हो, धनी हो, अपार धन का स्वामी हो, भोग-विलास की प्रचुर वस्तुओं का स्वामी हो, सोने-चांदी का भंडार रखता हो, भोग-विलास के लिए पर्याप्त साधन रखता हो, धन और अनाज का भंडार रखता हो, सुंदर, आकर्षक, उत्तम रंगत वाला हो, भोजन, पेय, वस्त्र, परिवहन के साधन, पुष्पमालाएं, इत्र, मलहम, बिस्तर, आवास और प्रकाश का प्राप्तकर्ता हो; वह वास्तव में कर्ता है, वचन और विचार दोनों से, और कर्ता होने के कारण, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर प्रकाशमान लोकों में सुखमय भाग्य के लिए पुनर्जन्म लेता है। इस प्रकार प्रकाश में रहने वाला व्यक्ति प्रकाश की ओर अग्रसर होता है।

20. कोई व्यक्ति कैसे झुककर भी अप्रगतिशील रह सकता है? कोई व्यक्ति कैसे झुककर भी प्रगतिशील रह सकता है? कोई समृद्ध व्यक्ति कैसे अप्रगतिशील रह सकता है? कोई समृद्ध व्यक्ति कैसे प्रगतिशील रह सकता है?
ये चारों प्रकार क्रमशः उपरोक्त चारों प्रकारों के अनुरूप हैं।

21. वे चार व्यक्ति कौन हैं जिनकी तुलना वृक्षों से की जा सकती है?
वृक्षों के चार प्रकार इस प्रकार हैं - एक वृक्ष जो स्वयं कमजोर है लेकिन उसके चारों ओर मजबूत वृक्ष हैं; एक वृक्ष जो स्वयं मजबूत है लेकिन उसके चारों ओर कमजोर वृक्ष हैं; एक वृक्ष जो स्वयं कमजोर है और उसके चारों ओर कमजोर वृक्ष हैं; एक वृक्ष जो स्वयं मजबूत है और उसके चारों ओर मजबूत वृक्ष हैं।
इस संसार में चार प्रकार के व्यक्ति मौजूद हैं जिनकी तुलना क्रमशः वृक्षों की इन चार श्रेणियों से की जा सकती है - एक व्यक्ति जो स्वयं कमजोर है लेकिन बलवानों से घिरा हुआ है; एक व्यक्ति जो स्वयं बलवान है लेकिन कमजोरों से घिरा हुआ है; एक व्यक्ति जो स्वयं कमजोर है और कमजोरों से घिरा हुआ है; एक व्यक्ति जो स्वयं बलवान है और बलवानों से घिरा हुआ है।

जो व्यक्ति स्वयं कमजोर है, वह बलवानों से घिरा हुआ कैसे हो सकता है? यहाँ एक व्यक्ति दुष्ट और बुरे चरित्र का है, जबकि उसके साथी1 नैतिक और सुंदर स्वभाव के हैं। इस प्रकार, जो व्यक्ति स्वयं कमजोर है, वह बलवानों से घिरा हुआ है, ठीक उसी तरह जैसे ठीक उसी तरह जैसे कमजोर पेड़ के चारों ओर मजबूत पेड़ होते हैं।

एक बलवान व्यक्ति कमजोरों से घिरा हुआ कैसे रह सकता है?

यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो नैतिक और सुंदर स्वभाव का है, लेकिन उसके साथी अनैतिक और दुष्ट हैं। यह एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति है जो बलवान होते हुए भी दुर्बलों से घिरा हुआ है, ठीक उसी प्रकार जैसे एक बलवान वृक्ष दुर्बल वृक्षों से घिरा होता है।
जो व्यक्ति अनैतिक और दुष्ट है, उसके साथी भी वैसे ही हैं, ऐसा कैसे हो सकता है?
एक मजबूत व्यक्ति मजबूत लोगों से घिरा हुआ कैसे रह सकता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो स्वयं नैतिक और सौम्य स्वभाव का है, और उसके साथी भी वैसे ही हैं। इस प्रकार, बलवान व्यक्ति बलवानों से घिरा रहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे एक बलवान वृक्ष बलवान वृक्षों से घिरा रहता है।
ये चार व्यक्ति वृक्षों के समान हैं जो विद्यमान हैं।
यह दुनिया।

22. जो व्यक्ति बाहरी रूप से आकलन करता है और उसी से संतुष्ट रहता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति है?
यहां एक व्यक्ति किसी भौतिक वस्तु की ऊंचाई, चौड़ाई, आकार और परिष्करण का अवलोकन करके उसमें संतुष्टि पाता है। ऐसा व्यक्ति आकलन करने वाला आदि कहलाता है।
जो व्यक्ति दूसरों के शब्दों के आधार पर आकलन करता है और उनसे संतुष्ट हो जाता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति है?
यहां व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा, चापलूसी, स्तुति और तारीफों के आधार पर आस्था उत्पन्न करता है, और उन्हें ही निर्णय का मानदंड मानता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के शब्दों के आधार पर ही आकलन और सम्मान करता है।
जो व्यक्ति बाहरी सादगी के आधार पर आकलन करता है और उसे महत्व देता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति है?
यहां कोई व्यक्ति वस्त्रों, भिक्षापात्रों, पलंगों और चादरों की सादगी को देखकर या अनेक प्रकार की तपस्याओं का अवलोकन करके उनमें संतोष पाता है और उन्हें ही निर्णय का मानदंड मानता है। ऐसा व्यक्ति बाहरी तपस्या को ही आधार मानकर मूल्यांकन करता है और उसका सम्मान करता है।

जो व्यक्ति सही-गलत का आकलन करता है और उसे महत्व देता है, वह किस प्रकार का व्यक्ति है?
यहां एक व्यक्ति नैतिकता, ध्यान या अंतर्दृष्टि के अभ्यास को देखकर, इन अभ्यासों को निर्णय का मानक मानकर उनमें संतुष्टि पाता है। ऐसा व्यक्ति सही का आकलन और सम्मान करने वाला होता है।2

23. कोई व्यक्ति अपने कल्याण के लिए तो प्रयास करता है, लेकिन दूसरों के कल्याण के लिए क्यों नहीं?
यहां व्यक्ति नैतिक जीवन को प्राप्त कर लेता है, लेकिन दूसरों को इसे प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता; स्वयं ध्यान की साधना कर लेता है, लेकिन दूसरों को इसे प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता; स्वयं अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेता है, लेकिन दूसरों को इसे प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता; स्वयं मोक्ष प्राप्त कर लेता है, लेकिन दूसरों को इसे प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता; स्वयं मोक्ष की चेतना की अनुभूति प्राप्त कर लेता है, लेकिन दूसरों को उस अनुभूति को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता। ऐसा व्यक्ति वह है जो केवल अपने कल्याण के लिए प्रयास करता है, दूसरों के कल्याण के लिए नहीं।

कोई व्यक्ति दूसरों के कल्याण के लिए प्रयास क्यों करता है, लेकिन अपने स्वयं के कल्याण के लिए नहीं?
यहां व्यक्ति स्वयं नैतिक जीवन की प्राप्ति नहीं करता, बल्कि दूसरों को इसकी प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है; स्वयं ध्यान की साधना की प्राप्ति नहीं करता, बल्कि दूसरों को इसकी प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है; स्वयं अंतर्दृष्टि की प्राप्ति नहीं करता, बल्कि दूसरों को अंतर्दृष्टि की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है; स्वयं मोक्ष की साधना की प्राप्ति नहीं करता, बल्कि दूसरों को उस अवस्था की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है; स्वयं मोक्ष की चेतना की अनुभूति नहीं करता, बल्कि दूसरों को उस अनुभूति की अनुभूति करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार व्यक्ति दूसरों के कल्याण के लिए प्रयास करता है, न कि अपने स्वयं के कल्याण के लिए।

कोई व्यक्ति न तो अपने कल्याण के लिए प्रयास करता है और न ही दूसरों के कल्याण के लिए, ऐसा कैसे हो सकता है?
यहां व्यक्ति न तो स्वयं नैतिक जीवन प्राप्त करता है और न ही दूसरों को नैतिक जीवन प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है, न तो स्वयं ध्यान की साधना करता है और न ही दूसरों को इसके लिए प्रेरित करता है, न तो स्वयं अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है और न ही दूसरों को अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है, न तो स्वयं मोक्ष प्राप्त करता है और न ही दूसरों को उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है, न तो स्वयं मोक्ष की चेतना की अनुभूति प्राप्त करता है और न ही दूसरों को उस अनुभूति को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसा व्यक्ति न तो अपने कल्याण के लिए प्रयास करता है और न ही दूसरों के कल्याण के लिए।

एक व्यक्ति अपने साथ-साथ दूसरों के कल्याण के लिए कैसे प्रयास करता है?
यहां व्यक्ति स्वयं नैतिक जीवन प्राप्त करता है और दूसरों को भी नैतिक जीवन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है, स्वयं भी नैतिक जीवन प्राप्त करता है।

जो व्यक्ति ध्यान की साधना में निरंतर लिप्त रहता है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है, वह स्वयं अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है और दूसरों को भी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है; वह स्वयं मोक्ष प्राप्त करता है और दूसरों को भी उस अवस्था को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है; वह स्वयं मोक्ष की चेतना की अनुभूति प्राप्त करता है और दूसरों को भी उस अनुभूति को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। ऐसा व्यक्ति वह है जो अपने और दूसरों दोनों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहता है।

कोई व्यक्ति न तो अपने कल्याण के लिए प्रयास करता है और न ही दूसरों के कल्याण के लिए, ऐसा कैसे हो सकता है?
यहां कोई व्यक्ति न तो स्वयं नैतिक जीवन प्राप्त करता है और न ही दूसरों को नैतिक जीवन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है, न तो स्वयं समाधि की साधना प्राप्त करता है और न ही दूसरों को उसे प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है, न तो स्वयं अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है और न ही दूसरों को अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है, न तो स्वयं मुक्ति प्राप्त करता है और न ही दूसरों को मुक्ति की अवस्था प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है, न तो स्वयं मुक्ति की चेतना की अनुभूति प्राप्त करता है और न ही दूसरों को उस अनुभूति को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

ऐसा व्यक्ति वह होता है जो न तो अपने कल्याण के लिए प्रयास करता है और न ही दूसरों के कल्याण के लिए।

24. कोई व्यक्ति आत्म-यातना का आदी कैसे हो जाता है और आत्म-यातना की ओर ले जाने वाली प्रथाओं का व्यसनी कैसे बन जाता है?
यहां एक व्यक्ति नंगा रहता है, उसके बुरे संस्कार होते हैं; वह अपने हाथ चाटकर साफ करता है, विनम्रतापूर्वक अनुरोध किए जाने पर भी पास नहीं रुकता या एक पल भी प्रतीक्षा नहीं करता, उसके लिए लाया गया भोजन स्वीकार करने से इनकार करता है, उसके लिए विशेष रूप से तैयार किया गया भोजन स्वीकार करने से इनकार करता है, कोई भी निमंत्रण स्वीकार नहीं करता, खाना पकाने के बर्तन या कड़ाही से भोजन स्वीकार नहीं करता, दहलीज के भीतर रखा भोजन स्वीकार नहीं करता, ओखली के बीच रखा भोजन स्वीकार नहीं करता, जब दो व्यक्ति एक साथ भोजन कर रहे हों तो भोजन स्वीकार नहीं करता, गर्भवती महिला से, दूध पिलाने वाली महिला से, पत्नी के रूप में रहने वाली महिला से भोजन स्वीकार नहीं करता, पवित्र स्थानों पर अर्पित भोजन स्वीकार नहीं करता, जब कोई कुत्ता पास खड़ा हो या जहां मक्खियां भिनभिना रही हों तो भोजन स्वीकार नहीं करता, मछली, मांस, तेज शराब, मादक पदार्थ या खट्टी दलिया स्वीकार नहीं करता, एक घर से भीख मांगता है तो केवल एक निवाला खाता है, या दो घरों से भीख मांगता है तो केवल दो निवाले खाता है, या सात घरों तक भीख मांगता है तो सात निवाले तक खाता है, केवल एक या केवल दो भिक्षा पर अपना गुजारा करता है। सात भिक्षाओं तक, वह दिन में केवल एक बार या हर दो दिन में एक बार, या हर सात दिन में एक बार भिक्षा लेता है, इस प्रकार नियमानुसार नियमित अंतराल पर, यहाँ तक कि आधे महीने तक भोजन ग्रहण करने की प्रथा का पालन करता है, वह जड़ी-बूटियों, जंगली चावल, निवारा चावल, दद्दूला चावल, बिना छिलके वाले अनाज, चावल के दाने या चावल की झाग, खली, घास, गोबर, जंगल के फल और जड़ों, स्वयं गिरे हुए फलों का सेवन करता है, मोटे भांग के कपड़े, मिश्रित रेशों के मोटे कपड़े, मृत शरीर से लिए गए कपड़े, कूड़े के ढेर के चिथड़ों से बने कपड़े, छाल से बने कपड़े, काले मृग की खाल, काले मृग की खाल से बने वस्त्र, कुसा घास से बने वस्त्र, छाल से बने वस्त्र, लकड़ी के टुकड़ों से बने वस्त्र, बालों के वस्त्र, घोड़ों की पूंछ से बने वस्त्र, उल्लू के पंखों से बने वस्त्र पहनता है; वह बाल और दाढ़ी नोचने वाला है, बाल और दाढ़ी नोचने का आदी है; वह बैठने से इनकार करते हुए खड़ा रहता है; वह उकडू बैठने का आदी है; वह कांटों की सेज पर लेटा रहता है; वह शाम तक दिन में तीन बार पानी में डुबकी लगाने का आदी है। इस प्रकार वह शरीर को कई प्रकार की यातनाएँ देता रहता है। इस प्रकार वह आत्म-यातना करने वाला और आत्म-यातना से संबंधित प्रथाओं का आदी हो जाता है।

कोई व्यक्ति दूसरों का उत्पीड़क कैसे बन जाता है और उत्पीड़न की प्रवृत्ति वाली प्रथाओं का आदी कैसे हो जाता है?
यहां व्यक्ति भेड़ काटने वाला, सूअर का शिकारी, हिरण का शिकारी, पक्षी पकड़ने वाला, फंदा लगाने वाला, मछली मारने वाला, चोर, सरकारी जल्लाद, जेलर या ऐसे ही अन्य क्रूर कृत्यों का दोषी होता है। इस प्रकार व्यक्ति दूसरों को सताने वाला बन जाता है और दूसरों पर अत्याचार करने वाली प्रथाओं का आदी हो जाता है।

किसी व्यक्ति में उपरोक्त दोनों प्रकार के लक्षण एक साथ कैसे आ जाते हैं?
यहां एक व्यक्ति राजा, ताजपोशी किया हुआ सम्राट या अत्यधिक धनवान और प्रभावशाली ब्राह्मण है; वह राजधानी के पूर्व में एक नया यज्ञगृह बनवाता है, अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाता है, काले हिरण की खाल पहनता है, अपने शरीर पर घी और तेल लगाता है, हिरण के सींग से अपनी पीठ खुजलाता है, और अपनी रानी-पत्नी और ब्राह्मण पुरोहित के साथ यज्ञगृह में प्रवेश करता है, वहां वह पीले रंग से रंगे हुए संकरे स्थान पर लेट जाता है; राजा एक गाय के एक थन से निकाले जा सकने वाले दूध की मात्रा पर जीवित रहता है, जिसके बछड़े का रंग उससे मिलता-जुलता होता है, रानी-पत्नी दूसरे थन से निकाले जा सकने वाले दूध की मात्रा पर जीवित रहती है, ब्राह्मण पुरोहित तीसरे थन से निकाले जा सकने वाले दूध की मात्रा पर जीवित रहता है, अग्नि-यज्ञ चौथे थन से निकाले जा सकने वाले दूध की मात्रा से

किए जाते हैं, और बछड़ा शेष दूध की मात्रा पर जीवित रहता है; इस प्रकार वह आदेश देता है कि इतने बैलों का बलिदान किया जाए, इतने बछड़ों का, इतनी गायों के, इतनी बकरियों का, इतने मेढ़ों का बलिदान किया जाए, इतने पेड़ काटकर खंभे बनाए जाएं, इतनी घास काटकर बलिदान स्थल के चारों ओर बिखेरी जाए; उसके अधीन काम करने वाले दास, दूत या मजदूर कोड़े की मार और भय से विवश होकर, चेहरे पर आंसू लिए उसके आदेशों का पालन करते हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति में उपरोक्त दोनों प्रकार के लक्षण समाहित हो जाते हैं।

कोई व्यक्ति इन दोनों प्रकारों में से किसी के भी लक्षण धारण न करने की स्थिति में कैसे आ जाता है?
वह न तो खुद को और न ही दूसरों को यातना देता है, और इस संसार में वह बिना किसी लालसा के, शांत, स्थिर, आनंदित होकर, ईश्वर समान स्वरूप में जीवन व्यतीत करता है।
यहां ऐसा घटित होता है कि तथागत इस संसार में जन्म लेते हैं, एक परम प्रबुद्ध, पूर्णतः ज्ञानी बुद्ध, अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण, सदाचारी आचरण वाले, सही मार्ग पर चलने वाले, संसार के ज्ञाता, अद्वितीय, अनुशासन के प्रति सजग व्यक्तियों के मार्गदर्शक, देवताओं और मनुष्यों के गुरु, बुद्ध, भगवान - उन्होंने स्वयं इस संसार को, देवताओं, मारों, ब्रह्माओं, संन्यासियों और ब्राह्मणों के संसारों सहित, देवताओं और मनुष्यों के साथ रहने वालों को जानकर और अनुभव करके, दूसरों को इसके बारे में उपदेश देते हैं; वे ऐसा उपदेश देते हैं जो आरंभ में लाभकारी, निरंतरता में लाभकारी और अंत में लाभकारी, अर्थपूर्ण, उपयुक्त शब्दों में, उचित भाषा में व्यक्त किया गया हो; वे उच्च जीवन को उसकी शुद्धता और पूर्णता में व्यक्त करते हैं। इस उपदेश को एक गृहस्थ, उसकी संतान या किसी अन्य परिवार में जन्मा व्यक्ति सुनता है; वह इस उपदेश को सुनकर तथागत में आस्था प्राप्त करता है। इस आस्था से परिपूर्ण होकर वह इस प्रकार चिंतन करता है: गृहस्थ जीवन एक धूल भरा मार्ग है! त्याग का मार्ग खुला और विस्तृत है! गृहस्थ जीवन जीते हुए उच्चतर जीवन का अभ्यास करना आसान नहीं है, जो पूर्ण और संपूर्ण, परम शुद्ध, उत्तम रूप से निर्मित शंख के समान शुद्ध हो।
अत: मुझे घर छोड़कर बेघर जीवन व्यतीत करना होगा, अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, अपने शरीर को पीले वस्त्रों से ढकना होगा: ऐसा होता है कि कुछ समय बाद, वह अपनी सारी संपत्ति, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, त्यागकर, अपने सारे रिश्तेदार, चाहे वे कम हों या अधिक, घर छोड़कर बेघर अवस्था में चला जाता है, अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, अपने शरीर को पीले वस्त्रों से ढक लेता है।1 इस प्रकार धार्मिक दीक्षा प्राप्त करके, भिक्षुओं द्वारा अपनाए जाने वाले प्रशिक्षण और जीवन शैली को अपनाते हुए, वह जीवित प्राणियों की (जानबूझकर) हत्या का त्याग करता है, जीवन के (जानबूझकर) वध से दूर रहता है, छड़ी और तलवार को त्यागकर, क्रूरता से लज्जित होकर, सभी जीवित प्राणियों के प्रति दयालु, करुणामय और कृपालु होता है; जो उसे नहीं दिया गया है उसे लेने का त्याग करता है, जो उसे नहीं दिया गया है उसे स्वीकार करने से परहेज करता है; वह जो दिया गया है उसे स्वीकार करता है, केवल वही स्वीकार करने की अपेक्षा रखता है, वह अपना जीवन ईमानदारी से, शुद्ध आत्मा के साथ व्यतीत करता है; वह व्यभिचारी जीवन को त्यागकर पवित्र है, व्यभिचारी नहीं, यौन जीवन से, ग्रामसत्तात्मक स्वभाव से विरक्त है;2 वह झूठे शब्दों को त्यागकर झूठ बोलने से बचता है, सत्य बोलता है, सदा सत्य का लक्ष्य रखता है, विश्वसनीय है, संसार के प्रति कभी विश्वासघात नहीं करता; निंदात्मक वाणी को त्यागकर निंदा से बचता है, एक स्थान से सुनी हुई बात को दूसरे स्थान पर इस उद्देश्य से नहीं बताता कि पहले पक्ष के विरुद्ध कलह उत्पन्न हो, कहीं और से सुनी हुई बात को यहाँ इस उद्देश्य से नहीं बताता कि वहाँ के लोगों के विरुद्ध कलह उत्पन्न हो। इस प्रकार, विमुख लोगों के बीच सुलह कराने वाले के रूप में, पहले से एकजुट लोगों की एकता बढ़ाने वाले के रूप में, एकता में आनंदित, एकता पर प्रसन्न होकर, वह पुनर्मिलन की ओर अग्रसर होने वाले शब्दों का उच्चारण करने का अभ्यस्त है; कठोर शब्दों को त्यागकर अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने से बचता है, वह ऐसे शब्द बोलता है जो निर्दोष, कानों को भाने वाले, स्नेहपूर्ण, हृदय को भाने वाले, परिष्कृत, लोगों को प्रसन्न करने वाले और अनेकों के हृदय को मोहित करने वाले हों; वह निरर्थक बातों को त्यागकर, व्यर्थ की बातों से परहेज करता है, सही समय पर बोलता है, सत्य बोलता है, अच्छाई के अनुसार, धर्म के अनुसार, आत्म-संयम के अनुसार बोलता है, संजोने योग्य बातें कहता है, कभी-कभी उदाहरणों के साथ, स्पष्ट रूप से परिभाषित, अर्थपूर्ण।
वह किसी भी जीव को, चाहे वह गर्भ में हो या वयस्क अवस्था में, हानि पहुँचाने से परहेज़ करता है; वह दिन में केवल एक बार भोजन करता है, रात में भोजन नहीं करता और असमय भोजन से परहेज़ करता है; वह नृत्य, गीत, संगीत और (ऐसे अन्य) मनोरंजनों में दर्शक बनने से परहेज़ करता है; वह माला पहनने, अपने शरीर पर सुगंध और मलहम लगाने और (ऐसे अन्य) सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करने से परहेज़ करता है; वह ऊँचे और उत्तम पलंगों का उपयोग करने से परहेज़ करता है; वह सोना और चाँदी लेने से परहेज़ करता है; वह कच्चे चावल, कच्चा मांस, स्त्रियाँ और लड़कियाँ, पुरुष और महिला दास, बकरी और भेड़, मुर्गी और सूअर, हाथी, गाय, घोड़े और खच्चर, खेत और आवास उपहार के रूप में स्वीकार करने से परहेज़ करता है; वह मध्यस्थ या संदेशवाहक के रूप में कार्य करने से परहेज़ करता है; वह खरीद-फरोख्त से परहेज़ करता है। वह तराजू, सिक्कों या नाप-तोल में धोखाधड़ी करने से परहेज करता है; वह रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी और जालसाजी के कुटिल मार्ग से परहेज करता है; वह अंग-भंग करने, हत्या करने, बंधक बनाने, राजमार्ग पर लूटपाट करने, डकैती और हिंसा के कृत्यों से परहेज करता है।
वह अपने शरीर की रक्षा के लिए पर्याप्त वस्त्रों और पेट भरने के लिए पर्याप्त दान से संतुष्ट रहता है, और जहाँ भी जाता है इन्हें अपने साथ ले जाता है। जैसे कोई पक्षी जहाँ भी उड़ता है, केवल अपने पंखों के भार के साथ ही उड़ता है, उसी प्रकार भिक्षु अपने शरीर की रक्षा

के लिए पर्याप्त वस्त्रों और पेट भरने के लिए पर्याप्त दान से संतुष्ट रहता है, और जहाँ भी जाता है इन्हें अपने साथ ले जाता है। आर्यों के इन नैतिक उपदेशों से युक्त होकर, वह अपने भीतर दोषरहित आनंद का अनुभव करता है।
किसी वस्तु को अपनी आँखों से देखने के बाद वह उसके सामान्य स्वरूप या विवरणों पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं करता, बल्कि उन चीजों को नियंत्रित करने का प्रयास करता है जो उसके भीतर पापी अनैतिक प्रवृत्तियों, लोभ और निराशा को उत्पन्न करती हैं। दृष्टि के संबंध में अनियंत्रित रहते हुए वह अपनी दृष्टि शक्ति की रक्षा करता है और उस पर नियंत्रण प्राप्त करता है।

दृष्टि की इंद्रिय। इसी प्रकार, जब वह अपने कानों से ध्वनि सुनता है, अपनी नाक से गंध सूंघता है, अपनी जीभ से स्वाद चखता है, अपने शरीर से किसी वस्तु को स्पर्श करता है, अपने मन से किसी मानसिक विषय को समझता है, तो वह अपने मन को उसके सामान्य रूप या विवरणों पर केंद्रित नहीं करता, बल्कि उन चीजों को नियंत्रित करने का प्रयास करता है जो दृष्टि और अनैतिक प्रवृत्तियों, लोभ और निराशा को उस पर हावी होने का कारण बनती हैं, जब वह अपने मन और विचार शक्ति को अनियंत्रित रूप से नियंत्रित कर रहा होता है; वह अपने मन की रक्षा करता है, वह विचार शक्ति पर नियंत्रण प्राप्त करता है। इस आर्यिक इंद्रिय-नियंत्रण से संपन्न होकर, वह अपने भीतर उस आनंद का अनुभव करता है जो दोषरहित है।

बाहर जाने और वापस आने में, वह जानबूझकर कार्य करता है, और साथ ही देखने या आसपास देखने में, अपनी बांह फैलाने या उसे वापस अंदर खींचने में, संघती1 और अन्य वस्त्र पहनने में, या भिक्षापात्र ले जाने में, खाने या पीने में, चबाने या निगलने में, प्रकृति की पुकारों का पालन करने में, चलने या खड़े होने या बैठने में, सोने या जागने में, बोलने में या मौन की अवस्था में रहने में भी।

आर्यों के इस नैतिक आचरण से युक्त, सचेतनता और जागरूकता के इस उत्कृष्ट अभ्यास से युक्त, और आर्यों के संतोष के इस मार्ग से युक्त होकर, वह किसी एकांत स्थान पर शरण लेता है, चाहे वह जंगल हो, वृक्ष की तलहटी हो, पहाड़ी की ढलान हो, गुफा हो, चट्टानी कंदरा हो, कब्रिस्तान हो, वन क्षेत्र हो, खुला मैदान हो, या भूसे का ढेर हो; भिक्षा मांगने के बाद वह वहां लौटकर भोजन करने के बाद पालथी मारकर बैठ जाता है, शरीर को सीधा रखते हुए सचेतनता को आगे बढ़ाता है; संसार की लालसा को त्यागकर वह लोभ से मुक्त मन से निवास करता है, अपने मन को लोभ से शुद्ध करता है; हानि पहुंचाने की बुरी प्रवृत्तियों को त्यागकर वह द्वेष से मुक्त हृदय से निवास करता है; सभी प्राणियों के प्रति दयालु और करुणामय होकर वह अपने मन को द्वेष से शुद्ध करता है; आलस्य और सुस्ती को त्यागकर वह उनसे मुक्त होकर निवास करता है। प्रकाश की उपस्थिति के प्रति सचेत, अनुभवों के प्रति सजग और जागरूक होकर वह अपने मन को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है; चिंता और घबराहट को दूर करके वह चिंतामुक्त रहता है; अपने हृदय को शांत रखते हुए वह अपने मन को चिंता और घबराहट से शुद्ध करता है; उलझन को दूर करके वह संदेहमुक्त रहता है; अच्छाई के बारे में संदेह न करते हुए वह अपने मन को संशय से शुद्ध करता है।
हृदय को विचलित करने और अंतर्दृष्टि को कमजोर करने वाली इन पाँच बाधाओं को दूर करके, वह इंद्रिय सुखों और बुरी अवस्थाओं का त्याग करते हुए, ध्यान की पहली अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है। इस अवस्था में निरंतर चिंतन, आनंद और मानसिक एकांत से उत्पन्न परमानंद का अनुभव होता है। निरंतर चिंतन के समाप्त होने पर वह ध्यान की दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है। यह एकाग्रता से उत्पन्न आनंद और परमानंद की अवस्था है, जो निरंतर चिंतन से मुक्त होती है—मन की एकाग्रता और हृदय की आंतरिक शांति की अवस्था। आनंद की तीव्र लालसा के अभाव में वह समभाव में रहता है और अपनी मानसिक अवस्थाओं और अनुभवों के प्रति सचेत रहते हुए अपने शरीर के माध्यम से आनंद का अनुभव करता है। आर्यों ने इसका वर्णन करते हुए कहा है, "शांत और सचेत व्यक्ति सहजता से रहता है।" और इस प्रकार वह परमानंदमय ध्यान की तीसरी अवस्था में प्रवेश करते हुए लीन रहता है। फिर सुख और दुख दोनों को त्यागकर, और पहले की तरह सुख और दुखों के लुप्त हो जाने के साथ, वह सुख और दुख से रहित ध्यान की चौथी अवस्था में प्रवेश करते हुए लीन रहता है, एक ऐसी अवस्था जो समभाव और विचारशीलता से शुद्ध हो जाती है। अब जब उसका मन इस प्रकार एकाग्र हो गया है, परम शुद्ध और प्रकाशमय हो गया है, अशुद्धियों से मुक्त हो गया है, विक्षोभकारी कारकों से मुक्त हो गया है, कोमल और लचीला हो गया है, स्थिर और अविचलित हो गया है, तो वह अपने पिछले जन्मों को याद करने के लिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपना मन लगाता है। वह विभिन्न रूपों में अपने पिछले जन्मों को याद करता है, यह एक जन्म, दो जन्म, तीन, चार, पांच से दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, सौ, एक हजार या एक लाख जन्म हो सकते हैं, जो ब्रह्मांडीय परिक्रमण के कई कालों में, आवरण और विकास के कई कालों में हुए हों। वह इस प्रकार अपने पिछले जन्मों को याद करता है, "वहाँ मेरा जन्म अमुक नाम से, अमुक परिवार में, अमुक जाति में हुआ, मैंने अमुक प्रकार का भोजन किया, अमुक सुख और दुख का अनुभव किया, और उस जीवन का अमुक अंत हुआ; उस अवस्था से मृत्यु के बाद मेरा पुनर्जन्म दूसरी अवस्था में हुआ, जहाँ मेरा अमुक नाम था, अमुक परिवार में, अमुक जाति में, मैंने अमुक प्रकार का भोजन किया, अमुक सुख और दुख का अनुभव किया।" "इस प्रकार का सुख और दुख, यही उस जीवन का अंत था, उस अवस्था से मृत्यु के बाद मेरा यहाँ पुनर्जन्म हुआ।" इस प्रकार वह अनेक तरीकों से अपने पूर्व निवास स्थानों और नियतियों के स्वरूपों को विस्तार से याद करता है।
और फिर से, इस प्रकार एकाग्र मन से, जो परम शुद्ध और प्रकाशमय हो चुका है, अशुद्धियों से मुक्त है, विक्षोभकारी कारकों से मुक्त है, कोमल और लचीला है, स्थिर और अविचलित है, वह अन्य प्राणियों के प्रकट होने और विलुप्त होने की अनुभूति प्राप्त करने के लिए

अपना मन लगाता है। वह साधारण मनुष्यों की दृष्टि से कहीं अधिक स्पष्ट दृष्टि से प्राणियों को एक अवस्था से मरते और दूसरी में पुनर्जन्म लेते हुए देखता है; वह निम्न या उच्च कोटि के प्राणियों को, सुंदर और कुरूप, सुखी या दुर्भाग्यशाली, अपने कर्मों के अनुसार फलते-फूलते देखता है। वह पहचानता है कि ये वास्तव में बुरे कर्मों के दोषी हैं, शब्दों और विचारों से किए गए अपराधों के दोषी हैं, आर्यों की निंदा करने वाले हैं, गलत विचारों के समर्थक हैं, गलत निर्णय से जुड़ी प्रथाओं का पालन करने वाले हैं; मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर वे नरक में, घोर विनाश की स्थिति में, पीड़ा की दयनीय अवस्था में पुनर्जन्म लेते हैं; दूसरी ओर, वे प्राणी हैं जिन्होंने अच्छे कर्मों का पूर्ण फल प्राप्त किया है, अपने शब्दों और विचारों से पुण्य अर्जित किया है; आर्यों की निंदा न करते हुए, सही विचारों के समर्थक, विवेकपूर्ण आचरण का पालन करते हुए, वे मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर स्वर्गलोक में एक सुखद गंतव्य के लिए पुनर्जन्म लेते हैं। इस प्रकार वह साधारण मनुष्यों की दृष्टि से परे, स्पष्ट दिव्य दृष्टि से, एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पुनर्जन्म लेने वाले प्राणियों को देखता है; वह निम्न या उच्च कोटि के प्राणियों को, सुंदर और कुरूप, सुखी या दुर्भाग्यशाली, अपने कर्मों के अनुसार फलते-फूलते देखता है।
अब जब उसका मन इस प्रकार एकाग्र हो जाता है, परम शुद्ध और प्रकाशमय हो जाता है, अशुद्धियों से मुक्त हो जाता है, विक्षोभकारी कारक दूर हो जाते हैं, कोमल और लचीला हो जाता है, स्थिर और अविचलित हो जाता है, तो वह अपने मन को पापी प्रवृत्तियों (आसवों) के नाश की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लगाता है। वह वास्तव में समझता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है, यही दुख के निवारण का मार्ग है: वह वास्तव में जानता है कि ये पापी प्रवृत्तियाँ हैं, यही इनका कारण है, इत्यादि। जब वह इस प्रकार जानता और देखता है, तो उसका मन इंद्रिय सुखों की प्रवृत्ति से, पुनर्जन्म की प्रवृत्ति से और अज्ञान की प्रवृत्ति से मुक्त हो जाता है। और जब मन मुक्त हो जाता है, तो उसे यह ज्ञान होता है कि वह मुक्त हो गया है और वह जानता है कि जन्म का नाश हो गया है, पवित्र जीवन व्यतीत कर लिया गया है, कर्तव्य पूर्ण हो गए हैं, और अब इन अवस्थाओं का कोई अस्तित्व नहीं है। इस प्रकार मनुष्य न तो स्वयं को कष्ट देता है, न ही आत्म-यातना की ओर ले जाने वाली प्रथाओं का आदी होता है, न ही दूसरों को कष्ट देता है, और न ही दूसरों को कष्ट देने वाली प्रथाओं में संलग्न होता है। वह न तो स्वयं को और न ही दूसरों के आत्म को पीड़ा देता है, और इस संसार में वह किसी भी लालसा से मुक्त होकर, शांत, स्थिर और आनंदित होकर, ईश्वरीय स्वरूप में जीवन व्यतीत करता है।

25. किस व्यक्ति को आवेशित कहा जाता है?
जिसकी वासना शांत नहीं हुई है, उसे वासना से परिपूर्ण कहा जाता है।

किस व्यक्ति को घृणा से ग्रसित कहा जाता है?
जिसका द्वेष दूर नहीं हुआ है: ऐसे व्यक्ति को द्वेष से ग्रसित कहा जाता है।

किस व्यक्ति को भ्रमग्रस्त कहा जाता है?
जिसका भ्रम दूर नहीं हुआ है, उसे भ्रमग्रस्त कहा जाता है।

किस व्यक्ति को अभिमानी कहा जाता है?
जिसका अहंकार अभी तक दूर नहीं हुआ है :- यह व्यक्ति है
कहा जाता है कि वह व्यक्ति अभिमानी होता है।

26. कोई व्यक्ति मन की आंतरिक शांति तो प्राप्त कर लेता है, लेकिन चीजों के बारे में अंतर्दृष्टि का उच्चतर ज्ञान क्यों नहीं प्राप्त कर पाता?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो रूप या निराकारता के विचार से युक्त [परमानंद ध्यान]1 प्राप्त करता है, लेकिन उसे पारलौकिक मार्ग या फल प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार व्यक्ति मन की आंतरिक शांति तो प्राप्त करता है, लेकिन चीजों के बारे में अंतर्दृष्टि का उच्चतर ज्ञान प्राप्त नहीं करता।

कोई व्यक्ति चीजों के बारे में गहन अंतर्दृष्टि का उच्चतर ज्ञान तो प्राप्त कर लेता है, लेकिन मन की आंतरिक शांति क्यों नहीं पा लेता?
यहां एक व्यक्ति परागत मार्ग और फल का तो ज्ञाता है, पर स्वरूप या निराकारता के विचार से युक्त परमानंदमय ध्यान का न। इस प्रकार व्यक्ति को चीजों की गहरी समझ का ज्ञान तो प्राप्त होता है, पर मन की आंतरिक शांति नहीं।

कोई व्यक्ति इन दोनों चीजों को कैसे प्राप्त कर सकता है?
यहां व्यक्ति समाधि जैसी अवस्था में पहुंचता है, जिसमें उसे रूप या निराकारता का विचार तथा अलौकिक मार्ग और फल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार व्यक्ति इन दोनों को प्राप्त कर लेता है।

कोई व्यक्ति इन दोनों में से किसी को भी कैसे प्राप्त नहीं कर सकता?
यहां व्यक्ति न तो रूप-बोध या रूपहीनता के बोध से युक्त परमानंदमय ध्यान की अवस्था प्राप्त करता है, न ही अलौकिक मार्ग और फल की प्राप्ति करता है। इस प्रकार व्यक्ति को इनमें से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

27. किसी व्यक्ति के बारे में कैसे कहा जाता है कि वह धारा के साथ बह रहा है?
यहां एक व्यक्ति इंद्रिय सुखों का आनंद लेता है और पाप कर्म करता है। यह व्यक्ति धारा के साथ बह रहा है।
किसी व्यक्ति को धारा के विपरीत जाने वाला कैसे कहा जाता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो न तो इंद्रिय सुखों का आनंद लेता है और न ही पाप कर्म करता है। वह पीड़ा और शोक के साथ, चेहरे पर आंसू लिए और विलाप करते हुए, पूर्ण और निष्कलंक पवित्रता का अभ्यास करता है। यह व्यक्ति धारा के विपरीत चलने वाला है।

किसी व्यक्ति को स्थापित कैसे कहा जाता है?
यहां एक व्यक्ति निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाले जीवन बंधनों के टूटने के कारण एक प्रेतवाधित प्राणी बन जाता है, जो वहां अंतिम मुक्ति प्राप्त कर लेता है और उस लोक से वापस नहीं लौट सकता। यही व्यक्ति स्थापित होता है।

वह व्यक्ति 'ब्राह्मण' कैसे कहलाता है, जिसने नदी पार कर ली है, दूसरे किनारे पर पहुँच गया है और जीवन में सफलता प्राप्त कर ली है?
यहां एक व्यक्ति अपनी पापी प्रवृत्तियों के नाश के कारण इसी जीवन में मन और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को जानकर और अनुभव करके पापी प्रवृत्तियों से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता है; इस व्यक्ति को 'ब्राह्मण' कहा जाता है, जिसने नदी पार कर दूसरे किनारे पर पहुंचकर मोक्ष की प्राप्ति कर ली है।

28. वह व्यक्ति कैसा होता है जो कम जानता है और सीखी हुई बातों पर अमल नहीं करता?
यहां एक व्यक्ति को सूत्र, गेय्या, व्याकरण, गाथा, उदाना, इतिवुत्तक, जातक, अब्भूता और वेदल्ल का अल्प ज्ञान है, परन्तु वह न तो अर्थ जानता है और न ही सत्य, और न ही वह धम्म का पूर्णतः या सूक्ष्मतः अनुसरण करता है। ऐसे व्यक्ति को अल्प ज्ञान वाला और ज्ञान के अनुसार व्यवहार न करने वाला कहा जाता है।

जो व्यक्ति कम जानता है और सीखी हुई बातों के अनुरूप व्यवहार करता है, वह कैसे ऐसा व्यक्ति हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति को सूत्रों आदि का ज्ञान कम है; वह अपने उस थोड़े से ज्ञान का अर्थ और सत्य जानकर, संपूर्ण रूप से और विस्तार से धम्म का अभ्यास करता है। इस प्रकार, ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो कम जानता है और अपने ज्ञान के अनुसार कार्य करता है।

जो व्यक्ति अत्यधिक ज्ञानी होते हुए भी अपने ज्ञान के अनुरूप व्यवहार नहीं करता, वह ज्ञानी कैसे हो सकता है?
यहां एक व्यक्ति को सुत्त आदि का बहुत ज्ञान है; लेकिन उस ज्ञान के अर्थ और सत्य को न जानते हुए वह धम्म का पूर्णतः या सूक्ष्मतः अनुसरण नहीं करता। इस प्रकार, ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो ज्ञानवान होते हुए भी अपने ज्ञान के अनुरूप व्यवहार नहीं करता।

जो व्यक्ति अत्यधिक ज्ञानी होता है और अपने ज्ञान के अनुरूप व्यवहार करता है, उसे कैसे कहा जा सकता है?
यहां एक व्यक्ति को सुत्त आदि का गहरा ज्ञान प्राप्त है; वह उस गहन ज्ञान के अर्थ और सत्य को जानकर, संपूर्ण रूप से और विस्तार से धम्म का पालन करता है। इस प्रकार, ऐसे व्यक्ति को विद्वान और अपने ज्ञान के अनुरूप व्यवहार करने वाला कहा जाता है।

29. एक व्यक्ति दृढ़ आधार वाला एकांतवासी कैसे होता है?
यहां एक व्यक्ति (तीन) बंधनों के पूर्ण विनाश के माध्यम से 'धारा प्राप्ति करने वाला' बन जाता है, जो अब (दुखद अवस्था में) गिरने के लिए उत्तरदायी नहीं होता, बल्कि सफलता के लिए नियत होता है और उसका लक्ष्य और उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना होता है; इस व्यक्ति को दृढ़ आधार वाला संन्यासी कहा जाता है।

किसी व्यक्ति को लाल कमल के समान संन्यासी क्यों कहा जाता है?
यहां एक व्यक्ति तीन बंधनों के पूर्ण नाश के द्वारा और कामवासना, घृणा और भ्रम को कम करके एक बार ही इस संसार में लौटकर दुखों का अंत कर लेता है। इस व्यक्ति को लाल कमल के समान संन्यासी कहा जाता है।

कोई व्यक्ति श्वेत कमल के समान संन्यासी कैसे हो सकता है?

यहां एक व्यक्ति निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाले पांच बंधनों के पूर्ण नाश के द्वारा, एक प्रेतवाधित प्राणी बन जाता है, जो वहां अंतिम मुक्ति प्राप्त करता है और उस लोक से वापस नहीं लौट सकता। ऐसे व्यक्ति को श्वेत कमल के समान संन्यासी कहा जाता है।

किसी व्यक्ति को नाजुक एकांतवासी कैसे कहा जाता है?
यहां एक व्यक्ति अपनी पापी प्रवृत्तियों के नाश के कारण इसी जीवन में मन और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को जान और अनुभव कर लेता है, पापी प्रवृत्तियों से मुक्त होकर जीता है - इस व्यक्ति को कोमल संन्यासी कहा जाता है।

तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय 5**
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय V: मानव प्रकारों का पाँच भागों में विभाजन

1. यदि कोई व्यक्ति कर्म करता है और पश्चाताप करता है, जो मन की मुक्ति और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप में नहीं जानता, जिसमें उसके उत्पन्न पापी और बुरे गुण पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं, तो उसे इस प्रकार कहा जाना चाहिए: 'आदरणीय व्यक्ति में कर्मों के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं, और पश्चाताप के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। यदि आदरणीय व्यक्ति अपने कर्मों के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियों का त्याग कर पश्चाताप के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियों को दबा दे और चिंतन एवं अंतर्दृष्टि का अभ्यास करे तो यह अच्छा होगा।' इस प्रकार आदरणीय व्यक्ति इस समूह में पाँचवें व्यक्ति के समान हो जाएगा।
यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो कर्म तो करता है पर पश्चाताप नहीं करता, जो मन और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप में नहीं जानता, जिसमें उसके उत्पन्न पापी और बुरे गुण नष्ट हो जाते हैं, तो उसे इस प्रकार कहा जाना चाहिए: 'आदरणीय व्यक्ति में कर्मों के कारण पापी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं, पश्चाताप के कारण पापी प्रवृत्तियाँ नहीं बढ़तीं। यदि आदरणीय व्यक्ति अपने कर्मों के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियों का त्याग कर चिंतन और अंतर्दृष्टि का अभ्यास करे तो यह अच्छा होगा।' इस प्रकार आदरणीय व्यक्ति इस समूह में पाँचवें व्यक्ति के समान हो जाएगा।
यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो कर्म न करे, फिर भी पश्चाताप करे, जो मन और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप में न जानता हो, जिसमें उसके उत्पन्न पापी और बुरे गुण पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं, तो उसे इस प्रकार कहा जाना चाहिए: 'आदरणीय व्यक्ति में कर्मों के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियाँ नहीं होतीं, परन्तु पश्चाताप के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियाँ बढ़ जाती हैं। यदि आदरणीय व्यक्ति पश्चाताप के कारण उत्पन्न पापी प्रवृत्तियों से प्रेम करे और चिंतन एवं अंतर्दृष्टि का अभ्यास करे तो यह अच्छा होगा।' इस प्रकार आदरणीय व्यक्ति इस समूह के पाँचवें व्यक्ति के समान हो जाएगा।
जहाँ कोई व्यक्ति न तो कर्म करता है और न ही पश्चाताप करता है, जो विचार और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप में नहीं जानता, जिससे उसके पापी और बुरे गुण पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं, उसे इस प्रकार कहा जाना चाहिए:
'पूजनीय व्यक्ति में कर्मों के कारण उत्पन्न पाप प्रवृत्तियाँ न तो होती हैं और न ही पश्चाताप के कारण उत्पन्न पाप प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं; यदि पूज्य व्यक्ति चिंतन और अंतर्दृष्टि का अभ्यास करें तो यह अच्छा होगा।' इस प्रकार पूज्य व्यक्ति इस समूह में पाँचवें व्यक्ति के समान हो जाएगा।

इस प्रकार पांचवें व्यक्ति द्वारा उपदेश और शिक्षा दिए जाने से ये चारों व्यक्ति धीरे-धीरे पापी प्रवृत्तियों के विनाश की ओर अग्रसर होते हैं।

2. दान देने वाला व्यक्ति किस प्रकार तिरस्कार करता है?
यहां एक व्यक्ति है जिसे दूसरा व्यक्ति वस्त्र, भोजन, भिक्षापात्र, पलंग, आसन, बीमारों के लिए आवश्यक वस्तुएं, दवाइयां और अन्य आवश्यक वस्तुएं देता है; दूसरे व्यक्ति से वह कहता है:- मैं देता हूं; दूसरी ओर, वह व्यक्ति इसे स्वीकार करता है। उसे यह देते हुए वह उसका तिरस्कार करता है; इस प्रकार देने वाला व्यक्ति तिरस्कार करता है।

साथ रहने से कोई व्यक्ति कैसे घृणा कर सकता है?
यहां एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के साथ दो या तीन साल तक रहता है; उसके साथ रहने से वह उसका तिरस्कार करता है; इस प्रकार एक व्यक्ति साथ रहने से तिरस्कार करता है।

कोई व्यक्ति मुंह खुला रखने वाला कैसे हो सकता है?

यहां एक व्यक्ति, किसी दूसरे व्यक्ति की प्रशंसा या निंदा करते समय, तुरंत उसके प्रति आसक्त हो जाता है; इस प्रकार वह व्यक्ति मुंहफट होता है।
कोई व्यक्ति वॉबलर कैसे बन जाता है?
यहां एक निश्चित व्यक्ति में कम आस्था, कम भक्ति, कम प्रेम और कम संतोष होता है; इस प्रकार वह व्यक्ति अस्थिर हो जाता है।

कोई व्यक्ति सुस्त और मूर्ख कैसे बन जाता है?
यहां एक व्यक्ति अच्छे या बुरे गुणों को नहीं जानता, निंदनीय या निर्दोष गुणों को नहीं जानता, निम्न या उत्कृष्ट गुणों को नहीं जानता, अंधकारमय या उज्ज्वल गुणों को नहीं जानता; इस प्रकार वह व्यक्ति सुस्त और मूर्ख हो जाता है।

3. पेशेवर योद्धाओं के समान कौन-कौन हैं?
यहां पांच पेशेवर योद्धा हैं:- यहां एक पेशेवर योद्धा शत्रु के मार्च से उठी धूल के बादल को देखकर निराश हो जाता है, खुद पर काबू नहीं रख पाता और लड़ने के लिए आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाता है; ऐसा ही एक पेशेवर योद्धा है। यह पहला पेशेवर योद्धा है।
दुनिया में विद्यमान।
एक और उदाहरण:- यहाँ एक पेशेवर योद्धा धूल के बादल को सहन कर रहा है, लेकिन शिखर को देखकर
वह झंडा नीचे गिरा देता है, निराश हो जाता है, खुद पर काबू नहीं रख पाता, लड़ने के लिए आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाता है;
वह एक कुशल योद्धा भी है।

यह दुनिया का दूसरा पेशेवर योद्धा है।
एक और उदाहरण:- यहाँ एक पेशेवर योद्धा धूल के बादल को सहन करता है, ध्वज के शिखर पर खड़ा रहता है; परन्तु युद्ध की गर्जना सुनकर वह निराश हो जाता है, हताश हो जाता है, स्वयं को संभाल नहीं पाता, लड़ने के लिए आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाता है; ऐसा ही एक पेशेवर योद्धा है। यह विश्व में विद्यमान तीसरा पेशेवर योद्धा है।
एक और उदाहरण:- यहाँ एक पेशेवर योद्धा धूल के बादल, ध्वज की ऊँचाई और युद्धघोषों को सहता है, लेकिन अंत में युद्ध में मारा जाता है; ऐसा ही एक पेशेवर योद्धा है। यह दुनिया का चौथा पेशेवर योद्धा है।
एक और उदाहरण:- यहाँ एक कुशल योद्धा धूल के बादल, ध्वज के शिखर, युद्ध घोष और भीषण लड़ाई को सहन करता है; युद्ध में विजयी होकर वह युद्धक्षेत्र में जीवित रहता है; ऐसा ही एक कुशल योद्धा है। यह विश्व में विद्यमान पाँचवाँ कुशल योद्धा है।

ये पाँच पेशेवर योद्धा संसार में विद्यमान हैं, ठीक वैसे ही जैसे ये पाँच व्यक्ति जो भिक्षुओं के बीच रहते हैं और अपना जीवन व्यतीत करते हैं, पेशेवर योद्धाओं के समान हैं। वे पाँच कौन हैं?
यहां एक भिक्षु 'धूल के बादल' को देखकर नीचे गिर जाता है, पश्चाताप से भर जाता है, खुद पर नियंत्रण नहीं रख पाता, पवित्र जीवन विकसित करने में असमर्थ हो जाता है, विद्या में कमजोरी दिखाता है, नियमों का त्याग कर देता है और निम्न गृहस्थ जीवन में लौट आता है।

उसके लिए धूल का क्या अर्थ है? यहाँ एक भिक्षु सुनता है कि ऐसे गाँव या कस्बे में एक स्त्री या कन्या रहती है जो सुंदर, मनमोहक, आकर्षक और अत्यंत सौंदर्यपूर्ण है; यह सुनकर वह निराश हो जाता है, पश्चाताप से भर जाता है, आत्मसंयम खो बैठता है, पवित्र जीवन जीने में असमर्थ हो जाता है, विद्या में दुर्बल हो जाता है, नियमों का त्याग कर देता है और गृहस्थ जीवन में लौट आता है; यही उसके लिए धूल का अर्थ है। जैसे एक कुशल योद्धा धूल देखकर निराश हो जाता है, पश्चाताप से भर जाता है, आत्मसंयम खो बैठता है और युद्ध के लिए आगे नहीं बढ़ पाता, वैसे ही यह व्यक्ति भी है; यहाँ ऐसा ही एक व्यक्ति है। यह व्यक्ति संसार में पहला ऐसा व्यक्ति है जिसकी तुलना एक कुशल योद्धा से की जा सकती है।
एक और उदाहरण:- यहाँ एक भिक्षु धूल के बादल को सहन करता है, लेकिन ध्वज का शीर्ष नीचे डूबता देखकर पश्चाताप करता है, खुद पर नियंत्रण नहीं रख पाता, पवित्र जीवन विकसित करने में असमर्थ रहता है; विद्या में कमजोरी दिखाते हुए, उपदेशों का त्याग करके, वह निम्न गृहस्थ जीवन में लौट आता है।

ध्वज के शीर्ष का उसके लिए क्या अर्थ है? यहाँ एक भिक्षु केवल यह नहीं सुनता कि ऐसे गाँव या कस्बे में कोई स्त्री या कन्या रहती है जो सुंदर, मनमोहक, आकर्षक और अत्यंत सुंदर है; वह स्वयं उस स्त्री या कन्या को देखता है; उसे देखकर वह निराश हो जाता है, पश्चाताप करता है, आत्मसंयमित हो जाता है, पवित्र जीवन जीने में असमर्थ हो जाता है; विद्या में दुर्बल होकर, नियमों का त्याग करके, वह गृहस्थ जीवन में लौट आता है; ध्वज के शीर्ष का उसके लिए यही अर्थ है। जिस प्रकार एक पेशेवर योद्धा धूल में गिरने के बावजूद ध्वज के शीर्ष को देखकर निराश हो जाता है, पश्चाताप करता है, आत्मसंयमित हो जाता है, और युद्ध के लिए आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाता है, ठीक वैसा ही यह व्यक्ति है; यहाँ ऐसा ही एक व्यक्ति है। भिक्षुओं में मौजूद यह दूसरा व्यक्ति है जो एक पेशेवर योद्धा के समान है।

एक और उदाहरण:- यहाँ एक भिक्षु धूल के बादल को सहन करता है, ध्वज के शीर्ष को सहन करता है, परन्तु युद्ध की पुकार सुनकर वह निराश हो जाता है, पश्चाताप से भर जाता है, स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाता, पवित्र जीवन जीने में असमर्थ हो जाता है; विद्या में कमजोरी दिखाते हुए, नियमों का त्याग करके, वह निम्न गृहस्थ जीवन में लौट आता है।

उसके लिए युद्धघोषों का क्या अर्थ है? यहाँ एक स्त्री किसी भिक्षु के पास आती है, जो जंगल में, वृक्ष की गोद में या किसी खाली कमरे में गया हुआ है। वह स्त्री से हल्के-फुल्के ढंग से बात करती है, बातचीत करती है, हँसती है और मज़ाक करती है। स्त्री द्वारा हल्के-फुल्के ढंग से बात किए जाने, बातचीत या मज़ाक किए जाने या उपहास किए जाने पर वह निराश हो जाता है, पश्चाताप से भर जाता है, अपना संयम खो देता है, पवित्र जीवन जीने में असमर्थ हो जाता है; विद्या में कमजोरी दिखाते हुए, नियमों का त्याग करके, वह निम्न गृहस्थ जीवन में लौट आता है; उसके लिए युद्धघोषों का यही अर्थ है। जिस प्रकार एक कुशल योद्धा धूल में भी खड़ा रहता है, ध्वज के शिखर पर भी खड़ा रहता है, युद्धघोष सुनकर निराश हो जाता है, पश्चाताप से भर जाता है, अपना संयम खो देता है, और युद्ध के लिए आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति भी है; यहाँ ऐसा ही एक व्यक्ति है। भिक्षुओं में मौजूद यह तीसरा व्यक्ति एक कुशल योद्धा के समान है।

फिर एक और उदाहरण:- यहाँ एक भिक्षु धूल के बादल को सहता है, झंडे के शीर्ष को सहता है, युद्ध के नारों को सहता है, लेकिन अंत में हाथापाई में मारा जाता है और उसका अंत हो जाता है।

उसके लिए इस संघर्ष का क्या अर्थ है? यहाँ एक स्त्री किसी भिक्षु के पास आती है जो जंगल में, वृक्ष की गोद में या किसी एकांत स्थान पर गया हो; वह पास बैठती है, लेट जाती है, अपने अंगों को फैलाती है; वह स्त्री को अपने पास बैठा, लेटा और फैलाए देखकर, नियमों का उल्लंघन करता है और कमजोरी दिखाते हुए दुराचार करता है। उसके लिए इस संघर्ष का यही अर्थ है। जैसे वह कुशल योद्धा धूल में भी तड़पता है, ध्वज के शिखर पर खड़ा होता है, युद्ध घोष सुनता है, फिर भी मारा जाता है और उसका अंत हो जाता है, वैसे ही यह व्यक्ति भी है; यहाँ ऐसा ही एक व्यक्ति है। भिक्षुओं में यह चौथा व्यक्ति है जो कुशल योद्धा के समान है।

एक और वर्णन:- यहाँ एक भिक्षु धूल के बादल को सहता है, ध्वज के शीर्ष को सहता है, युद्ध के नारों को सहता है और हाथापाई को सहता है; वह युद्ध जीतकर, विजयी होकर, युद्ध के मैदान में जीवित रहता है।

उसके लिए युद्ध में विजय का क्या अर्थ है? यहाँ एक स्त्री भिक्षु के पास आती है, जो जंगल में, वृक्ष की तलहटी में या किसी खाली कमरे में गया है, पास बैठती है, पास लेट जाती है और अपने अंगों को पूरी तरह फैला लेती है। वह स्त्री को अपने पास बैठा, लेटा और अपने अंगों को पूरी तरह फैलाए हुए पाकर, स्वयं को मुक्त करके जहाँ चाहे वहाँ चला जाता है; वह एकांत स्थान पर, जंगल में, वृक्ष की तलहटी में, पहाड़ पर, गुफा में, पर्वतीय कंदरा में, कब्रिस्तान में, वन क्षेत्र में, खुले में या भूसे के ढेर पर रहता है; वह जंगल में, वृक्ष की तलहटी में या किसी खाली कमरे में जाकर पालथी मारकर बैठता है, शरीर को सीधा रखता है और ध्यान लगाता है; वह संसार में लोभ का त्याग करके लोभ रहित मन से जीवन व्यतीत करता है, वह लोभ से मन को शुद्ध करता है; द्वेष का त्याग करके, वह द्वेष रहित मन से जीवन व्यतीत करता है; सभी प्राणियों के प्रति दयालु होकर, वह द्वेष से मन को शुद्ध करता है। आलस्य और सुस्ती का त्याग करके, प्रकाश के प्रति सचेत होकर, सजग और ज्ञानी होकर, वह मन को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है; विचलित और बेचैनी का त्याग करके, वह मन को आंतरिक रूप से शांत रखते हुए, इनसे शुद्ध करता है; संदेह का त्याग करके, वह संदेह से परे जीवन व्यतीत करता है; अच्छे गुणों के संबंध में संदेह से मुक्त होकर, वह मन को संदेह से शुद्ध करता है; मन को भ्रष्ट करने वाले, बुद्धि को कमजोर करने वाले इन पाँच अवरोधों का त्याग करके, वह इंद्रिय सुखों और बुरे गुणों से मुक्त होकर प्रथम ध्यान (परमानंदमय ध्यान) की प्राप्ति में रहता है, जो निरंतर चिंतन से युक्त होता है और एकांत के कारण आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण होता है; निरंतर चिंतन को समाप्त करके, वह परमानंदमय ध्यान के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चरणों की प्राप्ति में रहता है।
वह व्यक्ति जिसका मन एकाग्र है, जो शुद्ध है, निर्मल है, पापरहित है, कोमल है, जिस पर क्रिया की जा सकती है, स्थिर है और अविचल है, पापी प्रवृत्तियों के नाश के ज्ञान से अपने मन को एकाग्र करता है; वह सत्यतः जानता है कि यह दुख है, इत्यादि... यह दुख के निवारण का मार्ग है; वह सत्यतः जानता है कि ये पापी प्रवृत्तियाँ हैं, इत्यादि... वह सत्यतः समझता है कि यह पापी प्रवृत्तियों के निवारण का मार्ग है। इस प्रकार जानने और देखने से उसका मन इंद्रिय सुखों की प्रवृत्ति से मुक्त हो जाता है, उसका मन पुनर्जन्म की प्रवृत्ति से मुक्त हो जाता है, उसका मन अज्ञान की प्रवृत्ति से मुक्त हो जाता है; जब वह मुक्त हो जाता है, तो उसे यह ज्ञान हो जाता है कि वह मुक्त है, वह जानता है कि जन्म का अंत हो गया है, पवित्र जीवन व्यतीत हो गया है, जो करना था वह हो गया है, और 'इन स्थितियों में आगे कुछ भी नहीं है।' युद्ध में विजय का यही अर्थ उसके लिए है। जिस प्रकार एक कुशल योद्धा धूल में भीगता है, ध्वज के शिखर पर खड़ा रहता है, युद्धघोषों को सहता है, दूर से ही लड़ाई लड़ता है, युद्ध में जीत हासिल करता है, युद्धक्षेत्र में जीवित रहता है, ठीक वैसे ही यह व्यक्ति है; यहाँ ऐसा ही एक व्यक्ति मौजूद है। यह पाँचवाँ व्यक्ति है जो भिक्षुओं में एक कुशल योद्धा के समान है।

ये वे पांच व्यक्ति हैं जो पेशेवर योद्धाओं के समान भिक्षुओं के बीच रहते हैं और अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

4. वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो भीख पर जीवन यापन करते हैं?
कोई व्यक्ति अपनी सुस्ती और मूर्खता के कारण भिक्षा पर जीवन यापन करता है, कोई व्यक्ति पापी इच्छाओं और वासनाओं से प्रेरित होकर भिक्षा पर जीवन यापन करता है, कोई व्यक्ति पागलपन और असंतुलित मन के कारण भिक्षा पर जीवन यापन करता है, कोई व्यक्ति यह सोचकर भिक्षा पर जीवन यापन करता है कि बुद्धों और उनके शिष्यों ने इसकी प्रशंसा की है; और, इसके अलावा, कोई व्यक्ति केवल इच्छा के अभाव में, केवल संतोष के कारण, केवल पाप के निवारण के कारण, और क्योंकि जीवन आवश्यक है, भिक्षा पर जीवन यापन करता है।
वहाँ वह व्यक्ति जो केवल इच्छा के अभाव, संतोष, पाप के निवारण और न्यायपूर्ण जीवन के कारण भिक्षा पर जीवन यापन करता है, वही इन पाँचों भिक्षा पर जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों में सर्वोपरि, श्रेष्ठ, प्रमुख, श्रेष्ठ और उत्तम है। जैसे गाय से दूध, दूध से दही, दही से मक्खन, मक्खन से घी और घी से मैल प्राप्त होता है, वैसे ही इन गुणों के कारण भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला यह व्यक्ति पाँचों भिक्षा पर जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों में सर्वोपरि, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और उत्तम है। ये पाँचों व्यक्ति भिक्षा पर जीवन यापन करते हैं।

5-14. वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो निर्धारित समय के बाद भोजन ग्रहण करने से इनकार करते हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो एक ही आसन का उपयोग करते हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो कूड़े के ढेर से इकट्ठा किए गए चिथड़े पहनते हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो तीन वस्त्र पहनते हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो वनवासी हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो वृक्ष के नीचे रहते हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो खुले आकाश के नीचे रहते हैं? वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो बैठकर विश्राम करते हैं? (वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो उपलब्ध कराए गए किसी भी आसन का उपयोग करते हैं?) वे पाँच व्यक्ति कौन हैं जो श्मशान में निवास करते हैं?

[ये तेरह कठोर धार्मिकों के नौ वर्ग हैं जो तेरह धुतंगों, या 'अत्यंत कठोर मार्गों' का अभ्यास करते हैं। कोष्ठक में दिया गया वाक्य इनका उल्लेख नहीं करता है। देखें। प्रत्येक के साथ 4 को दोहराया जाना है। देखें मिलिंदा, द्वितीय, पुस्तक VI; विशुद्धिमग्ग, अध्याय द्वितीय]

यहां पांच के आधार पर समूहीकरण का विवरण समाप्त होता है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय 6**
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय VI: मानव प्रकारों का छह भागों में विभाजन

I. एक ऐसा व्यक्ति होता है जो उन सिद्धांतों के संबंध में, जिनके बारे में उसने पहले कभी नहीं सुना होता, अपने स्वयं के प्रयास से सत्यों को पूरी तरह से समझ लेता है, और उनमें सर्वज्ञता के साथ-साथ फलों पर भी प्रभुत्व प्राप्त कर लेता है।
ऐसे व्यक्ति को पूर्णतः प्रबुद्ध माना जाता है।

2. एक ऐसा व्यक्ति भी है जो उन सिद्धांतों के संबंध में, जिनके बारे में उसने पहले कभी नहीं सुना है, अपने स्वयं के प्रयास से सत्यों को पूरी तरह से समझ लेता है, लेकिन उनमें सर्वज्ञता और साथ ही फलों पर प्रभुत्व प्राप्त नहीं कर पाता है।
ऐसा व्यक्ति स्वयं ही प्रबुद्ध माना जाता है।
(paccekasambuddho).

3. एक ऐसा व्यक्ति भी है जो उन सिद्धांतों के संबंध में, जिनके बारे में उसने पहले कभी नहीं सुना है, अपने स्वयं के प्रयास से सत्यों को पूरी तरह से समझ लेता है, इसी जीवन में दुख का अंत कर देता है और शिष्यत्व की पूर्णता प्राप्त कर लेता है।
ऐसे व्यक्ति को सारिपुत्त और मोग्गलाना माना जाता है।

4. एक ऐसा व्यक्ति भी है जो पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों के संबंध में अपने स्वयं के प्रयास से सत्यों को पूरी तरह से समझ लेता है, इसी जीवन में दुख का अंत कर देता है, लेकिन शिष्यत्व की पूर्णता प्राप्त नहीं करता है।
अन्य अरहंतों के बारे में भी यही विचार किया जाना चाहिए।

5. एक ऐसा व्यक्ति भी है जो पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों के संबंध में अपने स्वयं के प्रयास से सत्यों को पूरी तरह से समझ लेता है, इसी जीवन में दुख का अंत कर देता है और अनित्य बन जाता है, उसे इन परिस्थितियों में वापस नहीं आना पड़ता।
'वापसी न करने वाले' (अनागामी) को इसी प्रकार माना जाना चाहिए।

6. एक ऐसा व्यक्ति भी है जो पहले कभी न सुने गए सिद्धांतों के संबंध में अपने स्वयं के प्रयास से सत्यों को पूरी तरह से समझ लेता है, और (चूंकि वह) इसी जीवन में दुख का अंत नहीं करता है, इसलिए वह एक बार फिर लौटकर आता है, उसे इन परिस्थितियों में वापस आना पड़ता है।
धारा तक पहुंचने वाले (सोतापन्ना) और 'एक बार लौटने वाले' को इसी प्रकार माना जाना चाहिए।

यहां छह सदस्यों का समूह समाप्त होता है।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 7
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय VII: मानव प्रकारों का सात भागों में विभाजन

1. एक बार डूब जाने वाला व्यक्ति केवल डूबा हुआ ही क्यों माना जाता है?
यहां एक व्यक्ति में घोर अनैतिक गुण व्याप्त हैं। ऐसे व्यक्ति को एक बार डुबो देने पर वह बस डूब ही जाता है।

पानी से बाहर निकलने के बाद कोई व्यक्ति कैसे डूब जाता है?
यहां एक व्यक्ति आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा और अंतर्दृष्टि जैसे अच्छे (नैतिक) गुणों के साथ प्रकट होता है, लेकिन उसकी आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा या अंतर्दृष्टि न तो बनी रहती है और न ही बढ़ती है, बल्कि घटती जाती है। ऐसा व्यक्ति प्रकट होने के बाद डूब जाता है।

किसी व्यक्ति के अस्तित्व में आने के बाद वह कैसे बना रहता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जो आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा और अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण है, और उसके ये गुण, आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा या अंतर्दृष्टि न तो घटती हैं और न बढ़ती हैं, बल्कि निरंतर बनी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति प्रकट होने के बाद भी बना रहता है।
बाहर निकलने के बाद व्यक्ति किस तरह से इधर-उधर देखता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जो आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा और अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण होता है। तीनों बंधनों के पूर्ण नाश से वह ज्ञानोदय प्राप्त कर लेता है, दुखद अवस्था में गिरने की संभावना समाप्त हो जाती है, और अंत में उसे ज्ञानोदय (संबोधि) प्राप्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति प्रकट होने के बाद चारों ओर देखता है।

जल से बाहर निकलने के बाद कोई व्यक्ति तैरना कैसे जारी रख सकता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जो आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा और अंतर्दृष्टि जैसे अच्छे गुणों से परिपूर्ण होता है। तीनों बंधनों के पूर्ण नाश और वासना, घृणा और भ्रम के नाश से वह एक बार लौटकर इस संसार में आता है और दुखों का अंत करता है। ऐसा व्यक्ति जन्म के बाद निरंतर प्रवाहित होता रहता है।

एक व्यक्ति उभरने के बाद स्थिर स्थिति तक कैसे पहुंचता है?
यहां एक विशेष व्यक्ति आस्था, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा, ऊर्जा और अंतर्दृष्टि जैसे अच्छे गुणों के साथ प्रकट होता है। निम्न लोकों में पुनर्जन्म का कारण बनने वाले पांच बंधनों के पूर्ण नाश से वह एक आभासी पुनर्जन्म प्राप्त करने वाला प्राणी बन जाता है, जो उस अवस्था में अंतिम मुक्ति प्राप्त करता है और उस लोक से वापस नहीं लौटता। ऐसा व्यक्ति पुनर्जन्म के बाद एक स्थिर स्थिति में पहुंच जाता है।

वह किस प्रकार का व्यक्ति है जो सच्चे ब्राह्मण के रूप में जन्म लेने के बाद दूसरे तट पर जाकर स्वयं को पूर्ण सिद्धि में स्थापित करता है?

यहां एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होता है जो आस्था, विनम्रता, विवेक, ऊर्जा और अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण होता है। पापी प्रवृत्तियों का नाश करके वह इच्छाशक्ति और अंतर्दृष्टि की मुक्ति प्राप्त करता है, उन पापी प्रवृत्तियों से मुक्त होकर और इस जन्म में ही अपने प्रयासों से उन्हें जानकर और अनुभव करके जीवन व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति ही सच्चा ब्राह्मण है जो जन्म के बाद परलोक की ओर अग्रसर होकर पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है।

2. दोनों तरह से मुक्त होने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक व्यक्ति स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव करता है, और अंतर्दृष्टि से उन्हें देखकर उसकी पापी प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसा व्यक्ति दोनों प्रकार से मुक्त हो जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति अंतर्दृष्टि के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करता है?
यहां एक व्यक्ति, स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव किए बिना, लेकिन अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें समझकर, अपनी पापी प्रवृत्तियों को पूरी तरह से नष्ट कर लेता है। ऐसा व्यक्ति अंतर्दृष्टि के माध्यम से मुक्त हो जाता है।

'प्रत्यक्षदर्शी' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां व्यक्ति स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव करता है और अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें समझकर, उसकी कुछ पापी प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसा व्यक्ति 'प्रत्यक्षदर्शी' कहलाता है।

'दृष्टि प्राप्त करने वाला व्यक्ति' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां व्यक्ति को यह सत्य समझ आता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को वह अंतर्दृष्टि से ग्रहण करता है और उनका अभ्यास भी करता है, और अंतर्दृष्टि से उन्हें समझने के बाद उसकी कुछ पाप प्रवृत्तियां पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसा व्यक्ति ही प्रत्यक्षदर्शी होता है।

किस प्रकार का व्यक्ति आस्था के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करता है?
यहां व्यक्ति को यह सत्य समझ आता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को वह अंतर्दृष्टि से ग्रहण करता है और उनका अभ्यास भी करता है। अंतर्दृष्टि से इन सिद्धांतों को समझने के बाद, उसकी कुछ पाप प्रवृत्तियां पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं, हालांकि उस प्रकार नहीं जैसे दृष्टि प्राप्त करने वाले व्यक्ति की होती हैं। ऐसा व्यक्ति आस्था के द्वारा मुक्त हो जाता है।

सामान्य मानदंडों का पालन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का इंसान होता है?
धारा-प्राप्तकर्ता की सिद्ध अवस्था को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर व्यक्ति की अंतर्दृष्टि शक्ति अत्यधिक विकसित हो जाती है; वह तर्क से युक्त और आस्था से प्रेरित श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करता है। ऐसे व्यक्ति को आदर्श का पालन करने वाला कहा जाता है। धारा-प्राप्तकर्ता की सिद्ध अवस्था के लिए प्रयासरत ऐसा व्यक्ति आदर्श का पालन करने वाला होता है; जबकि सिद्ध अवस्था में स्थापित वही व्यक्ति दृष्टि प्राप्त कर चुका होता है।

धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का इंसान होता है?
धारा-प्राप्तकर्ता की सिद्धि अवस्था को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर आस्था-शक्ति का व्यापक विकास होता है। वह आस्था से परिपूर्ण और आस्था से प्रेरित श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करता है। ऐसे व्यक्ति को आस्था के अनुरूप चलने वाला कहा जाता है। धारा-प्राप्तकर्ता की सिद्धि अवस्था के लिए प्रयासरत ऐसा व्यक्ति आस्था के अनुरूप होता है; और सिद्धि अवस्था में स्थापित वही व्यक्ति आस्था द्वारा मुक्त हो जाता है।

यहां सात के आधार पर समूहीकरण का विवरण समाप्त होता है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 8
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय VIII: मानव प्रकारों का आठ भागों में विभाजन

इस मार्ग से जुड़े चार व्यक्ति कौन हैं और इस मार्ग की सफलता से जुड़े चार व्यक्ति कौन हैं?
धारा का अनुसरण करने वाला और फल प्राप्ति की ओर अग्रसर होने वाला; एक बार लौटने वाला और फल प्राप्ति की ओर अग्रसर होने वाला; कभी न लौटने वाला और फल प्राप्ति की ओर अग्रसर होने वाला; और अरहंत (चुने हुए या योग्य) और अरहंतत्व प्राप्त करने की ओर अग्रसर होने वाला - ये चार व्यक्ति मार्ग से जुड़े हुए हैं और ये चारों ही फल प्राप्ति से जुड़े हुए हैं।

यहां आठ के आधार पर समूहीकरण का विवरण समाप्त होता है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय 9**
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय 9: मानव प्रकारों का नौ भागों में विभाजन

पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक ऐसे व्यक्ति की बात हो रही है जो उन सिद्धांतों को भी भलीभांति समझ लेता है जिनके बारे में उसने पहले कभी नहीं सुना होता, और उन सत्यों का सर्वज्ञ ज्ञान तथा उनके फल पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेता है। ऐसे व्यक्ति को पूर्णतः प्रबुद्ध कहा जाता है।

स्वयं के लिए ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जो उन सिद्धांतों के बारे में, जिनके बारे में उसने पहले कभी नहीं सुना है, स्वयं सत्यों को भलीभांति समझ लेता है, परन्तु न तो सर्वज्ञता प्राप्त करता है और न ही उन सत्यों के फल पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति को स्वयं प्रबुद्ध कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति दोनों तरह से स्वतंत्र होता है?

यहां एक व्यक्ति स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव करता है, और अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें समझकर, उसकी पापी प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति को दोनों प्रकार से मुक्त कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति अंतर्दृष्टि के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करता है?
यहां एक ऐसा व्यक्ति है जिसने स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव नहीं किया है, लेकिन अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें जान लिया है, जिससे उसकी पापी प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति को अंतर्दृष्टि द्वारा मुक्त कहा जाता है।

'प्रत्यक्षदर्शी' किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक व्यक्ति स्वयं मुक्ति के आठ चरणों का अनुभव करता है, और अंतर्दृष्टि के माध्यम से उन्हें समझने पर, उसकी कुछ पापी प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति को 'प्रत्यक्षदर्शी' कहा जाता है।

जिस व्यक्ति को दृष्टि प्राप्त हो जाती है, वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है?
यहां एक व्यक्ति वास्तव में यह समझता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को वह अंतर्दृष्टि से ग्रहण करता है और उनका अभ्यास भी करता है; और अंतर्दृष्टि से उन्हें ग्रहण करने के कारण उसकी कुछ पाप प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं। ऐसे व्यक्ति को ही ज्ञान प्राप्त करने वाला कहा जाता है।

किस प्रकार का व्यक्ति आस्था के द्वारा मुक्ति प्राप्त करता है?
यहां एक व्यक्ति वास्तव में समझता है कि यही दुख है, यही दुख का कारण है, यही दुख का निवारण है और यही दुख निवारण का मार्ग है। तथागत द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को वह अंतर्दृष्टि से ग्रहण करता है और उनका अभ्यास भी करता है; और अंतर्दृष्टि से ग्रहण करने पर उसकी कुछ पाप प्रवृत्तियाँ पूर्णतः नष्ट हो जाती हैं, यद्यपि उस प्रकार नहीं जैसे किसी दिव्य दृष्टि प्राप्त व्यक्ति की होती हैं। ऐसे व्यक्ति को आस्था द्वारा मुक्त कहा जाता है।

सामान्य मानदंडों का पालन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का इंसान होता है?
धारा प्राप्ति की अवस्था में प्रवेश करने वाले व्यक्ति की अंतर्दृष्टि क्षमता अत्यधिक विकसित हो जाती है; वह उस श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करता है जो अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण है और अंतर्दृष्टि से प्रेरित है। ऐसे व्यक्ति को आदर्श का पालन करने वाला कहा जाता है। धारा प्राप्ति की अवस्था के लिए प्रयासरत ऐसा व्यक्ति आदर्श का पालन करने वाला होता है; और यही व्यक्ति जब उस अवस्था में स्थापित हो जाता है, तो उसे दृष्टि प्राप्त हो जाती है।

धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का इंसान होता है?
जब आस्था की धारा प्राप्ति की पूर्णता की ओर अग्रसर होती है, तो आस्था-संपदा काफी हद तक विकसित हो जाती है। वह आस्था से परिपूर्ण और आस्था से प्रेरित श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करता है। ऐसे व्यक्ति को आस्था के अनुरूप चलने वाला कहा जाता है। ऐसा व्यक्ति जो आस्था की धारा प्राप्ति की पूर्णता के लिए प्रयासरत है, आस्था के अनुरूप चलने वाला है; और जब वही व्यक्ति पूर्णता की अवस्था में स्थापित हो जाता है, तो वह आस्था द्वारा मुक्त हो जाता है।

यहां नौ के आधार पर समूहीकरण का विवरण समाप्त होता है।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> पुग्गलपन्नति >> **अध्याय** 10
मूलतः गौतम बुद्ध द्वारा लगभग 550 ईसा पूर्व पाली भाषा में बोला गया।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
बिमला चरण विधि द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद से रूपांतरित।

अध्याय X: दस भागों में मानव प्रकारों का विभाजन

यहां किस पांच के माध्यम से संभोग की पूर्णता प्राप्त होती है?

सात जन्मों से अधिक जन्म न लेने वाला 'धारा-प्राप्तकर्ता', कुछ परिवारों (सात से कम) से होकर गुजरने वाला 'धारा-प्राप्तकर्ता', 'एकल-बीज वाला' 'धारा-प्राप्तकर्ता', 'एक बार लौटने वाला' और इसी जन्म में अरहंतत्व प्राप्त करने वाला:- इन पांचों में पूर्णता यहीं प्राप्त होती है।

किस 'पांच' से इस संसार को छोड़ने के बाद पूर्णता प्राप्त होती है?

'वह व्यक्ति जो ब्राह्मण लोक में अपने निर्धारित जीवनकाल के आधे समय से पहले ही निर्वाण प्राप्त कर लेता है,' 'अवधि-समाप्त करने वाला', 'स्वयं-प्राप्त होने वाला', 'कठिन परिश्रम से निर्वाण प्राप्त करने वाला', 'अकनित्थ क्षेत्र की ओर अग्रसर होने वाला'। इन पाँचों के द्वारा इस संसार को छोड़ने के बाद पूर्णता प्राप्त होती है।
अब तक मानव प्रकारों का निर्धारण किया जा चुका है।

यहां दस के आधार पर समूहीकरण का विवरण समाप्त होता है।

'मानव प्रकारों का पदनाम' यहीं समाप्त होता है।